विषय सूची

पृष्ठ संख्या

अध्याय-1
परिचय

प्रत्येक मानव को अपनी जन्मकुंडली से भावी समय में होनेवाली घटनाएं तथा उन घटनाओं का निश्चित समय जानने की प्रबल इच्छा होती है। प्रत्येक ज्योतिषी जन्मकुंडली के बारह स्थानों के ग्रह उनके परस्पर योग तथा षड्वर्ग बल आदि का विचार कर उस मनुष्य को जीवन में कैसे फल मिलेंगे इसकी रूपरेखा बना लेता है। फिर ये फल जीवन में कब किस समय मिलेंगे यह बताने का प्रयत्न करता है। फल ज्योतिष शास्त्र में बतलाना सबसे कठिन किंतु महत्वपूर्ण बात काल निर्णय की ही होती है।

हमारे पुरातन आचार्यों ने 42 प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है, गोचर ग्रहों के फल बतलाया है, ताजिक, मुंथा, अंगिरस पद्धतियां बताई है। ग्रहों के भ्रमण (जन्मस्थ शनि से गोचर शनि कौन से स्थान पर है, जन्मस्थ गुरु से गोचर गुरु कौन से स्थान पर है इत्यादि) के फल बतलाये हैं।

गोचर पद्धति का महत्व सभी को मान्य है। इसी विषय पर इस पुस्तक में अपने विचार प्रगट करेंगे।

ग्रह अपने–अपने मार्ग से व अपनी–अपनी गति से सदैव सूर्य के चारों ओर घूमते रहते हैं। इससे ग्रह एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते हुए सूर्य की परिक्रमा पूरी करते हैं। जब जातक का जन्म होता है उस समय ग्रह जिन राशियों का भ्रमण कर रहे होते हैं वह जन्म कुण्डली कहलाती है। जन्म समय के बाद ग्रह जिन राशियों में भ्रमण करते रहते हैं वह स्थिति गोचर कहलाती है। गोशब्द संस्कृत भाषा की ''गम्'' धातु से बना है। गम् का अर्थ है 'चलने वाला' आकाश में अनेक तारे हैं। वे सब स्थिर हैं। तारों से ग्रहों को पृथक दिखलाने के कारण ग्रहों को गो नाम रखा। चर का अर्थ है 'चलायमान' अस्थिर, बदलने वाला। इसलिये गोचर का अर्थ हुआ ग्रहों का चलन अर्थात ग्रहों का परिवर्तित प्रभाव। जन्म कुण्डली में ग्रहों का एक स्थिर प्रभाव है और गोचर में ग्रहों का उस समय से परिवर्तित प्रभाव दिखलाई पड़ता है।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में जातक का फल उसकी जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति (योग), दशान्तर दशा तथा गोचर पर निर्भर करता है। फलित विचार में हमने योगों को पढ़ा, गणित में हमने दशान्तर दशा को जाना तथा अब हम गोचर पर विचार करेंगे। तीनों भागों के योग, दशान्तर दशा तथा गोचर का समग्र विचार करके ही फलित किया जा सकता है। प्रत्येक भाग का अपना–अपना महत्त्व है तथा क्रम निम्न प्रकार होता है :

(i) योग का विचार

(ii) दशा–अंतर्दशा विचार

(iii) गोचर विचार

जो योग नहीं दे सकता वह दशान्तर दशा तथा गोचर कितना ही शुभ हो, अनुकूल हो नहीं सकता। मान लें कि जातक की कुण्डली में शादी का योग नहीं है, तो अनुकूल दशान्तर दशा व गोचर कभी भी शादी नहीं दे सकते। पहले शादी का योग होना चाहिये, फिर उसके अनुसार दशान्तर दशा होनी चाहिये, तीसरे गोचर के अनुकूल होते ही जातक की शादी हो जाएगी।

मान लें कमरे में पंखा चल रहा है। यह घटना कैसे हो रही है ? यदि बिजली नहीं हो तो पंखा चलेगा? इसको हम यह भी कह सकते है कि प्रथम बिजली होनी चाहिये, द्वितीय पंखा होना चाहिये और तृतीय चालू व बन्द करने का बटन भी होना चाहिये। तब जाकर पंखा हवा करेगा, चलेगा। इसको यूं भी समझ सकते हैं। मान लें कि आपको पत्र मिला। कैसे ? प्रथम आपके लिये पत्रवाहक लाकर आप तक पहुँचाएगा। यदि आपके लिये पत्र ही नहीं हो तो डाकखाना या डाकिया क्या कर सकता है?

इसलिए किसी भी घटना के लिये पहले योग होना चाहिये। फिर उसके अनुकूल दशान्तर दशा होनी चाहिये और तृतीय गोचर भी अनुकूल होना चाहिये। तब जाकर जातक के जीवन में घटना होगी अन्यथा नहीं। इस प्रकार हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि गोचर का स्थान तृतीय है। गोचर योग तथा दशान्तर पर निर्भर करता है। गोचर स्वयं में कोई फल नहीं दे सकता।

अध्याय–2

गोचर किससे देखें ?

गोचर का फल चन्द्र, सूर्य या लग्न में से किससे देखा जाना चाहिये ?

ग्रह जिस राशि में गोचर करते हैं उसके अनुसार मनुष्य को जीवन में कब कैसे फल मिलेंगे यह सूचित किया जाता है। पुराने अचार्यों ने लग्न कुंडली में चंद्र जिस राशि में हो उस राशि को प्रधान माना है। उस राशि से भ्रमण करने वाले ग्रह किस स्थान पर हैं यह देख कर उस समय का फलादेश निश्चित किया जाता है।

पत्रिका में लग्नकुंडली लिखने की पद्धति भी सैकड़ों वर्षों से चल रही है। यहां यह बात विचार करने योग्य है कि लग्न कुंडली से पूरे जीवन में जन्म से मृत्यु तक जो फल मिलेंगे उन्हें स्थूलतः जाना जाता है। जन्म के समय आकाश में कौन से ग्रह कहां थे तथा उनका परस्पर संबंध क्या था तथा उनके कैसे फल मिलते हैं यह सब लग्नकुंडली से ज्ञात होता है। इससे प्रत्येक स्थान के निश्चित फल मालूम होते हैं। राशि कुंडली से नहीं ।

ज्योतिष शास्त्र में तीन तरह के लग्न प्रचलित हैं : जन्म लग्न, चन्द्र लग्न व सूर्य लग्न। यह परिवर्तित प्रभाव हमें कहां से देखना चाहिये। जन्म लग्न से या चन्द्र लग्न से या सूर्य लग्न से ? लग्न का अपना–अपना महत्त्व है। लग्न तन का, चन्द्र मन का और सूर्य आत्मा का प्रतिनिधि है। जातक इन तीनों के समन्वय से बना है। आत्मा शरीर के बिना अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर सकती। शरीर का नियन्त्रण मन के हाथ में है, मन ही शरीर की ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण करता है। इसलिये चन्द्र लग्न का महत्त्व बढ़ जाता है। मन्त्रेश्वर ने भी फलदीपिका में चन्द्र लग्न से गोचर का विचार करने का निर्देश दिया है।

सर्वेषु लग्नेषु अपि सत्सु । चन्द्र लग्नम् डा धानम् खलु गोचरेषु।।

अर्थात सब प्रकार के लग्नों (लग्न, सूर्य लग्न, चन्द्र लग्न) के होते हुए भी गोचर विचार में प्रधानता चन्द्र लग्न की ही है।

बृहत् पराशर होरा शास्त्र में भी चन्द्र लग्न व जन्म लग्न दोनों को ही महत्त्वपूर्ण बतलाया है और दोनों लग्नों से फलित करने का आदेश दिया है।

आधान लग्न सिद्धान्त के अनुसार यह पाया गया है कि चन्द्रमा जन्म लग्न में उसी भाव में गोचर करता है जिस भाव में वह गर्भाधान के समय होता है। यहां महत्त्व चन्द्र का है।

दशा व अन्तर दशा के समय पर दशा नाथ जिस राशि में बैठा होता है उसको लग्न मान कर दशा के शुभ व अशुभ का विचार होता है। अर्थात् लग्न बारह हो जाते हैं। इसलिये भी चन्द्र लग्न का महत्त्व बढ़ जाता है।

गोचर अष्टक वर्ग पद्धति का एक अंग है। अष्टक वर्ग लग्न व सात ग्रहों को मिला कर बनता है। अष्टक वर्ग में देखा जाता है कि ग्रह कहां–कहां शुभ व अशुभ फल दे सकते हैं। यहां पर शुभ व अशुभ फल ग्रहों की परस्पर स्थिति, मैत्री व नैसर्गिक शुभता या अशुभता का ध्यान रखा जाता है। दो ग्रहों का परस्पर शुभत्व व अशुभत्व देगा न कि लग्नों का। लग्न तो बारह हो जाते हैं। चन्द्रमा एक ग्रह है। इस प्रकार चन्द्रमा से कौन ग्रह शुभ हैं कौन ग्रह अशुभ यह देखा जाता है। इसलिए महर्षियों ने गोचर फल निर्णय के लिये चन्द्र को चुना जो ग्रह होने के साथ–साथ एक लग्न भी है और लग्न पर नियन्त्रण भी रखता है।

दशा का क्रम भी चद्रमा के नक्षत्र के स्वामी से आरम्भ होता है अर्थात् जीवन का आरम्भ भी चद्रमा से ही होता है। चन्द्रमा ही जातक के शैशव काल का कारक है। इसलिये बालारिष्ट में चन्द्रमा की कुण्डली में स्थिति महत्त्वपूर्ण है। चन्द्रमा से ही गणान्त आदि देखा जाता है। चन्द्रमा से ही तिथि का महत्त्व है। तिथि चन्द्रमा से बनती है। दिन का नक्षत्र भी चन्द्रमा से ही देखा जाता है। जिस नक्षत्र में चन्द्रमा होता है वही नक्षत्र दिन का भी होता है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि वैदिक ज्योतिष में चन्द्रमा का बहुत महत्त्व है। तिथि, नक्षत्र, मुहूर्त, दशा आदि सब क्रियाकलाप चन्द्रमा से ही देखे जाते हैं। इसलिये गोचर में भी चन्द्रमा का महत्त्व बढ़ जाता है। इसलिए महर्षियों ने गोचर को भी चन्द्रमा से देखने का आदेश दिया।

क्या केवल गोचर से ही फलित कहा जा सकता है ?

गोचर फलित का एक प्रभावशाली अंग है और फलित में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। परन्तु यह सब कुछ नहीं होता। हमारे महर्षियों ने यह स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जो कुछ कुण्डली में नहीं, वह गोचर नहीं दे सकता। गोचर में ग्रह चाहे कितना ही अच्छा योग बनाते हों यदि वह योग कुण्डली में नहीं तो वह गोचर नहीं दे सकता।

उदाहरण–

गोचर तो दशा व अन्तर दशा के अधीन भी कार्य करता है। यदि दशा व अन्तर दशा ऐसे ग्रहों की चल रही हों जो जातक के लिये अशुभ हों परन्तु गोचर शुभ हो तो गोचर का शुभ फल जातक को नहीं मिलता। गोचर में यह देखा जाता है कि जन्म कुण्डली की ग्रह स्थिति से वर्तमान गोचर कुण्डली में ग्रह स्थिति अच्छी या बुरी किस स्थिति में है।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में उत्तम स्थान में पड़ा हो वह गोचर में शुभ स्थान पर आते ही शुभ फल देगा। जो ग्रह जन्म कुण्डली में अशुभ हो वह यदि गोचर में शुभ भी होगा तो भी शुभ फल नहीं देगा। गोचर के ग्रह जन्म के ग्रहों से जिस समय अंशात्मक या आसन्न योग करते हैं उस समय ही उनका ठीक फल प्रकट होता है। मानलें कि शुक्र वृष में 18^0 पर है। गोचर में शुक्र जब वृष 18^0 से योग बनायेगा तब ही शुक्र का अच्छा या बुरा फल प्रकट होगा। इस प्रकार गोचर के ग्रह जन्म के ग्रहों के अधीन हुए।

यदि गोचर का ग्रह अशुभ भाव में हो जन्म कुण्डली में वह ग्रह उच्च, स्वक्षेत्री हो तो गोचर में वह ग्रह अशुभ फल नहीं देता। गोचर के नियमों के आधार पर हम कह सकते हैं कि गोचर का फल जन्म कुण्डली की ग्रह–स्थिति पर निर्भर करता है।

यदि गोचर के अन्य नियमों का अध्ययन करें तो हम पायेंगे कि गोचर दशा व अन्तर दशा के भी अधीन है। एक ही भाव के कई फल होते हैं। जैसे– चतुर्थ भाव का कारकत्व माता, शिक्षा, वाहन जमीन, खेती–बाड़ी, सुख इत्यादि। इनमें से कौन सा फल फलित होना है यह सब दशा व अन्तर दशा पर निर्भर करता हैं। गोचर का फल वही होता है जो दशा व अन्तर दशा चाहती है। अर्थात् गोचर का फल दशा व अन्तर दशा के ऊपर निर्भर करता है। गोचर का फल तारा पर भी निर्भर करता है।

1,3,5,7 तारा जन्म नक्षत्र से अशुभ होती है।

गोचर अष्टक वर्ग का एक अंग है। अष्टक वर्ग में ग्रहों और लग्न को केन्द्र मानकर उनके शुभाशुभ स्थानों की गणना की जाती है। प्रत्येक ग्रह का अष्टक वर्ग चक्र बनाया जाता है और उससे गोचर के ग्रहों का शुभाशुभ फल कहा जाता है। गोचर का फल अष्टक वर्ग बिन्दुओं पर भी निर्भर करता है।

समस्त ग्रह गोचर में एक स्थिति बनाते हैं, एक योग बनाते हैं और उस योग के अनुसार गोचर के ग्रहों का फल शुभाशुभ होता है। केवल एक ग्रह के फल का कोई इतना महत्त्व नहीं हैं। वह तो समस्त ग्रह मण्डल का एक अंग मात्र है। जैसे हम शरीर न तो सिर को कह सकते हैं न आंखों को, न नाक को, और न ही अन्य भिन्न–भिन्न अंगों को। सभी अंगों का सम्मिलित रूप शरीर है। इसी प्रकार गोचर का फल भी समस्त ग्रह मण्डल की एक विशेष स्थिति का नाम है, न कि शनि का या गुरु आदि अन्य ग्रहों का। इसलिए शनि का या गुरु का प्रत्येक चक्र जातक को प्रत्येक समय भिन्न–भिन्न फल देता है।

इसलिए यह कहना उचित नहीं कि केवल गोचर के आधार पर फल कहा जाना चाहिए।

अध्याय–3

गोचर प्रकरण

गोचर ग्रह का फल देखते समय पहले कुंडली में वह ग्रह शुभ है या अशुभ यह समझ लेना चाहिए। अनुभव ऐसा है कि कुंडली में प्रथमतः जो ग्रह शुभ दिखता है उसका फल कभी–कभी बिल्कुल नहीं मिलता क्यांकि वह ग्रह उस कुंडली में वास्तव में शुभ नहीं होता। उदाहरणार्थ किसी मनुष्य की कुंडली में वृषभ लग्न है तथा दशम में गुरु है, यहां सर्वसाधारण ज्योतिषी मानता है कि दशमस्थ गुरु शुभ होता है अतः इसके शुभ फल मिलने चाहिये, किंतु अनुभव में शुभ फल नहीं मिलते। वृषभ लग्न के लिए गुरु अष्टमेश व लाभेश है, अतः इसके अशुभ फल मिलते हैं, या वह निष्फल होता है। इसी प्रकार अन्य लग्नों के लिए भी ग्रहों का विचार करना पड़ता है। इसलिए प्रथम बारह लग्नों के लिए शुभाशुभ ग्रह बतलाते हैं।

मेष लग्न : सूर्य, गुरु शुभ तथा शनि, शुक्र, बुध अशुभ होते हैं।

वृषभ लग्न : शनि, बुध शुभ तथा गुरु, शुक्र, चंद्र अशुभ होते हैं।

मिथुन लग्न : शुक्र, बुध शुभ तथा मंगल, गुरु, सूर्य अशुभ होता हैं

कर्क लग्न : मंगल, गुरु, शुभ तथा शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं।

सिंह लग्न : मंगल, गुरु शुभ तथा शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं।

कन्या लग्न : शुक्र, बुध शुभ तथा मंगल, गुरु, चंद्र अशुभ होते हैं।

तुला लग्न : शनि, बुध शुभ तथा सूर्य, गुरु, मंगल अशुभ होते हैं।

वृश्चिक लग्न : सूर्य, चंद्र विशेष शुभ गुरु शुभ, बुध, शुक्र, शनि अशुभ होते हैं।

धनु लग्न : शुक्र अशुभ, बाकी सब ग्रह शुभ होते हैं।

मकर लग्न : बुध, शुक्र शुभ तथा मंगल, गुरु, चंद्र अशुभ होते हैं।

कुंभ लग्न : शुक्र शुभ तथा मंगल, गुरु, चंद्र अशुभ होते हैं।

मीन लग्न : चंद्र, मंगल, गुरु शुभ तथा सूर्य, बुध, शुक्र शनि अशुभ होते हैं।

उपर्युक्त शुभाशुभ ग्रह देखकर ही गोचर ग्रहों के फल निर्धारित करने चाहिए।

जन्मकुंडली में किसी विशेष फल का काल निर्णय करने के लिए वर्ष कुंडली बनानी पड़ती है। वर्षफल की विभिन्न रीतियों में दिन वर्ष पद्धति मुख्य और सही फल बतलाने वाली है। दिन वर्ष पद्धति में भी गोचर ग्रहों का विचार करना पड़ता है। ग्रहों के दृष्टी योग अच्छे हों और गोचर ग्रह भी अच्छे हों, तो शुभ फल निश्चय मिलते हैं। कुंडली में योग अच्छे हों किंतु गोचर ग्रह अनिष्ट हों तो शुभ फल उतने नहीं दिखाई पड़ेंगे, गोचर ग्रहों के अशुभ फलों का अनुभव अधिक आयेगा। गोचर ग्रहों के विचार में जन्मकालीन ग्रहों

के साथ गोचर ग्रहों के सभी योगों का विचार जरूरी नहीं हैं इनमें युति और प्रतियोगों का विशेष महत्व है। युति के परिणााम विशेष रूप से होते हैं।

जन्मकुंडली में कुछ स्थान विशेष होते हैं, इन स्थानों से रवि, शनि, गुरु, मंगल का भ्रमण होते समय कुछ न कुछ स्पष्ट दिखने वाले फल मिलते हैं। जन्मलग्न का भाव प्रारंभ, दशम स्थान का मध्य, जन्मकालीन रवि, गुरु और चंद्र ये महत्वपूर्ण अंश है। इन स्थानों से गोचर ग्रहों के युति प्रतियोग महत्वपूर्ण फल देते हैं।

चंद्र प्रत्येक मास में बारहों राशियों में भ्रमण कर लेता है अतः साधारण रूप में गोचरित चंद्र के विशेष फल अनुभव में नहीं आते। किंतु बीमारी के समय या किसी विपत्ति के समय गोचरित चंद्र का काफी महत्वपूर्ण होता है। जन्मकुंडली में गुरु पंचम, नवम, दशम या लाभ स्थान में हो तो उस गुरु से गोचरित चंद्र का भ्रमण धनलाभ के लिए शुभ होता है, ये दिन सुख और सफलता देनेवाले होते हैं। जन्मकालीन शनि से चंद्र का भ्रमण असफलता और कष्ट का कारण बनता है। अन्य ग्रहों से चंद्र का भ्रमण तभी फलदायक होगा जब मूल कुंडली में वे ग्रह बलवान होंगे। चंद्र का भ्रमण किसी भी राशि में सवा दो दिन ही रहता है।

रवि का दशम स्थान से भ्रमण महत्त्वपूर्ण रहता है। रवि जिस स्थान से भ्रमण करता है उस स्थान के फल प्राप्त होते हैं। जन्म मास से 5, 9, 10वें मास साधारणतः शुभ और हितकर रहते हैं। इनमें स्वास्थ्य अच्छा रहता है। जन्मस्थ शनि पर रवि का भ्रमण जब होता है वे 2–4 दिन असफलता और कष्ट के होते हैं। प्रत्येक वर्ष में ये तारीखें निश्चित होती है अतः इनका ध्यान रखना चाहिए।

शुक्र का भ्रमण लग्न से 1, 2, 5, 7, 9 स्थानों में हो तो शुभ फल देता है। अन्य स्थानों में इसका महत्व नहीं है। लग्न में गोचर शुक्र मन को शांति देता है, स्वास्थ्य अच्छा रहता है, ये दिन आनंद और मनोरंजन के होते हैं। दूसरे स्थान में शुक्र परिवार के लोगों से संपर्क कराता है, धन के व्यवहार अच्छे चलते हैं। संगीत आदि से मनोरंजन होता रहता है। पंचम स्थान में शुक्र ऐश्वर्य के सुख देता है। सप्तम स्थान पत्नी का है, यहां शुक्र का भ्रमण वैवाहिक सुख अच्छी तरह देता है। नवम में शुक्र का भ्रमण नौकरी या व्यवसाय में सफलता देता है।

इन तीन ग्रहों से मंगल के परिणाम अधिक तीव्र होते हैं। मंगल एक राशि में डेढ़ (45 दिन) मास रहता है, वक्री होने पर 5 मास तक एक राशि में रहता है। वक्री मंगल 6, 8, 12 इन अनिष्ट स्थानों में हो या इन स्थानों में शनि, शुक्र या राहु के पास हो तो इन स्थानों के अनिष्ट फलों की संभावना रहती है। गुरु, शनि व चंद्र जितना मंगल का भ्रमण महत्त्वपूर्ण नहीं है।

मंगल का विभिन्न भावों में गोचर फल

लग्न से मंगल का भ्रमण काम करने का उत्साह बढ़ाता है, गुस्सा जल्द ही आता है। लग्न कुंडली रवि लग्न में हो और उस पर गोचर मंगल शरीर की गर्मी को बढ़ाता है। जन्मस्थ शनि लग्न में हो तो शरीर को कष्ट होता है। जन्मस्थ गुरु लग्न में हो तो मंगल का लग्न में भ्रमण आरोग्य देता है। जन्मस्थ चंद्र

लग्न में हो तो झगड़े होते हैं। मकर या मेष लग्न हो तो गोचरित मंगल लग्न में आने पर प्रवास होगा, वृश्चिक लग्न हो तो आरोग्य अच्छा रहेगा, कर्क लग्न हो, मंगल का लग्न में गोचर हो तो रोग होंगे।

द्वितीय स्थान में से मंगल का भ्रमण खर्च बढ़ाता है। जन्मस्थ शनि इस स्थान में हो तो कर्ज होता है, आर्थिक नुकसान होता है। यहां मेष, वृश्चिक या मकर राशि हो तो मंगल का भ्रमण आमदनी बढ़ाता है।

तीसरे स्थान से मंगल का भ्रमण प्रवास के लिए बुरा होता हैं यहां धनु राशि हो तो इससे मंगल भ्रमण के समय की गई यात्रा में कष्ट होता है, दुर्घटना संभव होती है। मेष, कर्क, तुला या मकर राशि तृतीय में हो तथा मंगल का गोचर हो तो नौकरीपेशा लोगों का स्थानांतर कराता है। यहां वृश्चिक राशि हो तो मंगल का भ्रमण कुछ बातें इच्छानुसार पूरी होती है। अन्य राशियों में कुछ उतावलापन स्वभाव में आता है।

चतुर्थ स्थान पर मंगल का भ्रमण गृह सुख अच्छा नहीं देता। जन्मस्थ शनि, राहु या मंगल यहां हो तो घर के काम की कुछ ना कुछ चिंता रहती है। किसानों के लिए चतुर्थ में वृषभ, कर्क, कुंभ या तुला राशि हो तो मंगल के भ्रमण के समय खेती के बैल आदि अच्छे नहीं मिलते, उस संबंध में कुछ नुकसान होता है। मेष, मकर, वृश्चिक राशि चतुर्थ में हो तो मंगल का भ्रमण अनिष्ट नहीं होता। इस स्थान पर मंगल के गोचर का विशेष महत्त्व नहीं है।

पंचम स्थान पर मंगल का गोचर खर्च बढ़ाता है, संतान का आरोग्य ठीक नहीं रहता। शनि, मंगल, हर्षल या राहु इस स्थान में हो तो संतान के स्वास्थ्य के बारे में चिंता होती हैं कर्क, मिथुन, तुला या कुंभ राशि पंचम में हो तो व्यापारी लोगों को मंगल गोचर के समय सट्टा या वायदा व्यवहार में नुकसान होता है। इन राशियों में शनि हो तो इसका विशेष रूप से अनुभव में होता है। पंचम में मंगल का भ्रमण साधारणतः कामुकता बढ़ाता है।

षष्ठ स्थान में से मंगल का भ्रमण सभी राशियों में अशुभ होता है। थकावट बहुत होती है, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, नौकर अच्छे नहीं मिलते। इस स्थान में शनि हो तो मंगल भ्रमण के समय निश्चित रूप से अस्वस्थता रहती है। सिंह या धनु राशि यहां तो तथा गोचरित गुरु या शनि अनिष्ट हो तो इस स्थान में मंगल का गोचर चारों से या आग से नुकसान कराता है।

सप्तम स्थान में से मंगल का गोचर कोर्ट के कामों तथा साझेदारी के व्यापार के लिए अशुभ होता है। साझेदारों में झगड़ा होता है, शत्रुओं से कष्ट होता है। सप्तम में जन्मस्थ शुक्र हो तो नैतिक दृष्टि से गलत काम होते हैं। जन्मस्थ शनि सप्तम में हो तो यहां मंगल का गोचर स्त्री का स्वास्थ्य बिगाड़ता है।

अष्टम स्थान में से मंगल के गोचर का विशेष महत्त्व नहीं होता। किंतु यदि पहले से कोई बीमारी हो तो इस गोचर के दौरान वह ठीक नहीं होती, बल्कि तीव्र हो जाती है।

नवम स्थान में मंगल का गोचर उद्योगी प्रवृत्ति बढ़ाता है। यहां मकर, कर्क या मेष राशि हो और मंगल का गोचर हो तो प्रवास होता है। जन्मस्थ शनि नवम में हो तो इस पर से मंगल का गोचर बदनामी का

कारण बनता है, सार्वजनिक कामों में निंदा होती है। यहां वृश्चिक राशि हो और मंगल का गोचर हो तो उद्योग–व्यवसाय बढ़ता है।

दशम स्थान में अनुकूल राशि हो तो मंगल का गोचर व्यापार, उद्योग बढ़ाता है, आढ़त का काम अच्छा चलता है। नौकरी पेशा लोगों के लिए उच्च अधिकारी अनुकूल रहते हैं। काम सुचारू रूप से होते हैं। यहां प्रतिकूल राशि हो और जन्मस्थ शनि या राहु दशम में हो तो मंगल का गोचर नौकरी में संकट पैदा करता है, मानहानि के योग बनते हैं, जन्मस्थ ग्रह अनिष्ट हो तो इस समय नौकरी में पदावनति होना, व्यापार में साख कम होना, हुंडियों का भुगतान न कर पाना आदि संकट आते हैं।

एकादश स्थान में से मंगल का गोचर परिणामकारक नहीं होता। यहां वृषभ या तुला राशि हो तो कुछ आमदनी बढ़ती है। शत्रु राशि से या शत्रु ग्रह पर से यह गोचर हो तो मित्रों या परिचितों से कष्ट होता है, खर्च ज्यादा होता है।

द्वादश स्थान में से मंगल के गोचर के समय गुप्त शत्रु पैदा होते हैं। यहां जन्मस्थ शनि या बुध से अथवा कर्क, वृषभ, तुला, धनु राशि से मंगल का गोचर बहुत अशुभ होता है। इस समय सरकारी मामलों में झंझटों से कष्ट होता है।

गोचर सूर्य के फल

गोचर सूर्य 3, 6, 10, 11 इस स्थानों में होता है उस समय धन, कीर्ति, राजदरबार में सम्मान, सब कार्यों में सफलता, अच्छी बुद्धि, स्वजन संबंधियों का सुख तथा पुण्य की वृद्धि ये फल प्राप्त होते हैं।

गोचर सूर्य 1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 12 इन स्थानों में हो तो रोग, शोक, भय, अग्नि से कष्ट, चिंता, प्रवास, धन की हानि ये फल प्राप्त होते हैं।

गोचर चंद्र के फल

गोचर चंद्र 1, 2, 3, 6, 7, 10, 11 इन स्थानों में हो तो लाभ होता है, धन मिलता है, मित्रों से भेंट होती है, बुद्धि अच्छी बढ़ती है तथा देव–ब्राह्मणों की भक्ति होती है।

गोचर चंद्र 4, 5, 8, 9, 12 इन स्थानों में हो तो धन हानि, चोर या आग से भय, मारपीट या कारावास, नुकसान, वियोग, भय, दुःख ये फल मिलते हैं।

गोचर मंगल के फल

मंगल 3, 6, 11 इन स्थानों में भ्रमण कर रहा हो तो भूमि, सोना, वस्त्र आदि का लाभ होता है, शत्रु नष्ट होते हैं, राजा की कृपा और आरोग्य का सुख मिलता है।

गोचर मंगल 1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 10 इन स्थानों में हो तो रोग, परदेश में प्रवास, मित्रों से झगड़ा ये फल मिलते है।

गोचर बुध के फल

गोचर बुध 2, 4, 6, 8, 10, 11 इन स्थानों में हो तो लाभ, भाग्योदय सुख, मन को आनंद, धन लाभ, संपत्ति की वृद्धि ये फल मिलते हैं।

गोचर बुध 1, 3, 5, 7, 9, 12 इन स्थानों में भ्रमण करता हो तो सुख नष्ट होता है, धन की हानि होती है, भाई बंधुओं से विरोध, शोक, भय, शारीरिक कष्ट, शत्रुओं का डर, दुःख, रोग, वियोग ये फल मिलते हैं।

गोचर गुरु के फल

गोचर गुरु 2, 5, 7, 9, 11 इन स्थानों में भ्रमण करता हो तो खरीद–बिक्री में लाभ, प्रतिष्ठा में वृद्धि, बुद्धि में वृद्धि, धनलाभ, सुख और संपत्ति ये फल मिलते हैं।

गोचर गुरु 1, 3, 4, 6, 8, 10, 12 इन स्थानों में भ्रमण करता हो तो रोग, विदेश में प्रवास, मित्रों से झगड़ा ये फल मिलते हैं।

गोचर शुक्र के फल

गोचर शुक्र 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12 इन स्थानों में भ्रमण करता हो तो स्वजनों से मिलना, पुत्र कुटुंब में सुख आदि के फल मिलते हैं।

गोचर शुक्र 6, 7, 10 इन स्थानों में भ्रमण करता हो तो अशुभ होता है। यह रोग, शोक, काम बिगड़ना, बड़ी विपत्ति, स्त्री से विरोध तथा बीमारी ये फल देता है।

गोचर शनि के फल

गोचर शनि 3, 6, 11 इन स्थानों में हो तो सुख, सुवर्ण, वस्त्र आदि का लाभ होता है, राजा से या मित्रों से विजय मिलती है, धन और संपत्ति मिलती है।

गोचर शनि 1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 10, 12 इन स्थानों में हो तो अपने संबंधियों से भी झगड़ा होता है, धन और संपत्ति का नुकसान होता है।

गोचर राहु के फल

गोचर शनि 1, 3, 6, 9, 10, 11 इन स्थानों में भ्रमण करता हो तो विवाह होता है अगर दूसरों की स्त्री मिलती, पुत्र की प्राप्ति, धन लाभ ये फल मिलते हैं। यह 2, 4, 5, 7, 8, 12 इन स्थानों में भ्रमण करता हो तो मृत्यु संभव होता है।

शनि की साढ़ेसाती व ढैय्या

चंद्रमा से गोचर शनि के 1, 2, 12 इन स्थानों के भ्रमण को साढ़ेसाती कहा जाता है तथा 4, 8 इन स्थानों के भ्रमण को ढैय्या कहते हैं। कर्नाटक में चौथे और पांचवें स्थान में भ्रमण करनेवाले शनि को पंचमी कहते हैं। कर्नाटक में साढ़ेसाती से भी अधिक डर पंचमी शनि का होता है। साढ़ेसाती से चतुर्थ व पंचम स्थान के शनि के फल अधिक अशुभ मानते हैं।

चतुर्थ व पंचम शनि फूटे मटके में खाना खिलाता है, तात्पर्य उस समय व्यवसाय में नुकसान होता है, दिवाला निकलता है, कर्ज होता है जायदाद नष्ट होती है, प्रियजनों की मृत्यु होती है, गांव छोड़ना पड़ता है, पत्नी, पुत्रों का वियोग होता है।

चंद्र राशि के चौथे या आठवें स्थान में शनि आने पर रोग, भाईयों से झगड़ा, विदेश में प्रवास, कष्ट, चिंता ये फल मिलते हैं। बारहवें, पहले या दूसरे स्थान का शनि हृदय, सिर, पैर में पीड़ा होती है, दुष्टों से भय होता है, मानसिक तनाव रहता है। पुत्रों और पशुओं को कष्ट होता है।

चंद्र राशि से द्वादश भावों में ग्रह गोचर फल

सूर्य के फल

चंद्र से प्रथम स्थान में गोचर सूर्य हो तो प्रवास, दूसरे में भय, तीसरे में धन लाभ, चौथे में व्यसन, पांचवें में दरिद्रता, छठे में शत्रुओं का नाश, सातवें में प्रवास, आठवें में पीड़ा, नौवें में कांति कम होना, दसवें में इच्छित की प्राप्ति, ग्यारहवें में लाभ तथा बारहवें में खर्च ये फल मिलते हैं।

चंद्र के फल

जन्मराशि से प्रथम स्थान में गोचर चंद्र उत्तम अन्न देता है, दुसरे में धन हानि, तीसरे में धन लाभ, चौथे में पेट दर्द, पांचवें में काम में सफलता, छठे में काम बिगड़ना, सातवें में लाभ, आठवें में रोग, नौवें में राजा का भय, दसवें में सुख, ग्यारहवें में लाभ तथा बारहवें में शोक ये फल मिलते हैं।

दूसरे, पांचवे तथा नौवें स्थान में चंद्र का जो अशुभ फल बतलाया है वह चंद्र के क्षीण होने का समय शेष तिथियों के चंद्र के उक्त स्थानों के फल बहुत शुभ होते हैं क्योंकि उस समय चंद्र की कलाएं अधिक होती हैं।

मंगल के फल

प्रथम स्थान में भय, दूसरे में नुकसान, तीसरे में धन लाभ, चौथे में शत्रु बढ़ना, पांचवें में धन हानि, छठे में धन लाभ, सातवें में धन हानि, आठवें में शस्त्रों से आघात, नौवें व दसवें में रोग, ग्यारहवें में लाभ तथा बारहवें में खर्च ये फल मिलते हैं।

बुध के फल

गोचर बुध प्रथम स्थान में बंधु लाभ, दूसरे में धन लाभ, तीसरे में शत्रुओं का डर, चौथे में धन लाभ, पांचवें में कष्ट, छठे में स्थिरता, सातवें में पीड़ा, आठवें में धन लाभ, नौवें में खेद, दसवें में सुख, ग्यारहवें में लाभ तथा बारहवें में धन हानि ये फल मिलते हैं।

गुरु के फल

जन्मराशि में गुरु का परिभ्रमण भय उत्पन्न करता है, दूसरे में धन, तीसरे में पीड़ा, चौथे में शत्रुओं की वृद्धि, पांचवें में सुख, छठे में शोक, सातवें में सरकारी सम्मान, आठवें में रोग, नौवें में सुख या दीनता, दसवें में सम्मान, ग्यारहवें में धन तथा बारहवें में पीड़ा ये फल मिलते हैं।

शुक्र के फल

जन्मराशि में गोचर शुक्र शत्रुओं का नाश करता है, दूसरे में धन, तीसरे में सुख, चौथे में धन, पांचवें में पुत्र प्राप्ति, छठे में शत्रुओं की वृद्धि, सातवें में शोक, आठवें में धन लाभ, नौवें में उत्तम वस्त्रों का लाभ, दसवें में पीड़ा, ग्यारहवें तथा बारहवें में धन लाभ ये फल देता हैं।

शनि के फल

जन्मराशि में गोचर शनि स्थान से गिराता है, दूसरे स्थान में कष्ट, तीसरे में कल्याण, चौथे में शत्रु बढ़ना, पांचवें में पुत्र से सुख, छठे में सुख, सातवें में क्रोध, आठवें में पीड़ा, नौवें में सुख, दसवें में निर्धनता, ग्यारहवें में धन लाभ तथा बारहवें में अनेक प्रकार के अनर्थ ये फल मिलते हैं।

राहु के फल

जन्मराशि में गोचर राहु या केतु हानि करते हैं, दूसरे स्थान में निर्धनता, तीसरे में धन प्राप्ति, चौथे में वैर, पांचवें में शोक, छठे में धन लाभ, सातवें में वादविवाद, आठवें में पीड़ा, नौवें में पाप, दसवें में वैर, ग्यारहवें में सुख तथा बारहवें में धनहानि ये फल मिलते हैं।

लग्न से द्वादश भावों में ग्रह गोचर फल

लग्न से प्रथम भाव पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य : उष्णता रहती है, मन की स्वस्थता बिगड़ती है, घर में झगड़े होते हैं, व्यवसाय में मन नहीं लगता। यही कुंडली में शुभ हो तो मास अच्छा जाता है, हाथ में पैसा आते रहता है, अच्छे काम होते हैं।

चंद्र : शुभ हो तो विचार अच्छे रहते है, किसी की मदद जरूरी हो तो तुरंत मिलती है, यह शुभ हो तो दो दिन अच्छे जाते हैं। अशुभ हो तो मन अस्वस्थ रहता है, पैसा बहुत खर्च होता है किंतु व्यर्थ खर्च होता है।

मंगल : शुभ हो तो काम जल्दी होते है, यात्रा बहुत होती है, व्यवसाय से लाभ होता है, वरिष्ठों से अनबन होती है किंतु जल्दी ही संबंध सुधर जाते हैं। अशुभ हो तो पित्त के विकार होते है, आरोग्य ठीक नहीं रहता, अपमान सहन नहीं होता, क्रोध बहुत आता है, पैसे समय पर नहीं मिलते, पत्नी से अनबन होती है, सब कामों में अड़चने आती है।

बुध : विचार अच्छे आते हैं किंतु चंचलता रहती है, लेखन अच्छा हो सकता है। यह अशुभ हो तो अविचार से ऐसा काम हो जाता है जिसके लिए बाद में पछताना पड़ता है, धोखा देनेवाले मित्र मिलते हैं।

गुरु : शुभ हो तो शांति और समाधान मिलता है, पत्नी गर्भवती होती है या प्रसूता होती है। अधिकार बढ़ता है। होशियारी से मौकों पर काम बन जाते हैं। मित्र बहुत मिलते हैं। शुभ कार्य होते हैं। प्रवास होता है। धन मिलता है। स्त्री सुख अच्छा मिलता है। छात्रों को परीक्षा में सफलता मिलती है। शिक्षा के प्रारंभ या पूर्णता में अड़चन नहीं होती। उत्साह बना रहता है घर में कोई बीमार हो तो वह ठीक हो जाता है। सम्मान मिलता है। लोगों के विवाहादि कार्यों में मदद करने का अवसर आता है। यह गुरु कुंडली में अशुभ हो तो इस समय बड़े लोगों में अपमान होता है, मन उदास रहता है, खर्च बहुत होता है, स्त्री व पुत्र बीमार होते हैं, वरिष्ठों से अनबन होती है, धन नष्ट होता है।

शुक्र : शुभ हो तो स्त्री सुख अच्छा मिलता है। मन में स्त्री विषयक विचार अधिक आते हैं। काफी धन मिलता है। व्यवसाय में लाभ होता है। नये लोगों से परिचय होता है। यह शुक्र कुंडली में अशुभ हो तो स्त्री सुख नहीं मिलता। परस्त्रियों से संपर्क होकर धन खर्च होता हैं बुरी आदतें लगती है।

शनि : शुभ हो तो हर एक काम अड़चनों के बाद विलंब से किंतु अच्छी तरह होता है। इससे आत्मविश्वास बढ़ता है। लोगों में प्रभाव बढ़ता है। मित्र मिलते हैं, उनके स्नेह से मदद होती है। कीर्ति बढ़ती है, उत्तरदायित्व निभाने योग्य बड़ा पद मिलता है। व्यवसाय बढ़ता है। व्यवसाय के लिए बहुत प्रवास होता है। विदेश यात्रा भी हो सकती है। बड़े कामों के विचार मन में आते रहते हैं। लोगों के काम मुफ्त में करता है। शनि अशुभ हो तो इस समय अपने पर भरोसा नहीं रहता, कहीं भाग जाने का या आत्महत्या का विचार मन में आता है। पिता व पत्नी बीमार रहती है। कुंडली में द्विभार्या योग हो तो यह समय पत्नी के लिए घातक होता है। संतान का भी वियोग हो सकता है। स्वयं बीमार रहता है। व्यवसाय ठप्प होता है। नौकरी छूटती है। परीक्षा में असफल होता है। शिक्षा में रूकावट आती है। भटकना पड़ता है। धन

नहीं मिलता, कर्ज होता है। किसी को पैसे देकर भूल जाने या कहीं गुम जाने से या साझेदारी में विश्वासघात से नुकसान होता है। बुरे स्थानों में तबादला होता है, मित्र दूर जाते हैं, अपमान होता है, कचहरी के मामलों में उलझता है।

लग्न से द्वितीय भाव पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य : शुभ हो तो पैसा काफी मिलता है, काम अचानक पूरे होते हैं, लोगों पर प्रभाव पड़ता है, मन प्रसन्न रहता है, कामुकता बढ़ती है किंतु घर में अड़चनें रहती है। अशुभ हो तो धन नहीं मिलता, मिले भी तो टिकता नहीं है। खर्च के मौके पहले आते हैं, धन बाद में मिलता है। इस समय सट्टा नहीं खेलना चाहिए नुकसान होता है। आंखों में कष्ट होता है। लोगों से झगड़े होते हैं। घर में अव्यवस्था रहती है, कर्ज होता है, व्यवसाय में ध्यान नहीं रहता।

चंद्र : धन मिलता है, समाधान रहता है, किंतु सोचा हुआ काम समय पर नहीं होता, साधारणतः दो दिन अच्छे जाते हैं।

मंगल : कुंडली में शुभ हो या अशुभ इस समय धन नहीं मिलता, खर्च के मौके बहुत आते हैं, बहुत तंगी रहती है, मन स्वस्थ नहीं रहता, झगड़े होते हैं, बीमारियां होती है, सट्टे में नुकसान होता है, लोगों के अपशब्द सुनने पड़ते हैं। शरीर में उष्णता और कामेच्छा बहुत बढ़ती है। व्यवसाय में रुकावटें आती है।

बुध : मन में स्वस्थता रहती है, लेखन कार्य अच्छा होता है। यह अशुभ हो तो अदालत के लिए जरूरी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने में सावधानी रखनी चाहिए अन्यथा फौजदारी मामलों में उलझना पड़ता है।

गुरु : शुभ हो तो पूर्व अर्जित जायदाद में वृद्धि होती है। मासिक आमदनी बढ़ती है, पद में वृद्धि होती है। व्यवसाय में तरक्की होती है। परिवार का सुख अच्छा मिलता है। प्रवास बहुत होता है। यह अशुभ हो तो इस समय जायदाद के मामलों में परेशानियां आती है, कर्ज लेना पड़ता है। जायदाद गहन रखनी पड़ती है। नौकरी या व्यवसाय में हानि होती है। घर में कोई बीमार रहता है। कुल मिलाकर समय ठीक नहीं होता।

शुक्र : शुभ हो तो भोजन, वस्त्र, धन अच्छा मिलता है। अशुभ हो तो सट्टे में नुकसान होता है, कर्ज होता है।

शनि : शुभ हो तो आय बढ़ती है, पूर्व अर्जित जायदाद बढ़ती है। कर्ज से छुटकारा मिलता है। बड़े व्यवसाय की योजनाएं मन में आती है। इमारतें बनवा कर किराये की आमदनी प्राप्त करने की कोशिश होती है। अदालती और अन्य मामलों में भी सफलता मिलती है। यह अशुभ हो तो घर में प्रमुख व्यक्ति अथवा किसी स्त्री की मृत्यु होती है। अचल संपत्ति में परेशानी से नुकसान होता है। अदालती मामलों में हानि होती है। स्वयं अथवा स्त्री या पुत्र बीमार रहते हैं। लंबी बीमारियां चलती हैं। नौकरी से सस्पेंड होना या पदावनति होना जैसे अपमान के प्रसंग आते हैं या नौकरी छूट जाती है। व्यवसाय में नुकसान होता है। बेइज्जती होती है। यदि इसी समय गुरु का शुभ गोचर हो रहा हो तो उसके शुभ फल भी इस शनि के अशुभ गोचर से समाप्त हो जाते हैं। छात्र परीक्षा में असफल होते हैं, शिक्षा छोड़कर कमाई की चिंता करनी पड़ती है। कुल मिलाकर यह समय दुःखदायी होता है।

लग्न से तृतीय भाव पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य : शुभ हो तो अच्छे काम होते हैं। काम जल्दी पूरे होते हैं। अधिकार मिलता है, लोगों पर प्रभाव पड़ता है। बेरोजगार को नौकरी मिलती है या व्यवसाय शुरू होता है। धनार्जन शुरू होता है। प्रवास होते हैं। यह अशुभ हो तो भाई–भाई अलग होते है; यद्यपि झगड़ा अदालत तक नहीं जाता। वरिष्ठों से अनबन रहती है। मित्रों से संपर्क टूटता है।

चंद्र : यह समय साधारण ठीक होता है। मित्र मिलते हैं, उनके साथ चाय, पानी, मनोरंजन आदि में व्यय अधिक होता है।

मंगल : शुभ हो तो प्रगति और कीर्ति की प्राप्ति लिए अनुकूल घटनाएं घटती है। साहस बढ़ता है। प्रवास होता है। सट्टे या व्यापार में अंदाज से अधिक फायदा होता है। स्वयं को लाभ होता है किंतु भाई कष्ट में रहते हैं। यह अशुभ हो तो संतान को कष्ट होता है। भाईयों से झगड़ा होता है। मन में अस्वस्थता बनी रहती है। स्वभाव गरम रहता है। लोग संदेह की निगाह से देखते हैं। नौकरों के तबादले होते हैं।

बुध : शुभ हो तो बुद्धि शांत और स्थिर रहती है। प्रवास होता है। हर एक काम सावधानी से तथा व्यवस्थित होता है। लेखन अच्छा होता है। यह अशुभ हो तो कामों में अव्यवस्थता रहती है। व्यवहार में आलस और सफाई का अभाव रहता है।

गुरु : शुभ हो तो शांति और समाधान रहता है। अधिकारियों के तबादले नहीं होते। घर में मंगल कार्य होते हैं। पद में वृद्धि होती है। व्यापार में परिवर्तन नहीं होता, लाभ साधारण होता है किंतु कर्ज नहीं होता, विवाह और पुत्र प्राप्ति की संभावना होती है। लेखन अच्छा होता है। वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न रहते हैं। छात्र उत्तीर्ण होते हैं। यही गुरु अशुभ हो तो गर्भपात या संतान की मृत्यु होती है। पत्नी अस्वस्थ रहती है। धन हाथ में नहीं रहता, कर्ज होता है। आमदनी से अधिक खर्च होता है। भाईयों से झगड़े होते हैं। छात्र उत्तीर्ण नहीं होते। नौकरी छूटती है या व्यवसाय बंद होने की स्थिति आती है। भाग्य की उतरती स्थिति होती है।

शुक्र : शुभ हो तो स्त्री सुख मिलता है। अशुभ हो तो धन लाभ नहीं होता, स्त्री सुख में बाधा आती है।

शनि : शुभ हो तो मन शांत व संतोषी रहता है। उत्साह व साहस बढ़ता है। कर्तव्य बढ़ता है। व्यवसाय में आत्मविश्वास बढ़ता है। तरक्की होती है। प्रवास बहुत होता है। लोगों के विवाह कार्य में मदद करता है। धन मिलता है। मित्र, भाई मदद करते हैं। अदालती मामलों में सफलता मिलती है। यदि यही अशुभ हो तो मन में उदासी रहती है, काम करने की इच्छा नहीं होती, आलस बढ़ता है। तबादले बुरी जगह होते हैं। नौकरी का स्थान अच्छा नहीं मिलता। भाईयों में अदालती मामलों तक झगड़े होते हैं। भाई, बहनोई या संतान का मृत्युयोग होता है। बेकार रहना पड़ता है। सब ओर अपमान के मौके आते हैं।

लग्न से चतुर्थ भाव पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य : शुभ हो तो मेहमान बहुत आते हैं, घर का सुख अच्छा मिलता है। घर के रख–रखाव में खर्च होता है। अशुभ हो तो स्वस्थ नहीं रहता, मन–मस्तिष्क को तकलीफ होती है। मन अस्वस्थ रहता है।

चंद्र : शुभ हो तो दो दिन धन लाभ के होते हैं, मन प्रसन्न रहता है। अशुभ हो तो मन अस्वस्थ रहता है।

मंगल : शुभ हो तो नये व्यवसायों की कल्पना मन में आती है। वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न रहते हैं। उत्साह व साहस बढ़ता है। काम जल्दी पूरे होते हैं। जायदाद के संबंध में अदालती मामलों का निर्णय अपने पक्ष में होता है अशुभ हो तो टाइफाईड, जैसी खतरनाक बीमारियां होती है। जायदाद के मामले अदालत में जाते हैं।

गुरु : शुभ हो तो अचल संपत्ति मिलती है। स्थानांतरण अच्छी जगह होता है। माता का स्वास्थ्य ठीक रहता है। मित्र मदद करते हैं। अध्ययन के लिए समय ठीक रहता है। खेती–बाड़ी से अच्छी आमदनी होती है। पेंशन का समय हो तो यह धन मिलने में दिक्कत नहीं होती। गुरु अशुभ हो तो विशेषकर मेष लग्न वालों के लिए लग्न कुंडली में भी चतुर्थ में गुरु हो तो यह समय अचल संपत्ति के नष्ट होने का होता है। दरिद्री हो जाता है। माता बीमार रहती है। पिता का वियोग भी हो सकता है। स्थानांतरण खराब जगह हो जाता है। तरक्की रुक जाती है। लोगों में निंदा होती है। जायदाद के बारे में अदालती मामले चलते हैं, निर्णय विरोध में होता है। मन में स्वस्थता नहीं रहती।

शुक्र : शुभ हो तो व्यवसाय में लाभ होता है, धन मिलता है, स्त्री सुख अच्छा मिलता है। अशुभ हो तो व्यवसाय में नुकसान होता है, स्त्री सुख में बाधा आती है, पैसा नहीं मिलता।

शनि : शुभ हो तो जायदाद बढ़ती है, व्यवसाय में फायदा होता है। किसी रिश्तेदार की मृत्यु से वारिस के रुप में धन मिलता है। बड़े काम होते हैं। तबादला और तरक्की होती है। यदि यहां 36वां वर्ष पूरा हो रहा हो तो भाग्योदय की शुरूआत होती है। यह शनि अशुभ हो तो पेंशन में परेशानी आती है (अतः इस शनि के गोचर के पहले पेंशन लेना संभव हो तो एक दो साल पहले ही लेनी चाहिए।) पिता या घर के किसी वरिष्ठ व्यक्ति की मृत्यु होती है। माता बीमार रहती है। कुंडली में द्विभार्या योग हो तो पत्नी की मृत्यु संभव होती है। व्यवसाय बंद पड़ता है। नापसंद स्थान पर स्थानांतरण होते हैं। बेइज्जती होती है। पत्नी, पुत्र इच्छा के विरुद्ध व्यवहार करते हैं। पूर्व अर्जित जायदाद के संबंध में भाईयों में झगड़े होते हैं।

लग्न से पंचम भाव पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य : शुभ हो तो बुद्धि स्थिर रहती है। अच्छे काम होते हैं। प्रारंभ किये काम में सफलता मिलती हैं स्वास्थ्य ठीक रहता है। उत्साह बढ़ता हैं अशुभ हो तो पुत्रों का स्वास्थ्य बिगड़ता है, औषधि में बहुत खर्च होता है, मन अस्वस्थ रहता है। स्वयं की और पत्नी की गर्मी बढ़ती है।

चंद्र : दो दिन अच्छे जाते हैं। मन प्रसन्न रहता है। धन मिलता है। अशुभ हो तो मन उदास रहता है, काम में मन नहीं लगता।

मंगल : शुभ हो तो व्यापार या सट्टे में लाभ होता है। साहस, उत्साह बढ़ता है। तरक्की होती है। अच्छी जगह स्थानांतरण होते हैं। मेहनत की परवाह न करके काम करता है। अशुभ हो तो संतानों का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। सट्टे में नुकसान होता है। आमदनी से खर्च अधिक होता है। व्यर्थ प्रवास करना पड़ता

है। पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ता है। मन अस्वस्थ रहता है। हर काम में असफलता मिलती है। परीक्षा में असफलता मिलती है। वरिष्ठों से अनबन होती है।

बुध : शुभ हो तो बुद्धि तेज होती है, विचारशील होता है, छोटी बातें भी ध्यानपूर्वक देखता है। शेयर व्यापार में लाभ होता है। लेखन कार्य, छात्रों का अध्ययन अच्छा होता है। अशुभ हो तो पढ़ाई में ध्यान नहीं लगता, बुद्धि विपरीत दिशा में कार्य करती है, शेयर आदि में नुकसान होता है।

गुरु : शुभ हो तो परीक्षा में सफल होता है, शिक्षा पूर्ण होती है। संतान प्राप्ति संभावना होती है। नौकरी मिलती है। धन लाभ साधारण होता है। कीर्ति बढ़ती है। अशुभ हो तो शिक्षा अधुरी रहती है या परीक्षा में असफलता मिलती है। बेकार रहना पड़ता है या नौकरी में बहुत कम वेतन मिलता है। मन असंतुष्ट रहता है।

शुक्र : शुभ हो तो यह मास उत्तम जाता है। मित्रों से मदद मिलती है। सब सुख मिलता है। परस्त्री सें संपर्क होता हैं मन प्रसन्न रहता है। अशुभ हो तो पत्नी की बीमारी से स्त्री सुख में बाधा पड़ती है। पुत्र भी बीमार रहते हैं।

शनि : शुभ हो तो विशेष कर कन्या संतान होती है। शिक्षा पूरी होती है। काम सफल होते हैं। अधिकार मिलता है। तरक्की होती है। शेयर, सट्टे के व्यापार में लाभ होता है। कीर्ति बढ़ती है। मित्रों से मदद मिलती है। विदेश यात्रा हो सकती हैं जायदाद मिलती है या खरीदी जाती है। अशुभ हो तो सट्टे और शेयर व्यापार में नुकसान होता है। दीवाला निकल सकता है। कर्ज होता है। बेरोजगारी, बेइज्जती, संतान की मृत्यु, पत्नी की बीमारी, स्वयं की बीमारी, आमदनी से अधिक खर्च, खाने की मुश्किल, दूसरों से भीख मांगने जैसी हालत, मित्रों से दुराव, अपमान, जायदाद या व्यापार के लिये झगड़े, नौकरी में निलंबित होना या किसी मामले में कारावास आदि दुःखदायक बातें होती है।

लग्न से षष्ठ भाव पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य : शुभ हो तो आरोग्य उत्तम रहता है। मन स्वस्थ रहता है। काम सफल होते हैं। शत्रु पराजित होते हैं। अशुभ हो तो उष्णता बढ़ती है, काम सफल न होने से मन उदास रहता है।

चंद्र : शुभ हो तो कुछ धन मिलता है, मन संतुष्ट रहता है। अशुभ हो तो धन नहीं मिलता तथा मन अशांत रहता है।

मंगल : शुभ हो तो व्यवसाय के लिए प्रवास होता है। सफलता कष्ट से मिलती है। रिश्वत देकर अदालती काम करवाने पड़ते हैं। स्त्री सुख अच्छा मिलता है। अशुभ हो तो फौजदारी मामलों में उलझना पड़ता है, लोगों से झगड़े होते हैं, अदालत के निर्णय विरोध में होते हैं। व्यर्थ ही पैसा खर्च होता है, कर्ज होता है। बवासीर, से कष्ट होता है। खराब जगह तबादला होता है। नौकरी में पदावनति होने की संभावना होती है। वरिष्ठ अधिकारी से झगड़ा होता है।

बुध : शुभ हो या अशुभ बुद्धि को स्थिर रखता है। परिस्थिति में कोई हलचल नहीं होती। सभी कार्य शांति से चलते रहते हैं।

गुरु : शुभ हो तो शत्रु दबे रहते हैं या पराजय स्वीकार करते हैं। चुनाव में बड़े प्रतिस्पर्धी को भी पराजित कर सकते हैं स्वास्थ्य साधारण तथा ठीक रहता है। कर्ज चुकाने का इंतजाम होता है। अच्छे स्वप्न दिखते हैं। अशुभ हो तो कर्ज होता है, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, काम सफल नहीं होते, मन में स्वस्थता नहीं रहती, परीक्षा में असफल होते हैं। खराब जगह तबादला होता है। काम से कष्ट होता है। मामा या मौसी से तकलीफ होती है। अदालत का निर्णय विरूद्ध होता है।

शुक्र : शुभ हो या अशुभ कामवासना बहुत बढ़ती है, स्त्री सुख अच्छा मिलता है।

शनि : शुभ हो तो नया व्यवसाय शुरू होता है, शत्रु से उत्पन्न कष्ट दूर होता है, स्वास्थ्य ठीक रहता है, कर्ज चुका दिया जाता है, मित्र मदद करते हैं, तरक्की होती है। अधिकार मिलता है। वरिष्ठों से संघर्ष करके प्रगति होती है। वरिष्ठ प्रभावित होते हैं। अशुभ हो तो रक्तक्षय, से कष्ट होता है, मृत्यु भी संभावित है। असफलता मिलती है। अदालत के निर्णय विरूद्ध होते हैं। कारावास हो सकता है। तरक्की नहीं मिलती। बार–बार तबादले होते हैं। निवास स्थान में परिवर्तन होता है।

लग्न से सप्तम भाव पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य : शुभ हो तो तरक्की होती है, वरिष्ठों पर प्रभाव पड़ता है। इच्छानुसार काम होते हैं। पत्नी स्वस्थ रहती है, स्त्री सुख अच्छा मिलता है। प्रवास की संभावना होती है। अच्छे स्थान पर तबादला होता है। व्यवसाय में लाभ होता है। अशुभ हो तो स्त्री सुख नहीं मिलता, पत्नी व पुत्र बीमार रहते हैं। जातक स्वयं बीमार रहता है। व्यवसाय में नुकसान, वरिष्ठों से झगड़े, खराब जगह तबादले होते हैं।

चंद्र : दो दिन मन को कष्ट ही होता है।

मंगल : शुभ हो तो व्यवसाय, सट्टा, शेयर आदि में फायदा होता है। अदालत के निर्णय अनुकूल होते हैं। वरिष्ठों से संघर्ष करके प्रगति होती है। वरिष्ठ प्रभावित होते हैं। तबादले नहीं होते। अशुभ हो तो चुनाव में बड़ी प्रतिस्पर्धा और बहुत खर्च करना पड़ता है, साझेदारी तथा अदालती मामलों में नुकसान होता है। साझेदारी के व्यवसाय बंद करने पड़ते हैं। स्त्री, पुत्र बीमार रहते हैं। झगड़े मारपीट तक पहुंचते हैं।

बुध : शुभ हो तो व्यापार, शेयर आदि में लाभ होता है। नये व्यवसाय या चालू व्यवसाय बढ़ाने की बात मन में आती रहती है। छात्रों के लिए अच्छी पढ़ाई होने का समय रहता है, मन प्रसन्न रहता है। अच्छे विषयों पर चर्चा, लेखन आदि काम अच्छे होते हैं। अशुभ हो तो बुद्धि में व्यग्रता रहती है। बोलने व लिखने में गलतियां होने से लोगों को गलतफहमी होती है। छात्रों और लेखकों के लिये यह समय बुरा होता है। काम में नुकसान होता है।

गुरु : शुभ हो तो व्यवसाय उत्तम व लाभदायक रहता है। परिवार के लोगों का स्वास्थ्य उत्तम रहता है। चुनाव में जीत होती है। बड़े लोगों से परिचय होता है। काम सफल होते हैं। छात्र परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं। लेखन प्रकाशित होता है। वरिष्ठ प्रसन्न रहते हैं। तरक्की होती है। शेयर या सट्टे में लाभ नहीं होता। संतान की संभावना या जन्म होता है। विवाह होता है। पुत्र आदि के मंगल कार्य होते हैं। विवाह कार्यों में मदद देनी पड़ती है। अदालती मामलों में समझौता होने से फायदा होता है। अशुभ हो तो व्यवसाय

बंद करना पड़ता है, स्त्री, पुत्र बीमार रहते हैं, मित्र धोखा देते हैं। काम असफल होते हैं। परीक्षा, अदालती मामले, तरक्की आदि में विरुद्ध निर्णय होते हैं। कुंडली में द्विभार्या योग हो तो इस समय पत्नी की मृत्यु संभावित होती है।

शुक्र : शुभ हो तो कामवासना कम होती है, स्त्री सुख अच्छा मिलता है। व्यवसाय ठीक चलता है, धन मिलता है। अशुभ हो तो परस्त्री से संपर्क होता है। धन नहीं मिलता, अड़चनें आती है, व्यवसाय मंद होता है।

शनि : शुभ हो तो धन अच्छा मिलता है। विदेश यात्रा की संभावना होती है। व्यवसाय अच्छा चलता है। नया व्यवसाय शुरू हो सकता है। अदालती मामलों में निर्णय अनुकूल होते हैं। जायदाद के पुराने मामलों में लाभ होता है। कुंडली में किसी व्यक्ति का धन मिलने का योग हो तो वह इस समय मिलता है। विधवा से पुनर्विवाह संभव होता है। तरक्की मिलती है। किंतु वरिष्ठो से मतभेद होता है। स्त्री, पुत्रों का स्वास्थ्य सुधारता है। कन्या या पुत्र के विवाह की बात चलती है। अन्य संबंधियों के विवाह कार्यों में मदद देनी पड़ती है। शेयर, सट्टा आदि में लाभ होता है। अशुभ हो तो व्यवसाय, साझेदारी आदि में नुकसान होता है। कुंडली में द्विभार्या योग हो तो पत्नी की मृत्यु की संभावना होती है। संतान का वियोग होता है। अदालत के निर्णय विरुद्ध होते हैं। हाथ में पैसा नहीं रहता। नौकरी छूटने या निलंबित होने का योग होता है। वरिष्ठों से झगड़े होते हैं। काम सफल नहीं होते। छात्र परिक्षा में नहीं बैठ पाते या असफल होते हैं। माता या पिता का वियोग होता है। चुनाव में हार होती है। जायदाद बेचनी पड़ती है, कर्ज होता है, अन्न की मुश्किल पड़ती है। धोखा दिये जाने से नुकसान होता है। जायदाद के मामले अदालत में जाते हैं। धनवान परस्त्री से संपर्क होता है।

लग्न से अष्टम भाव पर ग्रहों का गोचर फल

इस स्थान में शनि और गुरु के अतिरिक्त अन्य ग्रहों के गोचर का महत्त्व नहीं है।

सूर्य : शुभ हो या अशुभ इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। वरिष्ठ लोग बार–बार नाराज होते हैं।

चंद्र : मन प्रसन्न रहता है। दो दिनों में सुख की नींद मिलती है।

मंगल : मलेरिया, टाइफाइड जैसी बीमारियां होती है। अवस्था छोटी हो तो चेचक, खसरा जैसे रोग होते हैं। धन नहीं मिलता, खर्च बहुत होता है। नौकरी में छुट्टी लेकर बैठना पड़ता है। ऊंचाई से गिरने का डर रहता है।

बुध : लिखने में गलतियां होती है। इससे वरिष्ठ अधिकारी से डांट खानी पड़ती है। कागज रखने में अव्यवस्था हो जाती है। बुध शुभ हो तो इसके उल्टे फल मिलेंगे।

गुरु : शुभ हो तो अकस्मात धन मिलता है। किसी की धरोहर मिल जाती है, धरोहर रखनेवाले की अकस्मात मृत्यु हो जाती है इसलिए वह लौटाने की जरूरत नहीं रहती। गुप्त ज्ञान की रुचि रहती है। यह अशुभ हो तो व्यवसाय बंद पड़ता है, कर्ज होता है, खाना मिलने में अड़चन पड़ती है, बहुत कष्ट का समय होता है।

शुक्र : शुभ हो तो स्त्री सुख अच्छा मिलता है। परस्त्री से संपर्क होता है, उसी से धन भी मिलता है। व्यवसाय ठीक चलता है, फायदा होता है। अशुभ हो तो पैसा खर्च होकर भी स्त्री सुख नहीं मिलता, व्यवसाय में लाभ नहीं होता।

शनि : कुंडली में शनि कैसा भी हो, शुभ हो या अशुभ हो, इस स्थान में गोचर काल में अशुभ फल देता है। नौकरी छूटना, कारावास की संभावना, निलंबित होना, व्यवसाय बंद होना, धन हानि, स्त्री/पुत्रों की बीमारियां, विदेश यात्रा, कामों में असफलता, अदालत के मामलों में विरुद्ध निर्णय, लोगों में निंदा, इस प्रकार शारीरिक, आर्थिक, मानसिक सब प्रकार के कष्ट होते हैं। मन विरक्त होने लगता है।

लग्न से नवम भाव पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य : शुभ हो तो व्यवसाय के लिए विदेश यात्रा होता है, व्यवसाय अच्छा चलता है, हाथ में पैसा रहता है, भाग्योदय की आशा रहती है, काम सफल होते हैं। अशुभ हो तो पुत्र या भाई बीमार रहते हैं। धन बहुत खर्च होता है, मन में स्वस्थता नहीं रहती।

चंद्र : मन अस्वस्थ रहता है, हाथ में पैसा नहीं रहता, नींद अच्छी नहीं आती। मन की सुख शांति नहीं रहती।

मंगल : शुभ हो तो व्यवसाय में उत्साह रहता है। थोड़े समय का प्रवास होता है। लोगों पर प्रभाव पड़ता है। अच्छे स्थान पर स्थानांतरण होते हैं। तरक्की होती है। सट्टा, शेयर में लाभ होता है। अशुभ हो तो पुत्र या भाई बीमार रहते हैं। मित्र, भाई धोखा देते हैं। बुरे स्थान में स्थानांतरण होते हैं।

बुध : शुभ हो तो लेखन, प्रकाशन, पुस्तक बिक्री के लिए यह समय अच्छा होता है। अन्य व्यवसाय सामान्यतः ठीक चलते हैं। शेयर व्यापार में लाभ होता है। हाथ में पैसे रहते हैं। अशुभ हो तो बुद्धि अस्थिर होती है, व्यर्थ ही भटकने की इच्छा होती है।

गुरु : शुभ हो तो शिक्षा पूरी होती है। शिक्षा क्षेत्र में या सरकारी नौकरी मिलती है। विवाह तथा संतान प्राप्ति का योग होता है। परीक्षा में सफलता मिलती है। प्रवास, लेखन अच्छा होता है, इनकी कीर्ति बढ़ती है। धन कम मिलता है। भाई या बहन का विवाह होता है। अशुभ हो तो शिक्षा अधूरी रहती है। परीक्षा में सफल नहीं होते। पाठशाला, कॉलेज छोड़ना पड़ता है। बहन को वैधव्य का दुःख सहना पड़ता है या उसकी दुराचार की ओर प्रवृत्ति होती है। संतान के लिए यह समय घातक होता है। बदनामी होने जैसी घटनाएं होती रहती हैं।

शुक्र : कुंडली में शुभ हो या अशुभ इस स्थान में गोचर का मध्यम सुखदायी फल देता है। यह विशेष रूप से कवियों के लिए उत्तम होता है, उन्हें काव्य की प्रेरणा विशेष मिलती है।

शनि : शुभ हो तो कीर्ति बढ़ती है। धन मिलता रहता है। नये उद्योगों के विचार आते रहते हैं। प्रवास होता है। तरक्की मिलती है। अच्छे स्थान पर तबादला होता है। संतान प्राप्त होती है। अशुभ हो तो इसका भााई, बहनों पर बड़ा अशुभ प्रभाव पड़ता है। भाई या बहन का मृत्यु या वैधव्य योग होता है या उनके पालन पोषण की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। संतान की मृत्यु या गर्भपात की संभावना होती है। भाई धोखा देते हैं। व्यवसाय में दिक्कतें आती है। धन की तंगी रहती है। तरक्की रुक जाती है।

लग्न से दशम भाव पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य : शुभ हो तो सम्मान, तरक्की, धन, कामों में सफलता, अच्छी बुद्धि जैसे फल मिलते हैं। अशुभ हो तो असफलता, पिता से झगड़ा, नौकरी में कष्ट, नुकसान होकर भटकना, व्यवसाय में हानि के फल देता है।

चंद्र : दो दिन संतोष से बीतते हैं।

मंगल : शुभ हो तो हर एक काम में सफलता जल्दी मिलती है। किर्ति बढ़ाने वाले काम पूरे होते हैं। व्यापार, सट्टा, शेयर में लाभ होता है। तरक्की होती है। वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न रहते हैं। अपने आधीन नौकरों पर प्रभाव पड़ता है। नये मित्र मिलने से लाभ होता है। उत्साह व सामर्थ्य बढ़ता है। अशुभ हो तो व्यवसाय में नुकसान, वरिष्ठों से झगड़ा, आलस, संतान की बीमारी आदि से कष्ट होता है। काम में मन नहीं लगता।

बुध : शुभ हो तो ऑफिस के काम व्यवस्थित होते हैं। नये लोगों से परिचय होता है। लेखन अच्छा होता है। शेयर में लाभ होता है। अशुभ हो तो लेखन या जोड़–घटा में गलतियां होती है। अधिकारियों से डांट खानी पड़ती है। लेखक व ज्योतिषियों के लिए यह समय ठीक नहीं होता।

गुरु : शुभ हो तो भाग्योदय कराता है। धन मिलता है। तरक्की होती है। व्यापार में बहुत लाभ होता है। बड़े लोगों से परिचय होता है परिवार का सुख ठीक मिलता है। चुनाव में जीत होती है। कीर्ति मिलती है। अच्छे कामों के लिए यात्रा होती है। अदालत के निर्णय अनुकूल होते हैं। अशुभ हो तो व्यापार में नुकसान, पिता या पुत्रों की कठिन बीमारी या मृत्यु, नौकरी में निलंबित होना या तबादला होना, नौकरी छूटने का डर बना रहना आदि अशुभ फल मिलते हैं।

शुक्र : शुभ हो तो मित्र बहुत मिलते हैं, उनसे मदद मिलती है। व्यवसाय ठीक चलता है, धन मिलता है। अशुभ हो तो स्त्री सुख नहीं मिलता व्यवसाय में दिक्क्तें आती है। धन नहीं मिलता।

शनि : शुभ हो तो कीर्ति बढ़ती है। तरक्की, व्यवसाय में लाभ, चुनाव में जीत आदि शुभ फल मिलते हैं। विदेश यात्रा की संभावना होती है। नौकरी या व्यवसाय में परिवर्तन होता है। अदालत के निर्णय अनुकूल होते हैं धन मिलता है। बड़े लोगों से परिचय होता है। सट्टा, शेयर–बाजार में लाभ होता है। अशुभ हो तो बदनामी होती है। बुरी जगह तबादले होते हैं। वरिष्ठों से कहासुनी, तरक्की रूक जाना, परिवार में माता, पिता या संतान की मृत्यु, कर्ज होना, स्त्री, पुत्रों से दूर रहना आदि अशुभ फल मिलते हैं। बेकार रहना पड़ता है। यह समय सब प्रकार से अशुभ जाता है।

लग्न से एकादश भाव पर ग्रहों का गोचर फल

इस स्थान में शनि और गुरु के अतिरिक्त अन्य ग्रहों का गोचर विशेष फलदायक नहीं होता है।

गुरु : शुभ हो तो विवाह, संतान होना या उसकी संभावना होना, व्यवसाय में थोड़ा लाभ, सट्टा, शेयर आदि में लाभ, तरक्की जैसे शुभ फल मिलते हैं। यह गुरु संतति और संपत्ति में से एक का फल देता है। धन मिला तो संतान नहीं होती, संतान हुई तो धन नहीं मिलता। अशुभ हो तो विवाह की बात पक्की नहीं हो

पाती, विवाह हो कर संतान हुई हो तो उसके वियोग की संभावना रहती है। व्यवसाय, सट्टा, शेयर आदि में नुकसान होता है। नौकरी में तरक्की नहीं मिलती।

शनि : शुभ हो तो व्यवसाय ठीक चलता हैं तरक्की होती है। स्थानांतरण के लिए प्रयत्न करने पर सफलता मिलती है। अकस्मात धन मिलता है। अशुभ हो तो संतान की मृत्यु, स्त्री की बीमारी, धन की हानि आदि से कष्ट होता है।

लग्न से द्वादश भाव पर ग्रहों का गोचर फल

इस स्थान में किसी भी ग्रह का गोचर विशेष शुभ नहीं होता। साधारणतया अशुभ फल ही मिलते हैं सूर्य, चंद्र बुध, शुक्र का विशेष परिणाम नहीं होता। मंगल, गुरु व शनि के अशुभ फल तीव्र होते हैं। कुंडली में ये शुभ हो या अशुभ इस स्थान में गोचर के फल शुभ नहीं होते।

मंगल : धन नहीं मिलता, खर्च अधिक होता है, कर्ज होता है। कुंडली में शनि अशुभ हो तथा मंगल से अशुभ योग करता हो तो इस समय कारावास हो सकता है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। कष्ट होता रहता है।

गुरु : व्यवसाय में दिक्कतें आती है। पैसे की तंगी रहती है। मन में स्वस्थता नहीं रहती।

शनि : नौकरी छूटना, तरक्की रुकना, किसी कारण से कारावास, विदेशयात्रा, व्यवसाय बंद होना, पत्नी की मृत्यु जैसे अशुभ फल मिलते हैं। केवल जन्मकुंडली में शनि द्वादश स्थान में और मकर राशि में हो तो इसके कुछ अच्छे फल मिलते हैं। फिर भी पत्नी दूर रहती है, स्त्री सुख में बाधा आती है अन्यथा अशुभ फल ही मिलते हैं।

अध्याय–4
स्थान के अनुसार ग्रह गोचर फल

तनुस्थान व दशम स्थान में ग्रहों के गोचर विशेष महत्व रखते हैं। कुंडली में सूर्य और चंद्र जिस स्थान में हों वहां ग्रहों के भ्रमण भी उन स्थानों के अनुसार फल देते हैं। लग्न और दशम के बाद चतुर्थ और सप्तम स्थानों का महत्त्व है अन्य स्थानों में चंद्र, बुध, शुक्र व मंगल के भ्रमण का कोई विशेष परिणाम देखने में नहीं आता। कुंडली के रिक्त स्थान से ग्रहों के भ्रमण की अपेक्षा जिस स्थान में कोई ग्रह है वहां से गोचर ग्रहों के भ्रमण के परिणाम अधिक दिखते हैं। बुध, शुक्र व सूर्य हमेशा निश्चित क्रम से तथा काफी जल्दी कुंडली के सभी स्थानों से भ्रमण कर लेते हैं। अतः केवल गोचर पद्धति से इनके फलों का विशेष अनुभव नहीं आता। बुध व शुक्र का गोचर जिस स्थान में हो वहां के फल कुछ प्राप्त होते हैं। क्लर्क, कारीगर, लेखक, वक्ता इन लोगों की कुंडली के लग्न या दशम स्थान से बुध का गोचर नये विचार, लेखन कार्य आदि के लिए अच्छा होता है। स्फूर्ति देनेवाले लेख लिखे जाते हैं। शिक्षकों का अध्यापन अच्छा होता है। इससे कम परिणाम सप्तम व चतुर्थ स्थान में मिलते हैं। शुक्र का दशम स्थान व लग्न पर गोचर स्त्रीसुख, अन्य ऐश्वर्य सुख, आराम की दृष्टि से अच्छा होता है। इस समय यात्रा, अधिकारियों से मुलाकात, मित्रों से मिलना आदि में सफलता मिलती है। चंद्र दर्शन के समय (शुक्ल प्रतिपदा व द्वितीया को) चंद्र जिस स्थान में हो वहां के शुभ फल उस महीने में मिलेंगे। इस समय चंद्र जिस राशि में हो वहीं यदि कुंडली में लग्न में है तो उस मास में शरीर सुख, घर का सुख, व्यवसाय में सफलता, लेन देन में लाभ आदि शुभ फल मिलेंगे। इसी प्रकार अन्य स्थानों के बारे में समझना चाहिए। सूर्य कुंडली में पाप ग्रह जिस स्थान में हों वहां से भ्रमण करते समय सात–आठ दिन अशुभ फल देता है। सूर्य का भ्रमण प्रत्येक राशि में हर वर्ष निश्चित तारीखों को होता है। इसलिए हर वर्ष उन तारीखों को अशुभ फल मिलना कुछ लोगों को असंभव प्रतीत होगा। किंतु यह अनुभव में आता है कि प्रत्येक वर्ष में कुछ महीने अशुभ सिद्ध होते हैं, ये दिन वे होते हैं जब सूर्य कुंडली के पाप ग्रहयुक्त स्थानों से गोचर करता है। वार्षिक कुंडली में किसी महीने में अच्छी दिशा हो तो ही सूर्य के इस गोचर के अशुभ परिणाम नहीं होते, अन्यथा अवश्य होते हैं। जन्मकुंडली में सूर्य जिस राशि में हो उस पर गोचरित सूर्य की दृष्टि के समय अर्थात जन्ममास से सातवें महीने में कुछ न कुछ अस्वस्थता, सर्दी, जुकाम, दुर्बलता रहती है। लग्न स्थान दूषित होने पर यह अनुभव अवश्य आता है।

आचार्य वराहमिहिर की बृहत् संहिता के अध्याय 104 में गोचर ग्रहों के फल इस प्रकार बतलाये हैं जन्म राशि से 3, 6, 10 भावों में सूर्य 3, 6 भावों में मंगल, 2, 4, 6, 8 भावों में बुध, 2, 5, 7, 9 स्थानों में गुरु, 6, 7, 10 भावों में शुक्र तथा 3, 6 भावों में शनि का गोचर सिंह के समान भय उत्पन्न करता है।

सूर्य : जन्मस्थ चंद्र की राशि से सूर्य का गोचर मन को खेद, धन हानि, पेट के रोग व यात्रा के फल उत्पन्न करता है। दूसरे स्थान में धन हानि, मन में दुःख, संकट, आंखों के रोग के फल मिलते हैं। तीसरे स्थान में जायदाद मिलना, धन का संग्रह, शुभ कार्य, मन में आनंद, शत्रु का नाश के फल मिलते हैं। चतुर्थ स्थान में रोग व जायदाद के बारे में कष्ट होता है। पंचम स्थान में रोग व शत्रुओं से कष्ट होता है षष्ठ स्थान में स्वास्थ्य लाभ, शोक से छुटकारा, शत्रुनाश के फल मिलते हैं। सप्तम स्थान में प्रवास तथा पेट में कष्ट होता है। अष्टम में रोग, खांसी आदि, पत्नी से झगड़े जैसे फल मिलते हैं। नवम में धन प्राप्ति में अड़चनें, रोग, दीनता, संकट के फल मिलते हैं। दशम स्थान में सब कार्यों में सफलता मिलती है। एकादश में सब कार्य सुगम होते हैं। बारहवें स्थान में कामों में गड़बड़ी पैदा होती है।

जन्म चंद्र से सूर्य के भ्रमण के समय शारीरिक थकावट, धन हानि, चिडचिड़ाहट, रोग, इच्छा के विरूद्ध कष्टदायक प्रवास जैसे फल मिलते हैं। दूसरे स्थान में द्रव्य हानि और सुखनाश होता है। तीसरे स्थान में अधिकार, पद की प्राप्ति, धन, सुख, आरोग्य, शत्रुनाश के फल मिलते हैं। चौथे स्थान में रोग, स्त्री सुख में बाधा के फल होते हैं। पांचवें स्थान में मन में क्षोभ, सुसाध्य काम में बाधाएं आकर वह काम कठिन हो जाना जैसे फल मिलते हैं। छठे स्थान में आरोग्य ठीक रहता है, शत्रु का नाश होता है, दुःख व चिंताएं दूर होती है। सातवें स्थान में पेट में या गुप्त स्थानों में रोग होते हैं, अपमान होता है, कष्टदायक प्रवास होते हैं, आठवें स्थान में मन में भय, रोग, व्यक्तियों से झगड़े होते हैं, राजकीय कष्ट होता है, उष्णता से शरीर कष्ट होता है। नौवें स्थान में भय, अपमान, स्त्री–पुत्रों से वियोग, सब तरह से निराशा के फल मिलते हैं। दसवें स्थान में बड़े काम हाथ में लिये जाते हैं तथा सफलता मिलती है, नया अधिकार और सम्मान मिलता है, धनलाभ व आरोग्य लाभ होता है। ग्यारहवें स्थान के फल दसवें के समान होते है। बारहवें स्थान में दुःख देनेवाली घटनाएं होती है, धनहानि, मित्रों से झगड़ा बुखार से कष्ट होता है।

चंद्र : जन्मस्थ चंद्र राशि से चंद्र का भ्रमण अन्न–वस्त्र अच्छा देता है। धन स्थान में मानहानि, धन की कमी, विघ्नों की उत्पति होती है। तृतीय में वस्त्र, स्त्री सुख व धन मिलता है। चतुर्थ में लोगों का भरोसा नहीं रहता। पंचम में दीनता, रोग, शोक, यात्रा में कष्ट होते हैं। षष्ठ में धन व सुख मिलते हैं। सप्तम में अन्न, धन, वाहन, सम्मान सुख की नींद का लाभ होता है। अष्टम में सर्प आदि से भय होता है। नवम में उदासी, बंधन, मेहनत, पेट में दर्द आदि के कष्ट होते हैं। दशम में सब काम सफल होते हैं। एकादश में निकट संबंधियों से आनंद मिलता है। बारहवें में आय से अधिक खर्च होता है। मदोन्मत्त बैल जैसी विपत्तिकर घटनाएं होती है।

जन्मराशि से चंद्र का भ्रमण भाग्योदय कराता है। दूसरे स्थान में धनहानि, तीसरे में किसी भी कार्य में सफलता, चौथे में भय, पांचवे में दुःख, छठे में आरोग्य, सातवे में सुख, आठवें में प्रतिकूल घटनाएं, नौवे में रोग, दसवे में इच्छित बातों में सफलता, ग्यारहवें में आनंद और बारहवें में खर्च के फल मिलते हैं।

मंगल : जन्म राशि से मंगल का गोचर उपद्रव देता है। दूसरे स्थान से मंगल का गोचर शारीरिक या मन के कष्ट, शत्रुओं का कष्ट सरकारी मामलों में कष्ट, बलवान होने पर भी पित्त रोग से कष्ट, आग व चोरों से कष्ट ये फल मिलते हैं। तीसरे स्थान से मंगल का गोचर से भूख बढ़ती है, तेज बढ़ता है, लोगों

पर हुकूमत चलाता है, धन व ऊनी वस्त्र, खदानों से धातु आदि का लाभ होता हैं चतुर्थ में मंगल के गोचर से बुखार, पेट दर्द, रक्त के रोग, जुल्म से या बुरे लोगों की संगति से नुकसान होता है। पंचम में मंगल के गोचर से लोगों से शत्रुता, रोग, पुत्र आदि से दुःख चंचल बुद्धि से कष्ट होता है। षष्ठ में मंगल के गोचर से शत्रुओं का भय नहीं रहता, झगड़े नहीं होते, धन मिलता है, दूसरों का मुंह नहीं देखना पड़ता। सप्तम में मंगल के गोचर वश पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, स्वयं के आंखों में व पेट में कष्ट रहता है। अष्टम में मंगल के गोचर वश रक्त दूषित होकर फोड़े–फुंसी होते हैं, खर्च बहुत होता है। नवम में मंगल के गोचर वश अपमान, धनहानि, शरीर की अस्वस्थता, धातु क्षय आदि से गति मंद होती है। दशम में मंगल के गोचर वश सब तरह से धन लाभ, ग्यारहवें में मंगल के गोचर वश विजय तथा अधिकार की प्राप्ति एवं बारहवें में मंगल के गोचर वश बहुत खर्च, संकटों से संताप, अपने उच्चता का घमंड, घर में स्त्री का क्रोध, पित्त विकार, आंखों में कष्ट आदि से दुःख होता है।

जन्मराशि में मंगल का परिभ्रमण मन में खेद उत्पन्न करता है, स्वजनों से वियोग, रक्त दूषित होने से रोग, पित्त का कष्ट, उष्णता बढ़ने से शरीर कष्ट होता है, दूसरे स्थान में भय उत्पन्न होता है, कठोर बोलता है, धनहानि होती है। तीसरे स्थान में सब कार्यों में सफलता मिलती है, सुवर्ण या अलंकारों का लाभ होता है। चौथे स्थान में परिस्थिति में उतार चढ़ाव आता है, पेट में रोग होते हैं। पांचवें स्थान में बुखार, अनिष्ठ इच्छाएं, पुत्रों के संबंध में मन में चिंता, स्वजनों से झगड़ा जैसे फल होते हैं। छठे स्थान में शत्रु पराजित होते हैं, रोग दूर होते हैं, धन और सफलता मिलती है। सप्तम स्थान में पत्नी से गलतफहमी के कारण झगड़ा होता है, आंखों के रोग या पेट में तकलीफ होती है। अष्टम में ज्वर, धनहानि, के कष्ट होते हैं। नवम में अपमान, धनहानि, शरीर में दुर्बलता होती है। दशम में व्यवहार बिगड़ता है, किसी काम में प्रयत्न पूरी तरह नहीं कर सकते। ग्यारहवें में धनलाभ, जायदाद में वृद्धि होती है। बारहवें में धनहानि, उष्णता बढ़ने से अस्वस्थता होती है।

बुध : जन्मस्थ चंद्र से बुध के गोचर के समय लोगों की चुगली से कष्ट होता है। सरकारी मामलों में जायदाद नष्ट होकर बंधन योग होता है, लोग दूर रहना चाहते हैं। दूसरे स्थान में बुध के गोचर काल में धन लाभ होता हैं किंतु सम्मान नहीं मिलता। तृतीय में बुध के गोचर काल में मित्र मिलते हैं किंतु राजा व शत्रुओं के भय से, मित्रों से दुराव रहता है, अपना आचरण बिगड़ने से लोगों से दूर रहना चाहते हैं। चतुर्थ में बुध के गोचर काल में रिश्तेदार व परिवार के लोगों में वृद्धि होकर धन लाभ होता है। पंचम में बुध के गोचर से स्त्री–पुत्रों से झगड़ा होता है, स्त्री सुख नहीं मिलता। षष्ठ में बुध के गोचर काल में सौभाग्य, विजय, उन्नति की प्राप्ति होती हैं सप्तम में बुध के गोचर वश कष्ट और असफलता मिलती है। अष्टम से बुध के गोचर काल में पुत्र प्राप्ति, विजय, धन व वस्त्र का लाभ होता है, बुद्धि तेज होती है। नवम में बुध के गोचर वश विघ्न आते हैं। दशम में बुध के गोचर से शत्रु नाश, धन लाभ, सुंदर घर में स्त्री सुख की प्राप्ति होती हैं ग्यारहवें में बुध का गोचर हो तो धन, सुख, स्त्री, पुत्र, मित्र, वाहन आदि के लाभ से संतोष, उत्साह रहता है लोग प्रोत्साहन देते हैं। व्यय स्थान में बुध का गोचर हो तो शत्रुओं से पराजय, रोग, स्त्रीसुख में बाधा आदि से कष्ट होता है।

जन्मराशि में बुध का भ्रमण धनहानि करता है। दूसरे स्थान में धनलाभ, तीसरे में शत्रु से कष्ट, चौथे में बार–बार धनलाभ, पांचवे में स्त्री, पुत्रों से झगड़े, छठे में किसी भी काम में सफलता, सातवें में

गलतफहमी, आठवें में पुत्र प्राप्ति, धन प्राप्ति, नौवे में बाधाएं, दसवें में सब प्रकार से सुख, ग्यारहवें में भाग्योदय, बारहवें में अपमान के डर के फल देता है।

गुरु : जन्म राशि से गुरु के गोचर के समय धन हानि, पद से हटना, कष्ट, बुद्धि में मंदता जैसे फल मिलते हैं। दूसरे स्थान में गुरु का गोचर वश शत्रु नष्ट होकर धन व स्त्री सुख मिलता है। तृतीय में गुरु का गोचर मन में अस्थिरता, कामों में अड़चनें रहती है। चतुर्थ में गुरु का गोचर भाई बंधुओं से कष्ट के कारण घर छोड़ने की इच्छा होती है, मन अशांत रहता है। पंचम में गुरु के गोचर काल में पुत्र प्राप्ति, रिश्तेदारों से मेल, कल्याण होता है, घर, वस्त्र, पशु आदि की प्राप्ति, स्त्री सुख से फल मिलते हैं। षष्ठ में गुरु के गोचर काल में स्त्री के दुर्व्यवहार से झगड़े, असंतोष बने रहते हैं। सप्तम में गुरु के गोचर काल में स्त्री सुख, धन, भोजन, वाहन, बुद्धि में कविता की ओर प्रेरणा आदि का लाभ होता है। अष्टम में गुरु के गोचर काल में बंधन, रोग, शोक, यात्रा में कष्ट, मरण जैसी शारीरिक वेदना होती है। नवम में गुरु के गोचर काल में कुशलता, संतति, लोगों में प्रभाव, धन, स्त्री सुख आदि का लाभ होता है। दशम में गुरु के गोचर काल में स्थान नष्ट होता है, धन हानि, अकल्याण होता है। एकादश में गुरु के गोचर काल में सब शुभ कार्य होते हैं। बारहवें में गुरु के गोचर काल में यात्रा में बाधाएं आती है।

जन्मराशि में गुरु का भ्रमण जन्मभूमि का त्याग करता है, खर्च बहुत होता है, दूसरों को कष्ट देने की प्रवृत्ति रहती है। दूसरे स्थान में बहुत धन मिलता है, कुटुंब का सुख मिलता है, जो कहे वही बात पूरी हो जाती है। तीसरे स्थान में स्थिति बिगड़ती है, मित्रों से वियोग, व्यवसाय में बाधाएं तथा रोगों से कष्ट होता है। चतुर्थ स्थान में स्वजनों की मृत्यु से दुख होता है, अपमान होता है, पशुओं से भय होता है। पंचम स्थान में पुत्र प्राप्ति, अच्छे लोगों से संपर्क, राजदरबार की अनुकूलता होती है। छठे स्थान में स्वजनों और शत्रुओं से कष्ट, रोग से पीड़ा होती है। सप्तम स्थान में अच्छे काम के लिए यात्रा होती है, स्त्री, पुत्रों का सुख मिलता है। अष्टम स्थान में शारीरिक कष्ट, यात्रा में कष्ट, धनहानि, दुर्भाग्य का अनुभव होता है। नवम स्थान में भाग्योदय होता है। दशम स्थान में जायदाद व अधिकार को खतरा पैदा होता है। संतति के बारे में चिंता होती है। ग्यारहवें स्थान में पुत्र प्राप्ति, अधिकार प्राप्ति, सम्मान, कई तरह से लाभ होता है। बारहवें स्थान में जायदाद के संबंध में भय व दु:ख होता है।

गुरु के गोचर का कुछ न कुछ शुभ फल मिलता है। जिस मात्रा में जन्मकुंडली अच्छी हो उसी के अनुसार गुरु के गोचर का फल मिलता है। नवम और दशम स्थान में गुरु का गोचर प्रगति का मौका देता है, इस समय धार्मिक उन्नति, पुण्यकर्म होते हैं। मन की भावनाएं और विकार जागृत होते हैं।

लग्न में गुरु का भ्रमण स्वास्थ्य में सुधार करता है, मन आनंदित रखता है, आशावादी विचार मन में आते हैं, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है, बुद्धि तीव्र होती है।

द्वितीय स्थान में गुरु के गोचर के समय आर्थिक उन्नति होना प्रायः निश्चित है। मासिक आय बढ़ती है तथा स्थायी संपत्ति (जायदाद) में वृद्धि होती है या कर्ज से मुक्ति मिलती है।

तृतीय स्थान में गुरु के गोचर काल में मानसिक उन्नति होती है, आनंदपूर्वक यात्रा होती है, भाईबंधु

और रिश्तेदारों से संबंध दृढ़ और लाभकारी होते हैं। महत्त्वपूर्ण पत्र व्यवहार तथा लेखन व्यवसाय के लिए यह समय अनुकूल रहता है।

चतुर्थ स्थान में गुरु का गोचर कौटुम्बिक सुख देता है, महत्वपूर्ण कामों की समाप्ति इस समय होने पर अनुकूल होती है।

पंचम स्थान में गोचरित गुरु आय बढ़ाता है, धन का सदुपयोग होता है, लेने देने के व्यवहार लाभदायक होते हैं। ऐश्वर्य के सुख और मनोरंजन की दृष्टि से यह समय उत्तम होता है।

षष्ठ स्थान में गोचरित गुरु स्वास्थ्य अच्छा रखता है, सेवक विश्वस्त मिलते हैं, उनसे सुख मिलता है, व्यापार में एजंटो की साख अच्छी रहती है, मामा, फूफा आदि रिश्तेदारों से लाभ होता है, समारोहों का आयोजन सुखकर होता है।

सप्तम स्थान में गोचरित गुरु विवाह, प्रेम संबंध, साझेदारी, कचहरी के काम, यात्रा आदि के लिए अनुकूल होता है, इस समय न्याय के लिए या अच्छे उद्देश्य से किये गये काम सफल होते हैं,

अष्टम स्थान में गोचरित गुरु अध्यात्म वेदांत या दर्शन के अध्ययन में अनुकूल होता है। जन्मकुंडली में अकस्मात लाभ या विरासत से लाभ का योग हो तो वह इसी समय होता है। सत्पुरुषों के लिए इस वर्ष में अंतर्ज्ञानी स्वप्न, भविष्य के ज्ञान के संकेत आदि मिलते हैं। इस समय मृत्यु योग होने पर वह शांतिपूर्वक होता है।

नवम स्थान में गोचरित गुरु मानसिक उन्नति देता है। इस समय प्रवास होते हैं।

दशम स्थान में गुरु के गोचर से इज्जत और अधिकार बढ़ता है। वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न रहते हैं।

एकादश स्थान में गुरु के गोचर से मित्रों से सुख मिलता है, मन शांत और आनंदित रहता है, धर्म के विषय में रुचि दिलाता है, इस समय गुप्त, साहसी काम अच्छी तरह से पूरे होते है, यह समय आर्थिक नुकसान का होता है।

द्वादश भाव में धर्म के प्रति कार्यों में रुचि बढ़ती है।

उपर्युक्त वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि गुरु का गोचर प्रत्येक स्थान में शुभ ही है, प्रत्येक मनुष्य को गुरु हमेशा अनुकूल ही प्रतीत होगा, किंतु उपर्युक्त फल उन्हीं को मिलेंगे जिनकी जन्मकुंडली में गुरु बलवान व शुभ हो। बहुत से लोगों की कुंडलियों में गुरु निष्फल भी होता है। जन्मस्थ गुरु 2, 4, 7, 9, 10, 11 भावों में शुभ राशि में हो तो उसके शुभ फल मिलेंगे। सप्तम में भी गुरु के फल कम ही मिलते हैं। 1, 2, 5, 9, 10 भाव गुरु के लिए उत्तम है। बुद्धिमान व विद्वान लोगों को गुरु के शुभ फल जिस तरह लाभकारी व शुभ प्रतीत होंगे उसी तरह अज्ञानी मंदबुद्धि लोगों को नहीं प्रतीत होते। धन धनवान के पास जल्दी जाता है उसी प्रकार ग्रहों के फल भी भाग्यवान लोगों के जीवन में अधिक प्रकट होते हैं।

सूर्य और चंद्र से गुरु के भ्रमण का शुभ फल प्रायः प्रत्येक मनुष्य को अवश्य अनुभव में आता है। इस समय आर्थिक स्थिति में सुधार के अवसर आते हैं, उनका उपयोग किया तो स्थिति अच्छी हो

जाती है। गुरु प्रत्येक स्थान में एक वर्ष रहता है। जन्मस्थ रवि के और चंद्र के अंशों पर से गुरु का गोचर जिस महीने में होगा वे ध्यान में रखने योग्य दिन होंगे। यदि जन्मकुंडली में रवि या चंद्र की गुरु पर शुभ दृष्टि हो तो गोचर गुरु के शुभ फल विशेष रुप से मिलते हैं।

शुक्र : जन्म राशि से शुक्र के गोचर काल में के समय श्रृंगार, विलास, भोजन, बिस्तर, स्त्री आदि का उत्तम सुख मिलता है। दूसरे स्थान शुक्र के गोचर काल में स्त्री, पुत्र, धन, धान्य, राजमान्यता, परिवार, आदि का सुख मिलता है, हितकारी कार्य होते हैं। तीसरे स्थान में शुक्र के गोचर काल में धन, मान, पुत्र, वस्त्र, शत्रुनाश आदि का लाभ होता है। चतुर्थ में शुक्र के गोचर काल में अच्छे मित्र मिलते हैं, शक्ति बढ़ती है। पंचम में शुक्र के गोचर काल में संतोष मिलता है, संबंधियों से मुलाकातें होती हैं, पुत्र धन और मित्रों की मदद की प्राप्ति होती है। किंतु शत्रुओं का कष्ट कम नहीं होता। षष्ठ में शुक्र के गोचर काल में रोग, संताप, पराभव होते हैं। सप्तम में शुक्र के गोचर काल में स्त्री के विषय में अशुभ फल मिलता है। अष्टम में शुक्र के गोचर काल में वस्त्र व घर का लाभ होता है, संपन्न स्त्री का लाभ होता है। नवम में शुक्र के गोचर काल में धर्म कार्यों का लाभ, स्त्री सुख, धन तथा वस्त्रों का लाभ प्राप्त होता है। दशम में शुक्र के गोचर काल में अपमान, झगड़े, लोगों द्वारा तीखी बातें सुनना आदि कष्ट होता है। एकादश में शुक्र के गोचर काल में मित्र मिलते हैं, धन मिलता है, अन्न दान करते हैं। द्वादश में शुक्र के गोचर काल में धन व वस्त्रों का लाभ होता है किंतु यदि शुक्र स्तंभित हो तो ये शुभ फल नहीं मिलते।

जन्मराशि से शुक्र का भ्रमण सब प्रकार का सुख देता है, दूसरे स्थान में धनलाभ, तीसरे स्थान में भग्यवृद्धि, चौथे स्थान में मित्रलाभ व सुख पांचवें स्थान में संतति प्राप्ति, छठे स्थान में दुराचरण, सातवें में पत्नी को कष्ट, आठवें में धनलाभ, नौवें में सुख, दसवें में झगड़े, ग्यारहवें में सुरक्षा, बारहवें में धनलाभ के फल मिलते हैं।

शनि : जन्म राशि से शनि का गोचर विष, आग, स्वजनों का वियोग, बंधन आदि कष्ट देता है, यह मृत्यु भी करा सकता है। विदेश जाना पड़ता है, मित्रों की सलाह से लड़कों से शत्रुता होती है, धन नष्ट होकर भटकना या भीख मांगना पड़ता हैं दूसरे स्थान में शनि का गोचर काल में सुख व शरीर की शक्ति नष्ट होती है अपने स्वाभाविक गुणों के बल पर धन मिला भी तो वह टिक नहीं पाता। तीसरे स्थान में शनि का गोचर काल में धन मिलता है, नौकर–चाकर रहने से आराम मिलता है, घर तथा संपत्ति मिलती है, सुख व आरोग्य मिलता है, स्वयं डरपोक हो तो भी अपने वीर मित्रों से शत्रुओं को दंड देता है। चतुर्थ में शनि का गोचर काल में मित्र, धन व पत्नी का वियोग होता है। पंचम में शनि का गोचर काल में धन व पुत्र का वियोग होकर कष्ट होता हैं षष्ट में शनि का गोचर काल में शत्रु व रोग नष्ट होते हैं, स्त्री सुख मिलता है। सप्तम में शनि का गोचर काल में व्यर्थ भटकना पड़ता है। अष्टम में शनि का गोचर काल में स्त्री व पुत्रों का वियोग होता है, दीनता प्राप्त होती है। नवम में शनि का गोचर काल में शत्रुता बंधन, हृदय रोग से कष्ट होता है, दीनता प्राप्त होती है। कोई भी व्यवस्थित कार्य नहीं हो सकता। दशम में शनि का गोचर काल में अच्छे कार्य होते हैं, किंतु धन कीर्ति व ज्ञान की हानि होती है। एकादश में शनि का गोचर काल में बहुत स्त्री व धन का लाभ होता है। द्वादश में शनि का गोचर काल में बहुत प्रकार से शोक होता है।

जन्मराशि से शनि का भ्रमण शरीर में रोग उत्पन्न करता है, बहुत से लोगों को मृत्यु देखनी पड़ती है। दूसरे स्थान में धनहानि व संतति हानि होती है। तीसरे स्थान में अधिकार या व्यवसाय में तरक्की होती है, सेवकजन मिलते हैं, धनलाभ होता है। चौथे स्थान में स्वजनों को या स्त्री को बहुत कष्ट होता है (मृत्यु भी संभव है) तथा धनहानि होती है। पंचम स्थान में धनहानि, संतति हानि होकर मन में संदेह बना रहता है। छठे स्थान में सब तरह से सुख मिलता है। सातवें में पत्नी को बहुत कष्ट होता है, प्रवास व भय बहुत होता है। अष्टम में संतति, संपत्ति, मित्र, पशु की हानि होती है, रोग होते हैं। नवम से दरिद्रता, अच्छे कामों में रुकावटे, बड़े बूढ़ों का वियोग के फल मिलते हैं। दशम में बुरे काम होते हैं, अपमान, रोग से कष्ट होता है। ग्यारहवें में सब प्रकार से सुख, संपत्ति, सम्मान मिलता है। व्यय स्थान में निरर्थक उद्योगों से कष्ट, शत्रुओं के कारण धन हानि, स्त्री–पुत्रों की बीमारी के कष्ट होते हैं।

लग्न स्थान में शनि के गोचर के समय निराश प्रवृत्ति होती है, उदासीनता रहती है। जन्मकुंडली अच्छी हो और उसमें शनि अनुकूल हो तो इस समय नये कामों को स्वीकार करने और उन्हें पूरा करने की चिंता रहती है। इस समय शांत स्वभाव, दक्षता, दूरदर्शी दृष्टि की आवश्यकता होती है।

द्वितीय स्थान में शनि के गोचर से आय कम होती है। जन्मकुंडली में आर्थिक संकट का योग हो तो इस समय पैसे का बड़ा संकट उत्पन्न होता है, कर्ज लेना पड़ता है खर्च में बहुत ध्यान रखना पड़ता है, लेनदेन में नुकसान होता है, उदारता बरतना संभव नहीं होता।

तृतीय स्थान में शनि के गोचर काल में प्रवास में निराशा और अड़चनें पैदा करता है, भाई बंधुओं से झगड़ा होता है, जन्मस्थ शनि शुभ हो तो इस समय मन में गंभीर विचार आते हैं, शास्त्रीय विषयों में रुचि रहती है, साहित्य सेवा होती है, गूढ़ शास्त्रों का अध्ययन होता है।

चतुर्थ स्थान में गोचरित शनि घर में चिंता उत्पन्न करता है, परिवार में किसी की मृत्यु होती है, अनपेक्षित व अनिष्ट परिवर्तन होते हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि बलवान हो तो इस समय विश्राम की जरूरत होती है। वृद्ध आयु हो तो कारोबार समेटने की चिंता करनी चाहिए तथा कुछ परलोक की चिंता करनी चाहिए। जन्मतः शनि या मंगल चतुर्थ भाव में हो तो यहां शनि का गोचर बहुत कष्ट देता है। माता के जीवन को खतरा रहता है। स्थायी संपत्ति (जायदाद) के बारे में झगड़े होते हैं। जन्मस्थ सूर्य से शनि का भ्रमण व्यवसाय में असफलता देता है। जन्मस्थ शुक्र से शनि का भ्रमण लाभदायक होता है।

पंचम स्थान में शनि का गोचर संतति पर प्रभाव डालता है। इस समय संतान उत्पत्ति हो सकती है। यहां मेष, कर्क, सिंह या वृश्चिक राशि हो तो इस समय व्यापार में नुकसान होता है। व्यापारियों को इस समय सट्टा नहीं खेलना चाहिए। तुला, मकर व कुंभ राशियां शनि के अनुकूल होती हैं।

षष्ठ स्थान में शनि के गोचर काल में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, नौकरों से कष्ट होता है। जन्मकुंडली में षष्ठ स्थान दूषित हो तो इस समय जहरीलें जानवरों से या बुखार से कष्ट होता है। जन्मकुंडली का षष्ठ स्थान दुर्बल होने पर इस समय स्वास्थ्य के लिए जलवायु बदल कर दुसरे स्थान में रहना अच्छा होता है।

सप्तम स्थान में शनि का गोचर स्त्री सुख के लिए शुभ नहीं होता। कुंडली में इस स्थान में मंगल, सूर्य, राहु हो तो पत्नी को शरीर में कष्ट रहता है। कुंडली में द्विभार्या योग हो तो उस का फल इस समय मिलकर पहली पत्नी का अंत हो सकता है। मेष, कर्क, सिंह व वृश्चिक राशि यहां हो तो शनि का गोचर अनिष्ट होगा, अदालती मामलों में नुकसान होगा।

अष्टम स्थान में शनि का गोचर साझेदारी में नुकसान कराता है, स्वास्थ्य बिगड़ता है।

नवम स्थान में शनि के गोचर से धर्म में श्रद्धा बढ़ती है, महत्वाकांक्षा बढ़ती है, तीर्थयात्रा होती हैं यहां शनि की शत्रु राशि हो तो बदनामी होगी, कानूनी कामों में कठिनाई होगी, साथियों से झगड़े होंगे।

दशम स्थान में शनि का गोचर शत्रु राशि में या शत्रु ग्रह पर से हो तो व्यवसाय में गहरा धक्का लगता है, बेइज्जती और बदनामी होती है, साख नष्ट हो कर प्रतिष्ठा कम होती है। नौकरी पेशा लोगों पर वरिष्ठ अधिकारी नाराज होते हैं। जन्मकुंडली में दशम में मंगल, शनि वक्री हों अनिष्ट होगा। यहां वृषभ, मिथुन, तुला, मकर या कुंभ राशि हो तो इस समय प्रतिष्ठा बढ़ती है, व्यवसाय में तरक्की होती है।

एकादश स्थान में शनि का गोचर आशाओं और इच्छाओं को दूर करता हैं शास्त्रीय विषयों के अध्ययन और खोजबीन के लिए अनुकूल समय रहता है। यहां जन्मकुंडली में मंगल हो तो शनि के गोचर के समय मित्र या परिचितों के विश्वासघात से नुकसान होगा। स्वगृही या मित्रग्रह की राशि में यह गोचर हो तो शुभ फल मिलेगा।

द्वादश स्थान में शनि का गोचर हमेशा अशुभ होता है, दुःखदायक घटनाएं होती है। जन्मकुंडली में मंगल या शनि इस स्थान में हो तो इस समय राजकीय संकट से कारावास होता हैं खर्च अधिक होता है। कर्ज लेना पड़ता है।

राहु : जन्मराशि में भ्रमण करने वाला राहु स्वास्थ्य बिगाड़ता है, दूसरे स्थान में धनहानि, तीसरे में सुख, चौथे में दुःख, पांचवें में धनहानि, छठे में सुख, सातवें में नुकसान, आठवें में मृत्यु, या मृत्यु तुल्य कष्ट, नौवें में हानि, दसवें में लाभ, ग्यारहवें में भाग्योदय तथा बारहवें में खर्च जैसी फल देता है।

विशेष फल प्राप्ति का समय

रवि और मंगल पहले द्रेष्काण अर्थात 0^0 से 10^0 के बीच में अपना फल विशेष रूप से देते हैं, गुरु और शुक्र दूसरे द्रेष्काण अर्थात् 10^0 से 20^0 के मध्य में अपना फल देते हैं, चंद्र और शनि अंतिम द्रेष्काण अर्थात 20^0 से 30^0 तक में अपना विशेष फल देते हैं, बुध और राहु का फल राशि के सभी अंशों में अपना फल देते हैं।

अध्याय-5

जन्मस्थ ग्रहों पर ग्रहों का गोचर फल

सूर्य का जन्मस्थ ग्रहों से गोचर फल

सूर्य से या उससे सप्तम स्थान से सूर्य का गोचर कष्ट देता है। धन मिलता है किंतु खर्च हो जाता है, टिकता नहीं। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। उष्णता या पित्त के विकार होते हैं। व्यवसाय बंद हो जाता है।

चंद्र से या उससे सप्तम स्थान से यदि सूर्य का गोचर हो और सूर्य अशुभ स्थान का स्वामी हो तो इस समय मन को कष्ट होता है, धन खर्च होता है, व्यवसाय में कष्ट होता है, लाभ कम होता है। शुभ स्थान का स्वामी हो तो व्यापार में लाभ होता है तथा मन प्रसन्न रहता है।

मंगल से या उससे सप्तम स्थान से सूर्य के गोचर वश झूठ बोलना, झुठे व्यवहार, लोगों में गलतफहमी फैलाना आदि से कष्ट होता है। धन नहीं मिलता, कर्ज होता है। टाइफाइड या मलेरिया होता है। कुछ दिन व्यवसाय बंद रहता है। शुभ हो तो व्यवसाय में उत्साह व शक्ति बढ़ती है। कर्ज चुक जाता है।

बुध से या उससे सप्तम भाव सूर्य का गोचर हो तो बुद्धि तेज होती है, साधारणतः गलतियां नहीं होती, काम जल्दी हो जाते हैं।

गुरु से या उससे सप्तम से सूर्य का गोचर काल का समय शुभ नहीं होता। घर के लोग बीमार रहते हैं, धनहानि होती है। व्यापार ठीक नहीं चलता। नौकरी में कष्ट होता है।

शुक्र से या उससे सप्तम भाव से सूर्य के गोचर काल में स्त्री सुख नहीं मिलता, बाधाएं आती है। मेहमान आते हैं।

शनि से या उससे सप्तम भाव से गोचर काल का समय कष्टपूर्ण होता है। प्रवास, आर्थिक अड़चनें, असफलता, मन की अस्वस्थता, कुछ शारीरिक अस्वस्थता आदि से कष्ट होता है।

चंद्र का जन्मस्थ ग्रहों से गोचर फल

सूर्य से या उसके सप्तम से चंद्र का गोचर हो और कुंडली में चंद्र अशुभ स्थान में हो तो इस समय मन अस्वस्थ रहता है, धन नहीं मिलता, काम नहीं होते।

चंद्र से या उसके सप्तम से चंद्र का गोचर हो और चंद्र शुभ हो तो ऐश, आराम में दो दिन बीतते हैं, खुशी के समाचार मिलते हैं। अशुभ हो तो समाधान नहीं रहता।

मंगल से या उसके सप्तम से चंद्र का गोचर हो तो कहासुनी, मारपीट की घटनाएं होती है। दिमाग गरम रहता है। धन मिलता है, काम होते हैं। खर्च काफी होता है।

बुध से या उसके सप्तम से चंद्र का गोचर हो तो मन अस्वस्थ रहता है, लिखने में गलतियां होती है, आशा के विपरीत समाचार मिलते हैं।

गुरु से या उसके सप्तम से चंद्र का गोचर हो तो स्त्री सुख मिलता है, मन प्रसन्न रहता है, ऐश आराम में दो दिन बीतते हैं। धन मिलता है।

शनि से या उसके सप्तम से चंद्र का गोचर हो तो धन मिलता है। किंतु सब खर्च हो कर बाकी कुछ नहीं बचता, कर्ज भी होता है। मन अस्वस्थ रहता है। कहासुनी की घटनाएं होती है। सभी काम असफल होते हैं।

मंगल का जन्मस्थ ग्रहों से गोचर फल

जन्मस्थ रवि से मंगल का गोचर जिस स्थान में हो उसके अनुसार फल मिलते हैं।

लग्न में हों तो शरीर में गर्मी बढ़ेगी, उत्साह बढ़ेगा, नये काम करने की इच्छा होगी। धन स्थान में हो तो आर्थिक व्यवहार बढ़ेंगे, आंखों में कष्ट होगा। तृतीय स्थान में चर राशि हो तथा मंगल का गोचर हो तो प्रवास होगा। चतुर्थ में मानसिक चिंता रहेगीं। पंचम में रवि शुक्र की युति हो तथा उस पर मंगल का गोचर गर्भ धारण की संभावना होगी। षष्ठ में शत्रु ग्रह की राशि में रवि हो तो मंगल का उस पर गोचर रोग उत्पन्न करेगा। इसी प्रकार अन्य स्थानों का विचार करना चाहिए। जिनकी कुंडली में मंगल शुभ हो उन्हें ये शुभ फल मिलेंगे। जो मंगल के कारकत्व के व्यवसाय करते हैं उन्हें लाभ होगा। अन्य लोगों के लिए जन्मस्थ रवि पर गोचर का मंगल अशुभ होता है, इस समय रोग होते हैं, झगड़े होते हैं, दुर्घटनाएं होती है। रवि धनु राशि में हो तो यह संभावना विशेष रूप से होती है।

जन्मस्थ बुध से मंगल के गोचर के दौरान साधारण अच्छे फल मिलते हैं। मन उद्योगप्रिय होता है। कल्पनाशक्ति बढ़ती है। किंतु दूसरों की आलोचना करने की प्रवृत्ति, बोलने या लिखने के कारण लोगों से शत्रुता हो जाती है या कोर्ट कचहरी के मामले उठ खड़े होते हैं। जन्मस्थ बुध यदि मेष, कर्क, वृश्चिक या धनु या मीन में हो तो इस समय मानसिक कष्ट या आधे सिर में दर्द होता है।

जन्मस्थ चंद्र से मंगल क गोचर के दौरान स्त्रियों से कलह, बिना विचारे काम होते हैं। जन्मकुंडली में चंद्र बलवान हो तो इस समय उद्योग व्यवसाय में सफलता मिलती है, यात्रा होती है।

जन्मस्थ शुक्र से मंगल का गोचर साधारणतः अच्छा होता है सामाजिक सम्मान या घर का सुख अच्छा मिलता है। जन्मकुंडली में शुक्र अशुभ हो तो इस समय नुकसान होगा।

जन्मस्थ मंगल से मंगल का गोचर जिस स्थान में हो तो उस भाव के अनुसार फल मिलते हैं।

जन्मस्थ गुरु से मंगल का गोचर काफी अच्छा होता है। उद्योग व्यवसाय में सफलता या नौकरी में तरक्की मिलती है। जन्मकुंडली में गुरु शत्रु ग्रह की राशि में या नीच राशि में हो तो अदालती मामलों में या साझेदारी में नुकसान होगा। यह बारहवें स्थान में हो तो आर्थिक नुकसान तथा छठवें स्थान में हो तो शत्रुओं से कष्ट होगा।

जन्मस्थ शनि से मंगल का गोचर हमेशा अशुभ फल देता है। दुर्घटना, व्यापार में असफलता, वरिष्ठ अधिकारियों या बड़े रिश्तेदारों में झगड़ा, रोग, पिता के स्वास्थ्य में कमी जैसे फल मिलते हैं।

सूर्य से या उसके सप्तम से मंगल का गोचर हो तो टाइफाइड, मलेरिया, बवासीर आदि रोगों से कष्ट होता है। आमदनी से खर्च अधिक होता है। वयवसाय कुछ समय क लिए बंद हो जाता है। लोगों की तीखी बातें सुननी पडती हैं। आफिस में वरिष्ठ अधिकारी कष्ट देते हैं। स्थानांतरण होने की संभावना होती है। सट्टा, शेयर में नुकसान होता है।

चंद्र से या उसके सप्तम से मंगल के गोचर फल सूर्य के समान ही फल मिलते हें। किंतु कुंडली में यदि सूर्य व मंगल दोनों ग्रह शुभ हो तो कुछ शुभ फल भी पाये जाते हैं, उत्साह व शक्ति बढ़ती है, काम जल्दी पूरे होते हैं। साहस से व्यवसाय बढ़ता है तथा लाभ होता है। वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न रहते हैं। सट्टा, शेयर में लाभ होता है।

मंगल से या उसके सप्तम से कुंडली में मंगल 2, 4, 5, 7, 8, 11, 12 भावों में से किसी स्थान में हो तो इस गोचर काल में बहुत अशुभ फल मिलते हैं। धन हानि, कर्ज, व्यवसाय में नुकसान, सट्टा, शेयर में हानि, गर्भपात, संतान को कष्ट, अस्वस्थता आदि से तकलीफ होती है। अन्य स्थानों में मंगल हो तो उन स्थानों के अनुरूप कुछ शुभ फल मिलते हैं। सूर्य, चंद्र और मंगल पर मंगल का गोचर छोटे बच्चों की कुंडली में हो तो उस समय चेचक, खसरा, फोड़े, फुंसी, सूखा, अतिसार, टाइफाइड आदि से कष्ट होता है।

बुध से या उसके सप्तम से मंगल का गोचर हो तो झूठी गवाह देने या जाली हस्ताक्षर करने से, दस्तावेज चुराये जाने या गुम जाने से तकलीफ होती है। लोग निंदा करते हैं। लिखने–पढ़ने में गलतियां होने से वरिष्ठ अधिकारी नाराज होते हैं।

गुरु से या उसके सप्तम से मंगल का गोचर अधिकार बढ़ाता है, तरक्की देता है। सट्टा, शेयर में लाभ होता है। संतान को कष्ट होता है।

शुक्र से विषयवासना बढ़ती है, स्त्री सुख अच्छा मिलता है। इसके सप्तम से पत्नी के बीमार रहने या मायके जाने से स्त्री सुख में बाधा आती है। जितनी आमदनी हो उतना खर्च होने से धन बचता नहीं है।

शनि से या उसके सप्तम से मंगल का गोचर हो और कुंडली में शनि 3, 4, 7, 8, 10, 12 से किसी स्थान में अशुभ हो तो मंगल के गोचर के फल बहुत अशुभ मिलते हैं। धन हानि, असफलता, आमदनी से बहुत अधिक खर्च, बेइज्जती, फौजदारी मामले, चोरी, तरक्की रुक जाना, बुरी जगह तबादला होना, पत्नी की बीमारी आदि से कष्ट होता है। यदि कुंडली में शनि और मंगल दोनों शुभ हों तो विशेष नुकसान नहीं होता और यह समय कुछ आराम से बीतता है।

बुध का जन्मस्थ ग्रहों से गोचर फल

बुध का गोचर मंगल व शनि पर से ही कुछ महत्व का होता है, अन्य ग्रहों पर इसके भ्रमण के विशेष फल अनुभव में नहीं आते। मंगल व शनि पर से या इनके सप्तम से बुध के गोचर के समय बुद्धि व्यग्र रहती है, अपनी वस्तुएं कहीं भूल आने से नुकसान होता है। लिखने में गलतियां होती हैं। दस्तावेज व गवाहियां झूठी सिद्ध होने से कष्ट होता है। मन अस्वस्थ रहता है। लोगों से कहासुनी या समाचार पत्रों में उल्टे सीधे झगड़े होते हैं। लेखन गंदा होता है। शिक्षक, प्राध्यापक, हिसाब जांचने वाले अधिकारी, क्लर्क आदि लोगों के लिए यह समय अशुभ होता है। प्रवास होता है।

गुरु का जन्मस्थ ग्रहों से गोचर फल

जन्मस्थ रवि से गुरु का गोचर आर्थिक उन्नति कराता है, सब कार्यों में सफलता मिलती है, अफसरों की मेहरबानी रहती है, उद्योग धंधे में तरक्की होती है, उम्र में बड़े संबंधियों से लाभ होता है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

जन्मस्थ चंद्र से गुरु का गोचर सामाजिक और पारिवारिक सुख देता है, सार्वजनिक कामों में सफलता और सम्मान मिलते हैं। स्त्री धन मिल सकता है। जन्मकुंडली में योग हो तो इस समय सुखकर प्रवास होता है।

जन्मस्थ बुध से गुरु के गोचर के समय परीक्षा में तथा लेखन व्यवसाय में सफलता मिलती है। दस्तावेज, प्रमाणपत्र आदि के व्यवहार अच्छे होते हैं। मन की चिंताएं दूर होकर शांति मिलती है।

जन्मस्थ शुक्र से गुरु का गोचर होते समय स्त्री सुख अच्छा मिलता है। स्नेह बढ़ाने तथा ललित कलाओं का अध्ययन करने के लिए अनुकूलता रहती है, नाटक, सिनेमा, सर्कस आदि मनोरंजन की संस्थाएं इस समय स्थापित हो तो सफलता प्राप्त होती है।

जन्मस्थ मंगल से गुरु का गोचर व्यवसाय में तरक्की कराता है। बहुत काम मिलते हैं। व्यापार में लाभ होता है। यह गोचर लग्न, तृतीय, सप्तम या नवम स्थानों में हो तो नौकरी पेशा लोगों का स्थानांतरण होता है। व्यापारियों को काम के लिए प्रवास करना होता है। जन्मस्थ मंगल नीच राशि में या पाप ग्रह से दृष्ट हो तथा मंगल का गोचर हो तो इस समय आर्थिक नुकसान होता है। खर्च अधिक होता है।

जन्मस्थ शनि से गुरु का गोचर होते समय परिवार के बड़े लोगों से, वरिष्ठ अधिकारियों से लाभ होता है। जन्मस्थ शनि बलवान हो तो इस समय स्थायी संपत्ति (जमीन–जायदाद) मिलने की संभावना होती है।

(गुरु के सभी शुभ फल नहीं मिलते। जन्मस्थ गुरु व अन्य ग्रह बलवान हो तो ही ये फल मिलेंगे।)

सूर्य से या उसके सप्तम से गुरु का गोचर हो और कुंडली में सूर्य और गुरु 1, 2, 3, 4, 7, 8, 12 भावों में से किसी स्थान में हो तो इस समय अशुभ फल बहुत मिलते हैं। कठिन बीमारी तथा मृत्यु तक की संभावना होती है व्यवसाय बंद पड़ना, धन हानि, नौकरी छूटना, निलंबन होना, अपमान,

भाईयों में बटवारा, अदालत के निर्णय विरूद्ध होना, पिता की बीमारी या मृत्यु आदि अशुभ फल मिलते हैं। सूर्य 5, 6, 9, 10, 11 इन स्थानों में हो तथा यहां गुरु का गोचर कुछ सुखदायक होता है।

चंद्र से या उसके सप्तम से बुध का गोचर हो और कुंडली में चंद्र 3, 6, 7, 8, 11, 12 इन स्थानों में हो तो इस गोचर के समय बहुत अशुभ फल मिलते हैं। माता की बीमारी या मृत्यु, पिता का वियोग, व्यवसाय बंद होना, कुछ समय के लिए कार्य नाश, धनहानि, कर्ज होना संतान का वियोग, स्वयं की लंबी बीमारी, कष्टदायक प्रवास, नौकरी में निलंबन होना आदि से तकलीफ होती है। चंद्र 1, 2, 4, 5, 9, 10 भावों में हो तो इन फलों में सौम्यता आती है।

मंगल से या उसके सप्तम से बुध का गोचर हो और कुंडली में मंगल व गुरु दोनों शुभ हो तो इस समय अधिकार बढ़ता है। तरक्की होती है। वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न रहते हैं। उत्साह व शक्ति बढ़ती है। स्वयं का और स्त्री, पुत्रों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। सट्टा, शेयर में लाभ, अच्छे स्थान में तबादला होता है। कुंडली में मंगल व गुरु अशुभ हो तो गर्भपात, संतान की मृत्यु, अधिकार कम होना, तरक्की रुकना, अधिकारियों में गलतफहमी, व्यापार में नुकसान, संचित पैसा खर्च हो जाना, कर्ज होना आदि अशुभ फल मिलते हैं।

बुध से या उसके सप्तम से मंगल व गुरु ग्रह शुभ हो तो बुद्धि स्थिर व मन शांत रहता है, न्याय, अन्याय का निर्णय ठीक हो सकता है। लेखन अच्छा होता है, दस्तावेज ठीक रहते हैं। यदि दोनों अशुभ हों तो घर, जायदाद, खेती आदि के दस्तावेजों में कुछ धोखाघड़ी से नुकसान होता है।

गुरु से या उसके सप्तम से गुरु का गोचर हो और कुंडली में गुरु 3, 6, 7, 8, 12 भावों में हों तो भाग्य में कमी की दशा हाती है। धन हानि, व्यवसाय बंद होना, दरिद्र हो जाना, व्यर्थ भटकना, अपमान, कर्ज, स्त्री, पुत्रों का विरोध ये अशुभ फल मिलते हैं। शुभ स्थान में हो तो ये फल सौम्य हो जाते हैं।

शुक्र से या उसके सप्तम से गुरु का गोचर हो और कुंडली में शुक्र 1, 3, 6, 7, 8, 12 भावों में से किसी स्थान में हो तो इस भ्रमण के समय झगड़े, बैर बढ़ना, जिद्द से झगड़ा करना, अदालत के निर्णय विरूद्ध होना, बहुत धन हानि, अपना कमाया हुआ तथा पूर्वार्जित धन भी नष्ट होना, कर्ज होना, बुरी आदतें लगना, व्यवसाय बंद पड़ना, बेइज्जती, किसी से मदद न मिलना, गांव छोड़ना, स्त्री/पुत्रों का वियोग, बेरोजगारी, अदालती मामलों में फंसना, चिंता, मन की अस्वस्थता, स्त्री/पुत्रों तथा निकट संबंधियों का विरोध, आशा इच्छा समाप्त हो जाना, नौकरी में निलंबन होना, रिश्वत खाने के आरोप, समय से पहले ही पेंशन लेने से कष्ट आदि अशुभ फल मिलते हैं। यहां स्त्री/पुत्रों के वियोग होने पर शेष अशुभ फल शुभ हो जाते हैं। शुक्र व गुरु दोनों शुभ हो तो शुभ फल मिलते हैं।

शनि से या उसके सप्तम से गुरु का गोचर हो और कुंडली में शनि 1, 3, 5, 7, 10, 12 इनमें से किसी स्थान में तथा शुभ हो तो नष्ट हुआ धन वापस मिलता है, अदालत के निर्णय अनुकूल होते

हैं, पुराने दस्तावेज मिलने से लाभ होता है। संतान होती है, किंतु दुर्बल तथा बहुत रोने से कष्ट देनेवाली होती है। नौकरी या व्यवसाय में परिवर्तन होने की संभावना रहती है। शनि जिस स्थान में हो उस स्थान के फल प्राप्त हाते हैं। कुंडली में 2, 4, 6, 8, 9, 11 भावों में से कहीं शनि हो तो इस गोचर के समय आर्थिक स्थिति बिगड़ती है, संतान का वियोग होता है, व्यवसाय ठीक नहीं चलता, उतार चढ़ाव आते रहते हैं, नौकरी में भी अस्थिरता रहती है।

शुक्र का जन्मस्थ ग्रहों से गोचर फल

कुंडली में शुक्र 3, 6, 7, 8, 10 भावों में से किसी स्थान में हो तथा शुक्र का गोचर इन भावों में हो तो सुखदायक नहीं होता। मंगल व चंद्र के अतिरिक्त अन्य ग्रहों पर इसके गोचर के विशेष फल नहीं मिलते। 2, 4, 5, 1, 9, 12 भावों में से किसी स्थान में शुक्र हो तो शुक्र का मंगल व चंद्र पर से गोचर शुभ होता है।

चंद्र से या उसके सप्तम से शुक्र का गोचर हो और शुक्र शुभ हो तो इस समय संगीत, नृत्य की रुचि होती है, खाना, पीना, कपड़े अच्छे मिलते हैं। मित्र मदद करते हैं। व्यवसाय करने की इच्छा होती है। स्त्री सुख अच्छा मिलता है। नाटक, सिनेमा में रुचि रहती है। स्वयं नट बनने की इच्छा होती है। ऐश आराम की प्रवृत्ति रहती है तथा उसके लिए साधन भी मिलते हैं, कामुकता बढ़ती है। अशुभ हो तो स्त्री की बीमारी, मायके जाना या झगड़े होना, आदि से स्त्री सुख नहीं मिलता। किसी कारण से व्यवसाय बंद होता है।

मंगल से या उसके सप्तम से शुक्र का गोचर हो तथा कुंडली में शुक्र शुभ हो तो इसके फल मंगल के शुक्र पर गोचर के समान होंगे। अशुभ हो तो पति–पत्नी में झगड़े होते हैं, विभक्त रहने तक बात बढ़ती है। परस्त्रियों में धन खर्च करना पड़ता है। हाथ में पैसा नहीं रहता।

जन्मस्थ रवि से शुक्र के गोचर के दौरान यश प्राप्ति होती है। अच्छे लोगों की संगति होती है, अपने से वरिष्ठ लोगों की संपर्क होता है।

जन्मस्थ चंद्र से गोचर शुक्र के गोचर काल स्त्रीसुख की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है। इस समय वासना बढ़ती है। साधारणतः सब कामों में सफलता मिलती है।

जन्मस्थ बुध से शुक्र का गोचर लेखन व्यवसाय के लिए अच्छा होता है, प्रवास होता है, व्यापार अच्छा चलता है, मित्रों से सुख मिलता है।

जन्मस्थ शुक्र से शुक्र के गोचर काल के दौरान, शुक्र जिन विषयों का कारक है उनकी रुचि उत्पन्न करता है। शुक्र जिन स्थानों का स्वामी होगा उनके अनुरूप फल मिलेंगे। जन्मकुंडली में शुक्र अनुकूल हो तो ये फल प्रतीत होंगे, अन्यथा नहीं।

जन्मस्थ मंगल से शुक्र का गोचर बेकार खर्च बढ़ाता है, मौज मस्ती व आलसीपन से आर्थिक नुकसान होता है। जन्मकुंडली में मंगल मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु या मकर में 1, 3, 9, 12 भावों में हो तो शुक्र का यह गोचर लाभ कराता है व्यापारियों को साहसपूर्ण व्यवहारों से अच्छा लाभ होता है। नौकरी पेशा लोगों

का काम मेहनत से व अच्छी तरह से होने के कारण बड़े अधिकारी खुश होते हैं।

जन्मस्थ गुरु से शुक्र का गोचर प्रगतिकारक होता है। लोकप्रियता, घर का सुख इस समय अच्छा मिलता है। जन्मकुंडली में गुरु के साथ मंगल, शनि, राहु हो अथवा इनकी गुरु पर अशुभ दृष्टि हो तो ये शुभ फल बहुत कम होंगे।

जन्मस्थ शनि बलहीन हो तो उस पर से शुक्र के गोचर का कोई परिणाम नहीं दिखाई देगा। जन्मस्थ शनि बलवान हो तो शुक्र का गोचर व्यवसाय के लिए साधारण अच्छा रहेगा।

शनि का जन्मस्थ ग्रहों से गोचर फल

शनि का गोचर हमेशा आरोग्य, व्यवसाय या नौकरी के बारे में कष्टकर होता हैं शनि शीतस्वभावी है, इसका कार्य आकुंचन है। अतः इसका गोचर व्यवसाय को कम करता है, व्यापार में आय कम होती है, मजदूरों को काम नहीं मिलता। कुछ न कुछ विपत्ति आती है। लग्न स्थान में शनि के भ्रमण से जीवनशक्ति कम होती हैं सूर्य या चंद्र से शनि का भ्रमण शीत से होनेवाले रोगों संधिवात आदि का कारण बनता है। लग्न, सूर्य या चंद्र से शनि के गोचर के समय यदि गोचरित चंद्र की अशुभ दृष्टि योग हो तो आपत्ति या दुर्घटनाएं होने की संभावना होती है। गोचरित चंद्र की दृष्टि योग शुभ हो तो अशुभ फल कम होते हैं।

जन्मस्थ सूर्य से शनि के भ्रमण के समय नौकरी में बदनामी या वरिष्ठ अधिकारियों से अनबन होती है। पिता जीवित हो तो उनसे कलह होता हैं आर्थिक नुकसान व बेइज्जती होती है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। पति पत्नी में झगड़ा या वियोग होता है।

जन्मस्थ चंद्र पर शनि का गोचर गृह सौख्य के लिए अशुभ होता हैं जायदाद व घर के बारे में झंझट उत्पन्न होती है, पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। कुंडली में द्विभार्या योग हो तो इस समय पत्नी को जीवन का संकट होता है। माता का स्वास्थ्य बिगड़ता है। मन उदास रहता है।

जन्मस्थ बुध से शनि का गोचर लेखन के लिए अशुभ होता हैं इस समय विद्यार्थियों को परीक्षा में सफलता नहीं मिलती। मन चितिंत रहता है।

जन्मस्थ शुक्र से शनि का गोचर स्त्री सुख में विघ्न पैदा करता है। शुक्र के कारकत्व की वस्तुओं के व्यापार में नुकसान होता है। इस समय चंद्र का गोचरित दृष्टि संबंध अशुभ हो तो बदनामी होगी, गंदी अफवाहों से कष्ट होगा। जन्मकुंडली में शुक्र वृषभ, तुला, मीन या धनु में तथा 1, 2, 4, 5, 7, 8, 10 भावों में कहीं हो तो व्यापार या नौकरी में तरक्की होती है।

जन्मस्थ मंगल से शनि का गोचर झगड़ा या यात्रा में दुर्घटना कराता है। साहस के काम तथा आकस्मिक विपत्ति के प्रसंग आते हैं।

जन्मस्थ गुरु से शनि का गोचर काल में यदि कुंडली में गुरु बलवान हो तो व्यवसाय में प्रगति होकर धन का संग्रह होता है। बचत से पैसे इकठ्ठे होते हैं। अदालती मामलों में सफलता मिलती है। धर्मगुरुओं

को इस समय अच्छा दान मिलता है। किंतु कुंडली में गुरु अशुभ हो तो इस शनि के गोचर से नुकसान होगा।

जन्मस्थ शनि से शनि के गोचर काल में फल कुंडली में शनि शुभ हो तो शुभ मिलेंगे, अशुभ हो तो अशुभ मिलेंगे।

सूर्य से या उसके सप्तम से शनि का गोचर हो तथा कुंडली में 2, 4, 5, 8, 10, 12 भाव में से किसी स्थान में सूर्य हो तो इस पर शनि का गोचर बहुत अशुभ होता है। माता–पिता का वियोग, व्यवसाय बंद होना, कर्ज होना, खाना मिलने की भी मुश्किल होना, अपमान, भाई या निकट संबंधियों से विरोध, बंटवारा आदि से कष्ट होता है। मित्र भी शत्रु जैसे हो जाते हैं, कोई मदद नहीं करता। कर्ज–वसूली के लिए बारबार साहूकार तंग करते हैं। फौजदारी मामलों में फंसने की संभावना रहती है। घर छोड़कर भाग जाने की इच्छा या आत्महत्या की इच्छा होती है। अप्रिय व्यक्ति से भी कर्ज मांगना पड़ता है। स्त्री बीमार रहती है। पागल होना, देश से निर्वासित होना, नौकरी छूटना, बदनामी होना, सट्टा–शेयर में नुकसान, आदि सब तरह के अशुभ फल मिलते हैं। कुंडली में सूर्य उपर्युक्त स्थानों से भिन्न स्थान में हो तो फलों में सौम्यता आती है। माता–पिता या स्त्री/पुत्रों में से किसी के वियोग होने पर शनि के बाकी अशुभ फलों की प्राप्ति की संभावना नहीं रहती।

चंद्र से या उसके सप्तम से शनि गोचर काल साढ़ेसाती का समय होता है, इसके अशुभ फल सुप्रसिद्ध है। चंद्र के स्थान से 45 अंश पहले शनि का आगमन होते ही साढ़ेसाती शुरू होती है तथा इस स्थान के बाद 45 अंश तक शनि के गोचर का समय कष्टकर होता है।

मंगल से या उसके सप्तम से शनि का गोचर हो और कुंडली में मंगल 1, 2, 4, 5, 7, 8, 11, 12 भावों में से किसी स्थान में हो तो मंगल पर शनि के गोचर के अशुभ फल मिलते हैं।, व्यापार बंद होता है, कर्ज होता है, लोग धोखा देते हैं, कामों में गलतियां होती है। छोटी आयु में यह योग होने पर चेचक, खसरा, फोड़े–फुंसी, टाइफाइड, मलेरिया आदि रोग होते हैं। भाई या पिता द्वारा गहन जायदाद रखी गई हो तो अदालत तक झगड़े होकर वह संपत्ति हाथ से जाती है। स्वयं तथा स्त्री/पुत्रों का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। फौजदारी मामले कारावास तक आगे बढ़ते हैं। अन्य ग्रह व महादशा अनुकूल हो तो ही इससे छुटकारा मिलता है। नौकरी छूटना या निलंबित होना, बुरे स्थान पर तबादला होना, रिश्वत लेने का आरोप लगना, सट्टा–शेयर बाजार में नुकसान, अपमान, देश छोड़ने या आत्महत्या की इच्छा, स्त्री/पुत्र व निकट संबंधियों का विरोध, मित्रों द्वारा संदेहपूर्ण व्यवहार तथा मदद न करना आदि अशुभ फल मिलते हैं। कुंडली में शनि और मंगल शुभ हो तो शुभ फलों की प्राप्ति होती है। 3, 6, 9 भावों में से किसी स्थान में मंगल हो तथा इस पर शनि का गोचर हो तो संतति या भाई का वियोग होता है, फिर धन हानि नहीं होती।

बुध से या उसके सप्तम से शनि का गोचर हो तथा कुंडली में बुध 3, 5, 7, 8, 10, 12 भावों में से किसी स्थान में हो तथा अशुभ स्थान का स्वामी हो तो इस भ्रमण के समय बुद्धि अस्थिर रहती है, छात्र परीक्षा में सफल नहीं हो पाते, गवाही या दस्तावेज झूठे साबित होते हैं। जमा, खर्च, घर आदि

के बारे में कागज, पत्र, ऋणपत्र आदि झूठे सिद्ध होने के कारण फौजदारी मामले बन सकते हैं। संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। बुध शुभ हो तो बुद्धि तेज और स्थिर रहती है। दस्तावेजों का समय पर अच्छा उपयोग होता है। छात्रों को परीक्षा में सफलता मिलती है। अंदाज सही सिद्ध होते हैं।

गुरु से या उसके सप्तम से शनि का गोचर हो तो गुरु जिस स्थान में हो उस भाव से संबंधित अशुभ फल मिलते हैं। बुध और गुरु से शनि के गोचर का यह समय बुद्धिजीवी लोग, लेखक, प्राध्यापक, शिक्षक, ज्योतिषी, संपादक, अनुवादक, वकील, जज, क्लर्क, हिसाब जांचनेवाले अधिकारी, गायक आदि के लिए साधारण अशुभ होता है। छात्र परीक्षा में सफल नहीं होते, संतान को कष्ट होता है।

शुक्र से या उसके सप्तम से शनि का गोचर हो और कुंडली में शुक्र 1, 2, 4, 5, 7, 10, 12 भावों में से किसी भाव में हो, कुंडली में द्विभार्या योग हो तो इस पर शनि का भ्रमण पत्नी के लिए घातक होता है। स्वयं और संतान की बीमारियां चलती रहती है। व्यवसाय मंद या बंद हो जाता है। पैसे की तंगी रहती है, कर्ज होता है, बेइज्जती होती है, गांव छोड़कर जाना पड़ता है। साहूकारों द्वारा तगादे का डर बना रहता है। शनि शुक्र के स्थान को छोड़कर जब तक नहीं जाता तब तक व्यवसाय फिर नहीं जम पाता। व्यवसाय में परिवर्तन का संभव होता है। अपने द्वारा दिया गया ऋण वापस नहीं मिलता, लिया हुआ ऋण चुकाना पड़ता है। कुंडली में शुक्र 3, 6, 9, 11 भावों में से किसी स्थान में हो तो शुभ फल मिलते हैं।

शनि से या उसके सप्तम से शनि का गोचर हो और कुंडली में शनि शुभ हो या अशुभ इस भ्रमण के समय आर्थिक, शारीरिक, मानसिक कष्ट होता ही है। व्यवसाय बदलता है पहले स्वतंत्र हो तो दूसरे के आधीन हो जाता है, पराधीन हो तो स्वतंत्र हो जाता है। स्त्री/पुत्रों को मायके भेजना पड़ता है। यह समय जीवन में क्रांति करनेवाला होता है। भाग्योदय इसी समय से प्रारंभ होता है।

अध्याय–6
वेध विचार

जब कोई ग्रह शुभ स्थान से गोचर कर रहा होता है, और उसी समय कोई अन्य ग्रह वेध स्थान से गोचर कर रहा हो तो ग्रह के शुभ फल स्थगित होकर अशुभ फलों में परिवर्तित हो जाते हैं। ग्रहो के इस व्यवहार को ग्रहों का वेध कहते हैं।

ग्रह का गोचर किन–किन स्थानों पर शुभ होता है एवं किन–किन स्थानों पर अशुभ होता है। इसको जानने के लिए हम निम्नलिखित सहायता लेते हैं जिसमें जन्म कुंडली के चंद्र से ग्रहों के शुभ गोचर स्थान एवं वेध स्थानों की जानकारी दी गयी है। इनके आधार पर हम यह निर्णय कर सकते हैं कि कब कब ग्रहों का गोचर शुभ होगा और कब कब ग्रहों का गोचर अशुभ होगा।

गोचर में चन्द्रमा से शुभ स्थान तथा वेध स्थान

गोचर ग्रहों को दूसरे ग्रहों का गोचर वेध के कारण निष्फल बना देता है। ग्रहों को वेध कब और कहां लगता है इसका विवरण इस प्रकार है :

सूर्य

शुभ गोचर स्थान – 3, 6, 10, 11

वेध स्थान – 9, 12, 4, 5

अर्थात सूर्य हेतु तृतीय भाव शुभ माना गया है, परन्तु नवम् भाव में कोई भी ग्रह होने से (शनि के अतिरिक्त, क्योंकि शनि, सूर्य का पुत्र है, अतः पिता–पुत्र का वेध नहीं माना जाता) सूर्य का वेध होगा, फलस्वरूप सूर्य अपना शुभत्व खो बैठेगा।

इसी प्रकार सूर्य छठे भाव में शुभ है, पर बारहवें भाव में कोई ग्रह होगा तो शुभता खो बैठेगा। इसी प्रकार सूर्य दशम भाव में हो पर अन्य कोई एक या एकाधिक ग्रह चौथे भाव में हो, या सूर्य एकादश भाव में हो, और अन्य कोई ग्रह पाँचवे भाव में हो तो सूर्य का शुभत्व क्षीण हो जायगा।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भी शुभ स्थान एवं वेध स्थान नीचे स्पष्ट कर रहे हैं।

चंद्र : 1, 3, 6, 7, 10, 11 स्थानों में शुभ फल देता है किंतु 2, 4, 5, 8, 9, 12 स्थानों में अन्य ग्रह हो तो उनके वेध से चंद्र निष्फल होगा। केवल बुध का वेध यहां नहीं माना जाता क्योंकि बुध चंद्र का पुत्र है।

मंगल : 3, 6, 11 स्थानों में शुभ फल देता है किंतु उसी समय 5, 9, 12 स्थानों में अन्य ग्रह हो तो उनके वेध से मंगल निष्फल होता है।

बुध : 2, 4, 6, 8, 10, 11 स्थानों में भ्रमण करते समय शुभ फल देता है किंतु 1, 3, 5, 8, 9, 12 स्थानों में अन्य ग्रह उसी समय हों तो उनके वेध से बुध निष्फल होता है। चंद्र का वेध बुध को नहीं माना जाता।

गुरु : 2, 5, 7, 9, 11 स्थानों में भ्रमण करते समय शुभ फल देता है। वेध से 3, 4, 8, 10, 12 स्थानों के ग्रह निष्फल होते हैं। (तात्पर्य यह प्रतीत होता है कि गुरू को अन्य ग्रहों के वेध नहीं लगते।)

शुक्र : 1 से 5 व 8, 9, 11, 12 स्थानों में भ्रमण करते समय शुभ फल देता है। किंतु 1, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11 स्थानों में उसी समय अन्य ग्रह हों तो उनके वेध से शुक्र निष्फल होता है।

राहू–केतु के वेध रवि के समान होते हैं।

कोई ग्रह जब चंद्रमा से शुभ स्थान में गोचर करता है तो शुभ फलो की प्राप्ति होती है। परन्तु यदि उसी समय जब कोई अन्य ग्रह वेध स्थान से गोचर कर रहा होता है तो ग्रह का शुभ फल अशुभ में परिवर्तित हो जाता है और तब तक शुभ फल की प्राप्ति नहीं होती जब तक कि वेध स्थान से ग्रह हट न जाय। लेकिन उसी समय यह देखना भी आवश्यक है कि ग्रह का गोचर चंद्रमा से शुभ स्थान में है या नहीं। यदि शुभ स्थान से ग्रह का गोचर हट जाता है तथा वेध स्थान से भी ग्रह हट जाता है तो ग्रह का शुभ स्थान पर से गोचर करने का फल नहीं मिल पाता।

इसके विपरीत यदि ग्रह वेध स्थान से गोचर करता है तो अशुभ फल की प्राप्ति होती है। यदि इसी समय कोई अन्य ग्रह शुभ स्थान में गोचर करता है तो ग्रह के अशुभ फल स्थगित हो जाते हैं।

इस प्रकार ग्रहों के शुभ फलों में अवरोध उत्पन्न होने के कारण ग्रहों के शुभ फल स्थकित होने के प्रक्रिया को ग्रहों का वेध कहते हैं और ग्रहों का वेध स्थान में गोचर करने के कारण अशुभ फलों की प्राप्ति में स्थगन होना विपरीत वेध कहलाता है इसे वाम वेध भी कहते हैं।

उदाहरण कुंडली

उदाहरण के लिए किसी जातक का जन्म 11 जुलाई 1964 का है और जन्म समय 21.30 घंटे तथा जन्म स्थान दिल्ली है इसके लिए निम्न लग्न कुंडली होगी तथा यदि इस जातक के लिए 9 अगस्त 2005 को 16.30 बजे का ग्रह गोचर देखें तो गोचर कुंडली के अनुसार प्रदर्शित होगा।

गोचर कुंडली में जातक की चंद्र राशि से ग्रहों के शुभ एवं वेध स्थान को देखेंगे। लग्न कुंडली में जातक की जन्म राशि कर्क है। अर्थात कर्क राशि को प्रथम भाव मानते हुए ग्रहों की स्थिति देखेंगे। उदाहरण के लिए यदि हम गुरु का गोचर अध्ययन करना चाहें तो गुरु के लिए चंद्रमा से शुभ स्थान 2, 5, 7, 9,

लग्न कुंडली
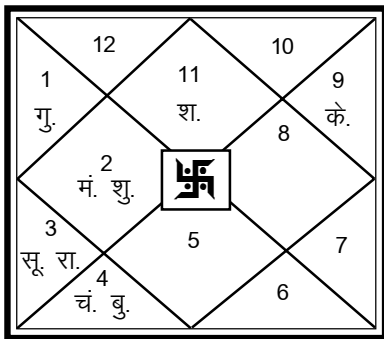
जन्म तिथि : 11 जुलाई 1964
जन्म समय : 21.30 घंटे
जन्म स्थान : दिल्ली

गोचर कुंडली
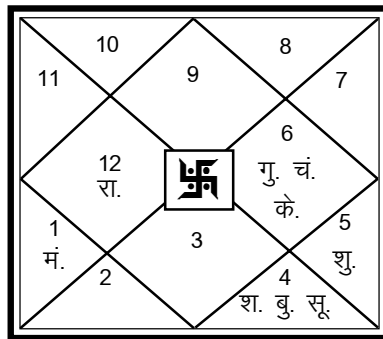
गोचर तिथि : 9 अगस्त 2005
गोचर समय : 16.30 घंटे
गोचर स्थान : दिल्ली

11 होते हैं तथा वेध स्थान 3, 4, 8, 10, 12 होते हैं। गोचर कुंडली से ज्ञात होता है कि गुरु कन्या राशि में स्थित है। अर्थात गुरु चंद्र राशि से तीसरे स्थान पर स्थित है। यह तीसरा स्थान गुरु का वेध स्थान है अतः जातक को गुरु के गोचर के कारण अशुभ फलों की प्राप्ति होगी। कन्या राशि जातक की लग्न कुंडली से अष्टम भाव में स्थित है अतः जातक को अष्टम भाव से संबंधित कष्ट मिलने की संभावना है। अष्टम भाव दुर्घटना, कार्यो में देरी, रूकावटे एवं मनोबल की हानि का द्योतक है। अतः संभव है कि जताक को इन्हीं से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़े।

इसी समय यदि हम विपरीत वेध पर विचार करें तो चंद्रमा से गुरु के शुभ स्थानों में यदि कोई ग्रह गोचर कर रहा होगा तो यह अशुभ फल स्थगित हो जाएंगे। चंद्रमा से गुरु के शुभ स्थान 2, 5, 7, 9, 11 भाव हैं। यदि गोचर कुंडली को देखें तो ज्ञात होता है कि जातक की जन्म राशि कर्क से दूसरे भाव में शुक्र एवं नवम भाव में राहु, स्थित है अतः जबतक द्वितीय भाव में शुक्र एवं नवम भाव में राहु स्थित होगा तबतक गुरु के अशुभ फल जातक को नहीं मिलेंगे। शुक्र का गोचर एक राशि में लगभग सवा महीने रहता है। अतः सवा महीने तक अशुभ फल स्थगित रहने की संभावना है। लेकिन नवम भाव में राहु लगभग डेढ़ साल तक रहेगा।इतने समय में गुरु भी अपनी राशि परिवर्तीत कर देगी तथा गुरु जातक की जन्म राशि से चतुर्थ हो जाएगा और यहां पर गुरु अगले एक साल तक रहेगा। यह चतुर्थ स्थान भी गुरु के लिए वेध स्थान है। अतः यहां भी गुरु जातक के लिए शुभ नहीं होगा। साथ ही चंद्रमा से नवम राहु अगले एक साल तक के लिए लगभग 6 महीने के लिए यहीं रहेगा। अर्थात उससे अगले 6 महीनों में गुरु चंद्र से चतुर्थ में रहेगा लेकिन नवम में राहु स्थित नहीं रहेगा। इस 6 महीने के समय अंतराल में जातक को गुरु के गोचर का अशुभ फल मिल सकता है।

इसी प्रकार हम अन्य सभी ग्रहों के लिए शुभ एवं अशुभ गोचर का विचार चंद्रमा से शुभ स्थान एवं वेध स्थानों से देखकर साथ ही वेध विचार एवं विपरीत वेध विचार का ध्यान रखते हुए फल कथन कर सकते हैं।

अध्याय-7

शनि की साढ़ेसाती

शनि की साढ़े साती जानने के लिए जातक की जन्म राशि से शनि के गोचर को देखा जाता है। गोचर में जब शनि जन्म राशि से 12 वें स्थान पर आता है तो शनि की साढ़े साती प्रारम्भ होती है। शनि एक राशि पर लगभग ढ़ाई वर्ष रहता है। ढ़ाई वर्ष बारहवें स्थान पर, ढ़ाई वर्ष जन्म राशि पर तथा ढ़ाई वर्ष चन्द्र राशि से दूसरे स्थान पर रहता है। यह साढ़े सात साल शनि की साढ़े साती कहलाती है।

शनि की साढ़ेसाती कब आरंभ होती है और कब समाप्त होती है यह जातक के कुंडली में चंद्रमा के राशि और अशों पर निर्भर करता है। यह साढ़ेसाती जातक की जन्मकुंडली में स्थित चंद्रमा के अंशों से 45^0 पूर्व प्रारंभ होती है तथा 45^0 पश्चात तक रहती है। जातक के जीवन में शनि की साढ़ेसाती कब शुभ रहेगी और कब अशुभ रहेगी यह इस बात पर निर्भर करता है कि चंद्रमा किस राशि से गोचर कर रहा है गोचरित शनि का संबंध उसकी गोचरित राशि के स्वामि के साथ देखना चाहिए। उदाहरण के लिए शनि यदि सिंह राशि से गोचर करेगा तो शनि का संबंध सिंह राशि के स्वामि सूर्य के साथ देखना होगा जोकि शत्रु संबंध है अतः शनि का गोचर सिंह राशि से कष्टपूर्ण होगा और सिंह राशि जिस भाव में स्थित होगा उस भाव से संबंधित कष्ट या अभाव रहेगा। इसके विपरीत यदि शनि का गोचर मित्र राशि के उपर से होता है तो लाभ होता है और जिस भाव से गोचर होगा उस भाव से संबंधित लाभ मिलेगा। शनि का संबंध सम होने पर उस भाव से संबंधित फल सामान्य रहेगा। इस आधार पर शनि की साढ़ेसाती जातक के लिए कैसी रहेगी। इसे जन्म राशि से इस प्रकार समझें :

"शनि की ढैया से शुभाशुभ ज्ञानम्"

चन्द्र राशि	पहली ढैया	दूसरी ढैया	तीसरी ढैया
मेष	सम	अशुभ	शुभ
वृष	अशुभ	शुभ	शुभ
मिथुन	शुभ	शुभ	अशुभ
कर्क	शुभ	अशुभ	अशुभ
सिंह	अशुभ	अशुभ	शुभ
कन्या	अशुभ	शुभ	शुभ
तुला	शुभ	शुभ	अशुभ
वृश्चिक	शुभ	अशुभ	सम
धनु	अशुभ	सम	शुभ
मकर	सम	शुभ	शुभ
कुम्भ	शुभ	शुभ	सम
मीन	शुभ	सम	अशुभ

यह शुभाशुभ ज्ञानम शनि की नैसर्गिक मैत्री से निकाली गई है। यदि पंचधा मैत्री में ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति में फर्क पड़ता है तो साढ़े साती के शुभाशुभ में अंतर आ जाता है।

साढ़ेसाती के उपाय करने के लिए पहले शनि के स्वभाव को जानिए। शनि एक क्रूर ग्रह है। इसकी साढ़ेसाती सभी के जीवन में अपना प्रभाव जरूर दिखाती है। मकर और कुम्भ शनि की राशियां है। इन राशियों के जातक पर जब शनि की साढ़ेसाती आती है तो शनि के शुभ प्रभावों में कमी जरूर आ जाती है। कुण्डली में शनि यदि शुभ व योगकारक ग्रह है तो ज्यादा अशुभता नहीं होती। शनि यदि कुण्डली के हिसाब से बाधक, मारक या अशुभ ग्रह है तो साढ़ेसाती में शनि की अशुभता और बढ़ जाती है। शनि कुण्डली में जिस भाव में बैठता है उस भाव के फलों में वृद्धि करता हैं और अपनी तीसरी, सातवीं और दसवीं दृष्टि से जिन भावों को देखता है उन भावों के फलों में कमी लाता है। शनि से मनमुटाव, रंजिश, कलह, जेल, हत्या, दीर्घकालीक रोग, उपेक्षा, अपमान, असफलता, बाधाएं संबंधों में कटुता और निराशा आदि का विचार किया जाता है। जातक की आयु, मृत्यु आदि का विचार भी शनि से किया जाता है। शनि प्रभावित व्यक्ति शक्की मिजाज, चालाक, धूर्त व अपने मन का भेद न बताने वाले होते हैं।

वे गंभीर स्वभाव, गहरी कल्पना शक्ति, बड़े बड़े व्यवसायों को योजना बनाने वाले, कम खर्च करने वाले, कष्ट सहिष्णु, स्वतंत्रता प्रेमी, नवीन आविष्कारक, एकान्त प्रेमी, खगोल और रसायन शास्त्र के प्रेमी और सम्मान प्रिय होते हैं। पैरों के रोग, दुर्घटनाएं, नपुंसकता, वायु विकार, रीड़ की हड्डी, कैंसर, कुष्ठ रोग व भूत प्रेत बाधा आदि का विचार, शनि से किया जाता है। चमार, लुहार, मकैनिक, बढ़ई, कोयले के व्यापारी, ड्राईवर, तेल के व्यापारी, न्यायाधीश आदि शनि के अन्तर्गत आते हैं। शनि तुला राशि में उच्च का व मेष राशि में नीच का होता है। शुक्र और बुध को मित्र तथा सूर्य, चंद्रमा व मंगल को शत्रु मानता है, वृहस्पति को सम मानता है। शनि सूर्य देव का पुत्र है लेकिन सूर्य को अपना शत्रु मानता है।

शनि की दशा या साढ़ेसाती में उन लोगों को कष्ट अधिक होता है जो अभक्ष्य का भक्षण करते हैं, काम वासना में लिप्त होकर परस्त्री गमन करते हैं, श्रम के प्रति अनास्था रखते हैं, गलत कामों में लिप्त रहते हैं व पूजा पाठ नहीं करते हैं।

दुःख में सब सुमिरन करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय।।

दुख से मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति को दान दक्षिणा, पूजा–पाठ, जप–तप, यंत्र–मंत्र–तंत्र व रत्न का सहारा लेना पड़ता है।

साढ़ेसाती के प्रभाव को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय सहायक हो सकते हैं :–

1. शनि ग्रह की पूजा
2. शनि का मंत्र जाप
3. शनि यंत्र की पूजा

4. श्री ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की पूजा
5. शनि योगकारक होने पर नीलम धारण करें या लोहे का छल्ला मध्यमा उंगली में डाले।
6. रूद्राक्ष धारण करें।
7. शिव जी की पूजा करें। ¬ नमो शिवाय मंत्र का जाप करें।
8. हनुमान जी की पूजा करें।
9. ईश्वर आराधना करें।
10. मांस मदिरा का सेवन न करें।
11. परस्त्री गमन न करें।
12. गलत कामों से दूर रहें।
13. कर्मशील रहें।
14. प्रतिदिन मंदिर जाकर भगवान से क्षमा याचना करें।
15. शनिवार को उड़द, तेल व काले कपड़े का दान करें।
16. शनिवार को पीपल के पेड़ को कच्चे दूध और जल से सींचे और पूजन–दीपन आदि करें।
17. शनिवार को काले कपड़े न पहनें।
18. मृत्युंजय का पाठ करें।
19. अधिक कष्ट हो तो महामृत्युंजय का पाठ करें या योग्य व्यक्ति से करवाएं।
20. शनिवार का व्रत करें एवं शनिवार व्रत कथा पढ़ें या सुनें।
21. कृष्ण जी की भक्ति करें।

अध्याय - 8
अष्टकवर्ग से गोचर फल

गोचर का अर्थ है कि वर्तमान समय में कौनसा ग्रह किस राशि पर भ्रमण कर रहा है या चल रहा है। एक प्रकार से समझा जाए तो अष्टकवर्ग का आधार गोचर है। चन्द्रमा मन का स्वामी है, सर्वाधिक तेज गति का ग्रह होने से चन्द्रमा को तो महत्व दिया ही जाना चाहिए, लेकिन अन्य ग्रहों के गोचर का भी अपना महत्व है। चन्द्र जिस राशि में है, उस राशि को लग्न मान के भी उसी प्रकार फलादेश किया जाता है, जिस प्रकार जन्मकुण्डली या लग्न को देखकर फलादेश कहने का प्रचलन है।

सूर्य का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में सूर्य जब गोचर में भ्रमण करता है, तब आर्थिक व्यय, व्यर्थ की परेशानी एवं प्रत्येक कार्य की सम्पन्नता में कुछ न कुछ बाधाएं आती हैं। छाती में दर्द, शीघ्र क्रोध का आना एवं व्यर्थ की यात्राएँ होती रहती हैं।
2. द्वितीय भाव में धन का नाश या अपव्यय, सुख में कमी, स्वभाव में जिद्दीपन, नेत्रों में तकलीफ तथा समयानुसार धोखे का शिकार होना पड़ता है।
3. तृतीय भाव में धन लाभ, आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति, दूरस्थ स्थानों से शुभ एवं अनुकूल समाचार, रोगों से मुक्ति, शत्रुओं पर विजय, मुकद्दमें में लाभ, तथा मन में प्रसन्नता रहती है।
4. चतुर्थ भाव में पत्नी से विवाद, गृहस्थ जीवन में न्यूनता, शरीर में आलस्य, रोगवृद्धि तथा सुख के कार्यो में बाधाएं आती हैं।
5. पंचम भाव में शत्रुओं की वृद्धि तथा शरीर में अस्वस्थता एवं कार्यो में बाधाएं, मानसिक चिन्ता तथा मन में असंतोष रहता है।
6. छठे भाव में शत्रुओं पर विजय, मुकदमें में जीत, आत्मिक प्रसन्नता एवं स्वास्थ्य उत्तम रहता है।
7. सप्तम भाव में पेट, गुदा, लिंग या बवासीर संबंधित रोगों की वृद्धि, सम्मान में हानि, मानसिक खिन्नता एवं चित्त में व्याकुलता, व्यर्थ की यात्राएं, तथा जातक दीनता का शिकार होता है।
8. अष्टम भाव में समाज तथा रोजगार के क्षेत्र में परस्पर मतभेद आना एवं गलत फहमी उत्पन्न होना, पत्नि से झगड़ा तथा रोग वृद्धि होती है।
9. नवम भाव में मित्रों, संबंधियों एवं परिचितों से विग्रह, व्यर्थ की मुसीबत गले लगना, दीन–हीनता प्रदर्शित होती है। रोजगार–व्यवसाय में असफलता, दुर्घटना के योग, उदर संबंधी रोग तथा मानसिक तनावों में वृद्धि होती है।
10. दसम भाव में मनोवांछित कार्य में सफलता, उत्तम कोटि की पद–प्रतिष्ठा, भावनाओं की सन्तुष्टि एवं

कार्य सम्पन्न होते हैं।

11. एकादश भाव में सम्मान, यश प्रतिष्ठा कीर्ति लाभ, आर्थिक लाभ, रोग से मुक्ति, कोई उच्च स्तर की सफलता एवं मनोनुकूल कार्य सिद्ध होते हैं।
12. द्वादश भाव में सही कार्यो में सही उपाय से सफलता, चरित्र में वृद्धि, शत्रु से पीड़ा, मानसिक क्लेश उत्पन्न होता है।

चन्द्र का प्रत्येक भाव में गोचर फल

चन्द्र गोचर में अपनी जन्मराशि से जिस भाव में विचरण करता है, उसका फल निम्न रहता है :–

1. प्रथम भाव में भाग्य से मनोवांछित कार्य में सफलता, सुख सुविधाओं में वृद्धि एवं दूरस्थ मित्र का शुभ समाचार मिलना आदि।
2. द्वितीय भाव में सम्मान में हानि, निरादर, व्यर्थ का विवाद एवं मन में संताप वृद्धि, अपव्यय, आर्थिक दृष्टि से हानि तथा परेशानियों में वृद्धि होती है।
3. तृतीय भाव में विवाद में विजय, गृहस्थ जीवन में सम्पन्नता एवं सुख सुविधाओं में वृद्धि, आर्थिक दृष्टि से लाभ, भविष्य की उज्जवल संभावनाएं बनती हैं।
4. चतुर्थ भाव में दूसरों की विपत्ति अपने गले मढ़ना, राज्य से भय, चिन्ता, घबराहट, यात्रा में हानि, कार्य सिद्धि में बाधाएं तथा मानसिक उद्वेलन होता है।
5. पंचम भाव में व्यर्थ की चितांए, आर्थिक लाभ, शोक एवं व्यर्थ भ्रमण कराता है।
6. छठे भाव में सुख, सुविधाओं में वृद्धि, स्वास्थ्य लाभ, शत्रुओं पर विजय, मुकदमे में जीत के आसार बढ़ता है।
7. सप्तम भाव में सम्मान, सुख सुविधाओं में वृद्धि, कोई ऐसा कार्य या समझौता होना जिससे भविष्य में लाभ तथा धन लाभ मिलता है।
8. अष्टम भाव में व्यर्थ की बाधाएँ या परेशानियाँ, कार्य की सफलता में संदेह एवं अशुभ फल प्राप्त होते हैं।
9. नवम भाव में मानसिक चिन्ता, व्यर्थ भ्रमण, उदर रोगों में वृद्धि, धन हानि, रोजगार के क्षेत्र में असफलताएँ मिलती हैं।
10. दसम भाव में सफलता, कार्यसिद्धि, बाधाएँ दूर होना तथा अपने कार्य की संसिद्धि से प्रसन्नता, उत्साह, उच्चाधिकारियों से मदद मिलना, भावनाओं में सफलता मिलती है।
11. एकादश भाव में नये मित्रों से परिचय, रोजगार व्यापार में सफलता, शुभ समाचार मिलना तथा कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त होती है।
12. द्वादश भाव में दुर्घटना के योग, शत्रुओं द्वारा शारीरिक क्षति, व्यर्थ का व्यय, परेशानी एवं कठिनाई मिलती हैं।

मंगल का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में कई प्रकार की कठिनाइयों में वृद्धि, कार्य सिद्धि में बाधाएँ एवं आर्थिक दृष्टि से परेशानी तथा चिन्ताएँ उत्पन्न होती हैं।
2. द्वितीय भाव में शासन अथवा उच्च अधिकारियों के द्वारा परेशानियाँ तथा वाद–विवाद उत्पन्न होना, मन में संताप एवं शत्रुओं द्वारा हानि पहुँचाना। वाक्य शक्ति में शिथिलता, सिरदर्द, मानसिक तनाव आदि में वृद्धि होती है।
3. तृतीय भाव में प्रत्येक कार्य में सफलता, आर्थिक कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता उच्च अधिकारियों से मित्रता एवं कार्य में सहयोग, धन प्राप्ति तथा शत्रुओं पर विजय मिलती है।
4. चतुर्थ भाव में रोजगार में हानि या अनुकूल स्थान की प्राप्ति न होना, ज्वर, उदर रोग, रक्तचाप, शुभ कार्यो में बाधाएं, बन्धुओं से विग्रह होता है।
5. पंचम भाव में शत्रुओ की बल वृद्धि होना तथा शत्रुओं का हावी होना, बुखार से कष्ट, चिन्ता, सफलता के मार्ग में व्यवधान, बन्धुओं से मतभेद तथा पुत्रों से वाद विवाद होता है।
6. छठे भाव में शत्रुओं पर विजय अथवा समझौता, रोग निवारण, कार्यों में सफलता तथा समस्त कार्यो में मन के अनुकूल स्थिति प्राप्त होती है।
7. सप्तम भाव में पत्नी से झगड़ा, ससुराल वालों से वाद विवाद, नेत्र रोग, उदर पीड़ा, रक्तचाप या रक्त संबंधित बीमारियों में वृद्धि होती है।
8. अष्टम भाव में खून की कमी, उच्च रक्तचाप, रोग वृद्धि, शत्रुओं द्वारा परेशानी, दुर्घटना योग, सिर में चोट लगना, धननाश, व्यर्थ का भ्रमण एवं कठिनाइयों में वृद्धि होती है।
9. नवम भाव में सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा में कमी, धननाश, शारीरिक दुर्बलता, वीर्य दोष तथा कई प्रकार की बाधाएं उत्पन्न होती हैं।
10. दसम भाव में असफलता, शुभ कार्यो में विघ्न, परिश्रम करने पर भी सफलता के आसार नहीं बनते।
11. एकादश भाव में अप्रत्याशित सफलता एवं प्रत्येक कार्य में सिद्धि तथा प्रसिद्धि, आर्थिक लाभ, शत्रुओं पर विजय एवं अधिकारियों का विश्वास मिलता है।
12. द्वादश भाव में धनहानि, अप्रत्याशित झंझटें उत्पन्न होना, नेत्र पीड़ा, संबंधियों से विवाद, चिन्ता की वृद्धि होती है।

बुध का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में आर्थिक हानि एवं परेशानियाँ, गलत एवं अयोग्य व्यक्तियों की सलाह से व्यर्थ की चिन्ताएं, यात्राएँ करने पर भी कार्य में सफलता नहीं मिलती।
2. द्वितीय भाव में प्रत्येक कार्य में बाधा तथा कठिनाइयाँ अपने किसी संबंधी रिश्तेदार के संबंध में अशुभ

समाचार मिलना, न्यूनाधिक बाधाएँ होने पर भी आर्थिक लाभ होता है।

3. तृतीय भाव में शत्रुओं से हानि, शासकीय चिन्ता, अधिकारियों द्वारा परेशानी, व्यर्थ का वाद विवाद, मन में संताप, व्यर्थ की यात्राएं या इधर–उधर घूमना पड़ता है।
4. चतुर्थ भाव में काफी दिनों से रुका हुआ कार्य होना, आर्थिक लाभ, कठिनाइयों पर विजय, रिश्तेदारों के बारे में शुभ समाचार सुनना, धन लाभ एवं मानसिक सुख मिलता है।
5. पंचम भाव में पुत्रों द्वारा मानमर्दन, घरेलू कारणों से लड़ाई–झगड़े, परिणाम स्वरूप मन में संताप एवं परेशानीयों में वृद्धि होती है।
6. छठे भाव में समस्त शुभ कार्यो में विजय, प्रसिद्धि, ख्याति एवं आत्म सम्मान मिलता है।
7. सप्तम भाव में त्वचा से संबंधित रोगों में वृद्धि, उच्च रक्तचाप, आपसी व्यक्तियों के बीच मतभेद होना, बाधाएं, चिन्ता एवं अस्त व्यस्तता देता है।
8. अष्टम भाव में परिवार के सदस्यों में वृद्धि, कोई शुभ कार्य होना, धन लाभ एवं ऐसे सभी कार्य सम्पन्न होते हैं, जो किन्ही कारणों से रुके हुए थे, आर्थिक क्षेत्र में सफलता मिलती है।
9. नवम भाव में मानसिक परेशानियाँ तथा आर्थिक लाभ में व्यवधान तथा कठिनाइयाँ, शुभ कार्यो में निरंतर विघ्न आते रहते हैं।
10. दसम भाव में शत्रुओं का मानमर्दन होता है, धन संग्रह एवं रोजगार के कार्यो में विशेष सफलता, गृहस्थ जीवन में भौतिक सुविधाओं में वृद्धि, तथा विश्वसनीय मित्रों का सहयोग मिलता है।
11. एकादश भाव में सन्तान लाभ या संतान से लाभ, धन लाभ एवं आर्थिक क्षेत्र में विशेष सफलता, आत्मिक प्रसन्नता, तथा सभी प्रकार के सुख मिलते हैं।
12. द्वादश भाव में शत्रुओं द्वारा पराजय, मित्रों के सहयोग में बाधा, व्यर्थ का भ्रमण तथा विविध रोगों से ग्रसित होना एवं गृहस्थ जीवन में बाधाएं आती हैं।

गुरु का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में आर्थिक क्षति, आकस्मिक बाधा एवं दैविक प्रकोप, अधिक दूरी की यात्राएं होना तथा धन हानि के योग बनते हैं।
2. द्वितीय भाव में भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि, गृहस्थ जीवन में विशेष प्रसन्नता के समाचार मिलना, आर्थिक लाभ एवं दूसरों को प्रभावित करने में सफलता मिलती है।
3. तृतीय भाव में विद्यमान स्थिति में गिरावट, एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकने की प्रवृत्ति, व्यक्तिगत कार्यो में बाधाएं तथा मान हानि एवं आर्थिक चिन्ता रहती है।
4. चतुर्थ भाव में बन्धुओं द्वारा षडयंत्र रचना, चौपाये जानवर से शरीरिक क्षति, पिछले किये गये कार्यो का बुरा परिणाम भोगना पड़ता है।

5. पंचम भाव में परिवार में पुत्र उत्पन्न होना, संतान सुख, संतान की उन्नति, सर्वांगीण विकास, राज्य, शासन से लाभ तथा श्रेष्ठ अनुकूल समय रहता है।
6. छठे भाव में अपने चचेरे या ममेरे भाईयों से विवाद, रोग वृद्धि, मानसिक तनाव या मानसिक असन्तुलन, मित्रों द्वारा शत्रुवत् व्यवहार करना तथा आर्थिक क्षति होती है।
7. सप्तम भाव में सुख, समृद्धि एवं प्रसन्नता में वृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, लाभ में वृद्धि, उत्तम वाहन सुख या नया वाहन खरीदना तथा भाषण कला में वृद्धि होती है।
8. अष्टम भाव में रोग वृद्धि, व्यर्थ की यात्राएं एवं कार्य सिद्धि में बाधा तथा कठिनाईयां, विविध समस्याओं से सामना तथा आर्थिक हानि के योग बनते हैं।
9. नवम भाव में समस्त प्रकार के सुख सौभाग्य में वृद्धि एवं भाग्य से लाभ, प्रभाव, साहस में वृद्धि, तथा सम्मान, यश, कीर्ति में वृद्धि होती है।
10. दसम भाव में आर्थिक क्षेत्र में हानि, कार्य सिद्धि में रुकावटें या बिगाड़, पदच्युति, पदोन्नति में बाधा, संतान की ओर से चिन्ता, कोई अप्रिय समाचार मिलता है।
11. एकादश भाव में उत्तम स्वास्थ्य, पुत्र या पुत्र से लाभ, सम्मान कीर्ति, प्रशंसा एवं यश में वृद्धि होती है।
12. द्वादश भाव में आदर्श या अपने लक्ष्य में हानि, आर्थिक हानि, भय, चिन्ता एवं बुरे स्वप्न दिखाई देते हैं।

शुक्र का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में समस्त प्रकार की सुख सुविधाओं में वृद्धि एवं आत्मिक प्रसन्नता के साथ सुखमय जीवन में वृद्धि, आर्थिक लाभ तथा अनुकूल अवसरों में वृद्धि होती है।
2. द्वितीय भाव में आर्थिक लाभ मिलने से मानसिक प्रसन्नता, विविध स्त्रोतों से धनागम, आनन्दमय जीवन, प्रत्येक कार्य में सिद्धि एवं श्रेष्ठता प्राप्त होती है।
3. तृतीय भाव में आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठ फल, रोजगार–व्यापार में सफलता, सम्मान, यश कीर्ति में वृद्धि होती है।
4. चतुर्थ भाव में नये–नये मित्र बनना एवं मित्रों से लाभ, शत्रुओं पर विजय, तथा आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।
5. पंचम भाव में सन्तान सुख, परिवार या कुल में संतान का जन्म, अर्थलाभ, संतान के कार्यो में सम्मान, यश एवं कीर्ति लाभ तथा श्रेष्ठता प्राप्त होती है।
6. छठे भाव में सामान्यतः सभी ओर से प्रसन्नता का वातावरण बनना, कार्य सिद्धि में अड़चने एवं बाधाएँ आती हैं।
7. सप्तम भाव में पत्नी से कलह, स्त्री के स्वास्थ्य में गिरावट, दुर्घटना होने की संभावना, ससुराल से

परेशानी एवं कष्ट मिलता है।

8. अष्टम भाव में मानसिक परेशानी तथा चरित्र में कमजोरी आना, बदनामी, आर्थिक हानि, व्यर्थ ही इधर उधर भटकना तथा लक्ष्य च्युति होती है।
9. नवम भाव में नया मकान बनाना या खरीदना या उसके बारे में अनुकूल बात होना, भूमि संबंधी कार्यो में लाभ, समस्त सुख सुविधाओं में वृद्धि प्राप्त होती है। अविवाहितों के विवाह होने की संभावनाए अनुकूल बनती हैं।
10. दसम भाव में प्रभाव में वृद्धि, यश, कीर्ति एवं सम्मान मिलना, परिचितों में मतभेद एवं कुटुम्ब में कलह बढ़ना, धार्मिक कार्यो में रुचि एवं वृद्धि, धन खर्च में वृद्धि होती है।
11. एकादश भाव में पतन, पराभव, शत्रुओं का हावी होना तथा विविध परेशानियों से ग्रस्त होना, मन में एक अज्ञात सा डर बना रहना, कुटुम्बियों से कलह होती है।
12. द्वादश भाव में नये मित्रों से लाभ, धन का विशेष लाभ, कोई अप्रत्याशित अनुकूल कार्य होना एवं हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होती है।

शनि का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में आग लगना, या जहर खाना, या कोई विषैला प्रभाव शरीर पर होना, अनहोनी, आकस्मिक दुर्घटना, परिवार की तरफ से कुचक्र रचना, मित्रों का शत्रुवत् व्यवहार करना, विदेश यात्रा, घर से दूर रहना, स्थानांतरण, असत्य बालने की प्रवृत्ति को बढ़ावा तथा स्थान–स्थान पर निरादर अपमान का सामना करना पड़ता है।
2. द्वितीय भाव में रोग वृद्धि तथा विविध प्रकार के रोगों से ग्रस्त होना, धन नाश, जो भी कार्य करें उसमें हानि, अपमान, कठिनाइयां होना, संतान बाधा, गर्भ च्युति आदि होती है।
3. तृतीय भाव में धनागम, आर्थिक स्त्रोतों का प्रादुर्भाव तथा विविध स्त्रोतों से धनलाभ, सुख सुविधाओं में वृद्धि, नौकरी लगना, मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तर, रोजगार व्यापार में वृद्धि तथा समस्त प्रकार के शुभ कार्य होते हैं।
4. चतुर्थ भाव में कुटुम्ब से अलग होना, मित्रों से दूरी, विद्वेषण एवं विवाद होना, संदेह बना रहना, तोड़–फोड़ एवं विध्वंसकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलना, भावनाओं में कमी आती है।
5. पंचम भाव में आकस्मिक घाटा हो, जिससे रोजगार व्यापार में कठिनाइयाँ, मानहानि, संतान कष्ट, संतान की तरफ से बाधाएं, मन में उद्वेग एवं अशान्ति बनी रहती है।
6. छठे भाव में शत्रुओं पर विजय, मुकदमें में जीत, मित्रों तथा संबंधियों में लोकप्रियता, रोगमुक्ति तथा कठिनाइयों पर विजय दिलाता है। विपरीत सैक्स के प्रति रुचि एवं सफलता मिलती है।
7. सप्तम भाव में व्यर्थ ही इधर–उधर भटकना, कार्य की सफलता में अनेक प्रकार की बाधाएं, पत्नी से झगड़ा, बच्चों से विग्रह एवं साथियों से मनमुटाव होती है।
8. अष्टम भाव में मानसिक प्रसन्नता, कठिनाइयों पर विजय लेकिन संतान बाधा, गर्भ च्युति, पशु हानि,

मित्रों से विवाद, विग्रह एवं फूट, चोरी होने की संभावनाएं बढ़ना, स्वास्थ्य में गिरावट, स्वभाव में चिड़चिड़ाहट आती है।

9. नवम भाव में दरिद्रता, धन का नाश, शुभ कार्यों में बाधाएं एवं कठिनाइयां, मानहानि, परिवार के किसी वृद्ध व्यक्ति का मरण, दुःख, चिन्ता एवं उद्योग में हानि होती है।
10. दसम भाव में सम्मान भंग, शील भंग, चरित्र हानि, आर्थिक हानि एवं प्रसिद्धि में बट्टा लगता है। जातक आर्थिक हानि होने से मानसिक रूप से चिंचित बने रहता है।
11. एकादश भाव में मूड बदलना, विचारे हुए कार्यो में बाधाएं, कठिनाइयां एवं परेशानियां आती हैं। लेकिन गलत कार्यो, धोखा, रिश्वत आदि से विशेष धन प्राप्ति होती है।
12. द्वादश भाव में व्यर्थ के कार्यो में व्यस्त रहना, समय का अपव्यय, आर्थिक हानि, इधर–उधर भटकना, स्वास्थ्य में गिरावट, रोजगार–व्यापार में घाटा एवं शत्रुओं की विजय, तथा स्त्री पुत्रों को रोग कष्ट होता है।

राहु का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में शारीरिक क्षीणता, विभिन्न प्रकार के कष्ट उत्पन्न होते हैं।
2. द्वितीय भाव में धन का नाश या अपव्यय, कुटुम्ब सुख में कमी होती है।
3. तृतीय भाव में विविध स्त्रोतों से लाभ एवं सुख, पराक्रम में वृद्धि होती है।
4. चतुर्थ भाव में घोर कष्ट, दुर्घटना के योग, भूमि वाहन से कष्ट होता है।
5. पंचम भाव में धन हानि, संतान सुख में कमी या संतान को पीड़ा होती है।
6. छठे भाव में सुख सौभाग्य कीर्ति सम्मान में वृद्धि, शत्रुओं पर विजय मिलती है।
7. सप्तम भाव में स्वास्थ्य में कमी, ग्रहस्थ सुख में कमी एवं विवाद उत्पन्न होते हैं।
8. अष्टम भाव में मृत्यु तुल्य कष्ट, यात्राओं में पीड़ा, इधर–उधर भटकना पड़ता है।
9. नवम भाव में आर्थिक हानि, धर्म कर्म में कमी, स्वभाव में नास्तिकता आती है।
10. दसम भाव में कर्म से लाभ, राज्य या राज्य अधिकारियों से लाभ मिलता है।
11. एकादश भाव में सुख सम्पत्ति में वृद्धि, राज नेताओं से विशेष सहयोग मिलता है।
12. द्वादश भाव में आकस्मिक व्यय में वृद्धि, दूर देश की यात्रा में खर्च होता है।

ऊपर प्रत्येक राशि में भाव के अनुसार भ्रमण करते समय ग्रह क्या–क्या फल देते हैं, उसकी जानकारी दी है। अष्टक वर्ग के क्षेत्र में यह जानकारी सत्यता के निकट पहुंचाने में सक्षम होती है। लेकिन फल विवेचन के साथ–साथ ग्रहों की पुष्टता को भी देख लेना चाहिए। यदि ग्रह आठ रेखाओं से युक्त होगा, तो वह विशेष धनदाता, सुख प्रदायक एवं लाभकारी होगा, और वही यदि शून्य रेखा युक्त हुआ, तो कष्ट बाधा या पीड़ा देगा।

रेखाओं के आधार पर ग्रहों का गोचर फल

नीचे अगल अलग रेखाओं से सम्पन्न ग्रह क्या क्या फल दे सकते हैं, इसकी जानकारी प्रत्येक ग्रह की स्पष्ट की जा रही है :–

सूर्य

8 रेखा– पूर्ण अनुकूलता, धनदायक एवे विशेष अच्छे फल देने की क्षमता।

7 रेखा– मानसिक प्रसन्नता, कीर्ति, यश एवं धन का लाभ होता है।

6 रेखा– उन्नति की ओर अग्रसर, पदोन्नति प्राप्त होती है।

5 रेखा– धन एवं सम्पत्ति में वृद्धि कारक, भूमि–वाहन का लाभ मिलता है।

4 रेखा– सम न शुभ न अशुभ, समय सामान्य रहता है।

3 रेखा– परेशानियों के बाद ही सफलता मिलने के योग होते हैं।

2 रेखा– अपने द्वारा ही मूर्खतापूर्ण कार्यो से हानि होती है।

1. रेखा– घोर कष्ट या मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

ऊपर प्रत्येक रेखायुक्त सूर्य का फल स्पष्ट किया गया है। उदाहरण हेतु सूर्य जब प्रथम भाव में गोचर भ्रमण करेगा तो सूर्य से संबंधित फल आर्थिक व्यय, व्यर्थ की परेशानी इत्यादि तो प्राप्त होगी, परन्तु यदि सूर्य आठ रेखाओं से युक्त हुआ तो इन परेशानियों के मध्य भी कुछ अनुकूल स्थितियां बन जाएंगी जिनसे कुछ न कुछ लाभ जातक को मिल सकेगा।

लेकिन यदि सूर्य चार रेखाओं से युक्त हो तो उपर्युक्त फल ज्यों के त्यों समझना चाहिए, और यदि सूर्य एक या शून्य रेखायुक्त हो तो इस फल में विशेष निम्नता समझनी चाहिए।

इस प्रकार ज्योतिषी को चाहिए कि वह गोचर फल कहते समय सूर्य की रेखाओं का भी पूर्ण अध्ययन करने के पश्चात ही फलादेश कथन करे। जिस प्रकार ऊपर की पंक्तियों में सूर्य के बारे में स्थिति स्पष्ट की है, उसी प्रकार अन्य ग्रहों के बारे में भी समझना चाहिए। आगे सभी ग्रहों का रेखानुसार गोचर फल दिया गया है।

चन्द्र

8 रेखा– मानसिक प्रसन्नता, संबंधियों से सहयोग एवं लाभ मिलता है।

7 रेखा– सहयोग, कार्यो में सफलता प्राप्त होती है।

6 रेखा– उच्चाधिकारियों से लाभ, शासकीय कार्यों में सफलता मिलती है।

5 रेखा– साहस, सम्मान में वृद्धि होती है।

4 रेखा– स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

3 रेखा– संबंधियों से लड़ाई–झगड़ा उत्पन्न होता है।

2 रेखा– धनहानि के योग बनते हैं।

1 रेखा– परिश्रम व्यर्थ होना एवं अपव्यय अधिक होता है।

0 रेखा– विविध माध्यमों से दुख मिलता है।

मंगल

8 रेखा– भूमि, मकान, मशीनरी संबंधी कार्यो से लाभ मिलता है।

7 रेखा– भाइयों एवं मित्रों से सहयोग मिलता है।

6 रेखा– राज्य, शासन, शासकीय अधिकारियों से लाभ मिलता है।

5 रेखा– भौतिक सुखों की वृद्धि होती है।

4 रेखा– मध्यम न लाभ न हानि।

3 रेखा– परिवार में कलह उत्पन्न होती है।

2 रेखा– पत्नी से विवाद एवं संतान की चिंता सताती है।

1 रेखा– रक्त से संबंधित रोगों की वृद्धि होती है।

0 रेखा– आग लगना, उदर रोग एवं दुर्घटना की आशंका रहती है।

बुध

8 रेखा– राज्य से सम्मान, यश कीर्ति में वृद्धि होती है।

7 रेखा– धन लाभ एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।

6 रेखा– जो भी कार्य हाथ में लिया जाए वह सफल होता है।

5 रेखा– सगे संबंधियों से लाभ मिलता है।

4 रेखा– उत्साह में वृद्धि होती है।

3 रेखा– बिना वजह धन का अपव्यय होता है।

2 रेखा– विविध प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

1 रेखा– चर्म रोग होने की संभावना रहती है।

0 रेखा– आकस्मिक हानि के साथ साथ मान–सम्मान की हानि होती है।

गुरु

8 रेखा– सम्मान, यश कीर्ति लाभ, धन लाभ में वृद्धि होती है।

7 रेखा– प्रसन्नता, आय के विविध स्त्रोत मिलते हैं।

6 रेखा– नया वाहन मिलना या सवारी का लाभ मिलता है।

5 रेखा– शत्रुओं पर या विवाद में विजय मिलती है।

4 रेखा– सम यह समय मध्यम फल देता है।

3 रेखा– मानसिक चिन्ता या मन में तनाव बना रहता है।

2 रेखा– राज्य या पद च्युति, स्थानान्तरण अथवा स्थान बदलने की संभावना रहती है।

1 रेखा– धनहानि अन्यथा बिना वजह धन का अपव्यय होता है।

0 रेखा– विभिन्न प्रकार के कष्टों का समना करना पड़ता है।

शुक्र

8 रेखा– प्रेम या विवाह संबंध में सफलता तथा पूर्ण भौतिक सुख मिलता है।

7 रेखा– वस्त्र, आभूषण या भौतिक सुखों से संबंधित वस्तु का लाभ मिलता है।

6 रेखा– मन में प्रसन्नता एवं उल्लास की वृद्धि होती है।

5 रेखा– मित्रों से, संबंधी या सहयोगियों से सहायता मिलती है।

4 रेखा– सम, यह समय मध्यम फल देता है।

3 रेखा– संबंधियों से विवाद, कलह उत्पन्न होती है।

2 रेखा– नौकरी में हानि तथा रोगों में वृद्धि होती है।

1 रेखा– जल से घात या चोट की संभावना रहती है।

0 रेखा– सभी कार्यो में असफलता मिलती है।

शनि

8 रेखा– प्रशासकीय एवं उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यो में सफलता मिलती है।

7 रेखा– नौकरों से, सहयोगियों या अधिनस्थों से लाभ मिलता है।

6 रेखा– शुभ प्रचार एवं यश कीर्ति तथा ख्याति में वृद्धि होती है।

5 रेखा– धन–धान्य, भौतिक वस्तुओं का लाभ प्राप्त होता है।

4 रेखा– सम, यह समय मध्यम फल देता है। ।

3 रेखा– धन हानि या बिना वजह के व्ययों में वृद्धि होती है।

2 रेखा– रोगों में वृद्धि, जेल, मुकदमा आदि की संभावना बनती है।

1 रेखा– झूठा लांछन, अपयश, अपकीर्ति प्राप्त होती है।

0 रेखा– बीमारी या शारीरिक कमजोरी में वृद्धि होती है।

ग्रहों का अंश के आधार पर गोचर फल

प्रश्न उत्पन्न होता है कि ग्रह अपना शुभ या अशुभ प्रभाव कब प्रदान करते हैं ? एक राशि तीस अंशों की होती है, अर्थात् एक राशि में एक ग्रह जब तीस अंश भुगत लेता है, तब वह अगली राशि में प्रवेश करता है। इन तीस अंशों में कौनसा ग्रह कितने अंश पर अपना प्रभाव देता है, यह बताया जा रहा है।

सूर्य– एक से दस अशों के भ्रमण में अपना फल प्रदान कर देता है।

चन्द्र– बीस से तीस अंश पर जब भ्रमण करता है।

मंगल– एक से दस अंशों के बीच भ्रमण करते समय फल देता है।

बुध– सम्पूर्ण राशि में एकसा फल देता है।

गुरु– राशि के मध्य भाग में अर्थात् दस अंश से बीस अंश के बीच भ्रमण करते समय।

शुक्र– गुरु के समान ही फल देता है।

शनि– चन्द्रमा के समान फल देता है।

राहु– बुध के समान फल देता है।

ऊपर गोचर फल बताते समय रोगवृद्धि, रोग आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। प्रश्न उठता है, कि यह रोग शरीर के किस भाग में होगा ? इसके लिए यह ध्यान रखना पड़ता है कि अमुक ग्रह किस नक्षत्र पर भ्रमण कर रहा है, नक्षत्र के अनुसार ही रोग स्थान ज्ञात किया जाता है।

ग्रहों के नक्षत्र के आधार पर रोग फल

नीचे प्रत्येक ग्रह का नक्षत्रानुसार रोग स्थान दे रहे हैं।

सूर्य

- पहला नक्षत्र अश्विनी चेहरे पर।
- 2, 3, 4, 5 वां नक्षत्र सिर में।
- 6, 7, 8, 9 वां नक्षत्र छाती या हृदय में।
- 10, 11, 12, 13 वां नक्षत्र दाहिने हाथ में।
- 14, 15, 16, 17, 18, 19 वां नक्षत्र दोनों पैरों में।
- 20, 21, 22, 23 वां नक्षत्र बांए हाथ में।
- 24, 25 वां नक्षत्र दोनों नेत्रों में।

- 26, 27 वां नक्षत्र गुप्तांग में।

चंद्रमा

- 1, 2 रा नक्षत्र चेहरे पर।
- 3, 4, 5, 6 वां नक्षत्र सिर में।
- 7, 8 वां नक्षत्र पीठ में।
- 9, 10 वां नक्षत्र दोनों नेत्रों में।
- 11, 12, 13, 14, 15 वां नक्षत्र हृदय में।
- 16, 17, 18 वां नक्षत्र बाएं हाथ में।
- 19, 20, 21, 22, 23, 24 वां नक्षत्र दोनों पैरों में।
- 25, 26, 27 वां नक्षत्र दाहिने हाथ में।

मंगल

- 1, 2 रा नक्षत्र चेहरे पर।
- 3, 4, 5, 6, 7, 8 वां नक्षत्र दोनों पैरों में।
- 9, 10, 11 वां नक्षत्र कुक्षि में।
- 12, 13, 14, 15 वां नक्षत्र बांएं हाथ में।
- 16, 17 वां नक्षत्र सिर में।
- 22, 23, 24, 25 वां नक्षत्र दाहिने हाथ में।
- 26, 27 वां नक्षत्र विदेश गमन।

बुध, गुरु, शुक्र

- 1, 2, 3 रा नक्षत्र सिर में।
- 4, 5, 6 वां नक्षत्र चेहरे पर।
- 7, 8, 9, 10, 11, 12 वां नक्षत्र कुक्षि में।
- 18, 19 वां नक्षत्र गुप्त स्थान में।
- 20 से 27 वां नक्षत्र दोनो पैरों में।

शनि, राहु, केतु

- पहिला नक्षत्र चेहरे पर।
- 2, 3, 4, 5 वां नक्षत्र दाहिने हाथ में।

- 6, 7, 8 वां नक्षत्र दाहिने पैर में।
- 9, 10, 11 वां नक्षत्र बांएं पैर में।
- 12, 13, 14, 15 वां नक्षत्र बांएं हाथ में।
- 16, 17, 18, 19, 20 वां नक्षत्र कुक्षि में।
- 21, 22, 23 वां नक्षत्र सिर में।
- 26, 27 वां नक्षत्र पीठ में।

उपरोक्त सभी ग्रहों के लिए नक्षत्रों की गणना चन्द्र राशि से की जानी चाहिए।

ग्रहों का विशेष गोचर फल

सूर्य

1. जब सूर्य 5, 6 या 8 रेखाओं से युक्त हो और चन्द्र लग्न पर आता है तो विवाह, यात्रा, शुभ कार्य एवं धन वृद्धि के साधन जुटाता है।
2. जब सूर्य 2, 3 या 4 रेखाओं से युक्त होकर चन्द्र राशि पर आता है तो प्रत्येक कार्य में विलंब बाधा या परेशानी होती है।
3. जब सूर्य शून्य रेखा से युक्त होकर चन्द्र राशि पर आता है तो प्रत्येक कार्य में बाधा एवं मृत्यु तुल्य कष्ट जातक को होता है।

चन्द्र

1. चन्द्रमा अपनी राशि पर 6, 7, 8 रेखाओं से युक्त होकर आता है तो वैवाहिक कार्यो में शुभ, शिक्षा एवं उन्नति एवं साक्षात्कार में सफलता प्रदान करने वाला होता है।
2. परन्तु जब चन्द्र 1, 2, 3, 4 रेखाओं से युक्त होकर अपनी जन्मराशि पर आता है तो कार्य में विलंब एवं कठिनाइयां उपस्थित होती हैं।
3. जब चन्द्रमा अधिक रेखओं से युक्त होता है, तो उसका वैवाहिक जीवन सुखी होता है।

मंगल

1. चन्द्र राशि या जन्मराशि पर जब मंगल गोचर में आता है और वह पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो भूमिक्रय होना, कृषि कार्यो से लाभ एवं अचल सम्पत्ति संबंधि कार्यो से लाभ होता है।
2. यदि शून्य रेखा या 1, 2 रेखाओं से युक्त मंगल अपनी जन्म राशि या चन्द्र राशि पर गोचर करे, तो रक्त संबंधी रोग में वृद्धि होती है।

बुध

1. बुध पांच या अधिक रेखाओं से युक्त होकर अपनी जन्मराशि या चन्द्रराशि पर गोचर करे तो शिक्षा में लाभ, साक्षात्कार में सफलता, व्यापार में वृद्धि, विशेष लाभ आदि होता है।
2. जब शून्य रेखा से युक्त होकर सूर्य लग्न, चन्द्र लग्न या बुध लग्न पर गोचर करे तो व्यापार में आकस्मिक हानि एवं घाटा होता है।

गुरु

1. जब गुरु 6, 7, 8 रेखाओं से युक्त होकर चन्द्रराशि या गुरु राशि पर गोचर करे तो मानसिक सन्तोष, आध्यात्मिक साधना में वृद्धि, वेदज्ञान, संतान सुख एवं धार्मिक भावनाओं में वृद्धि होती है।
2. जब गुरु 4, 5 रेखाओं से युक्त हो तो सोना, चांदी, जवाहरात से लाभ तथा अर्थवृद्धि होती है।
3. शून्य रेखा से युक्त हो तो बदनामी होती है।

शुक्र

1. शुक्र 4 से 8 रेखाओं से युक्त होकर चन्द्रराशि या जन्मस्थित शुक्र राशि पर गोचर करे तो प्रेम संबंधी कार्यो में सफलता, मानसिक सन्तोष एवं सुख में वृद्धि तथा विवाहादि कार्यो में लाभ होता है।
2. यदि शून्य रेखा या 1, 2 रेखा से युक्त शुक्र गोचर करे तो बदनामी होती है।

शनि

1. जब शनि 6, 7, 8 रेखाओं से युक्त होकर अपनी जन्मराशि या चंद्र राशि पर गोचर करता है, तब लोहा या कृषि संबंधी कार्यो में विशेष सफलता एवं धन प्रदान करता है।
2. शनि शून्य 1 या 2 रेखा से युक्त आार्थिक हानि देता है।

राहु अष्टक वर्ग

अष्टक वर्ग प्रकरण में यद्यपि सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र एवं लग्न इन आठों के विवेचन को अष्टक वर्ग की संज्ञा दी गई है। इसमें राहु की कोई गणना नहीं की गई है, ज्योतिष ग्रन्थों में अष्टक वर्ग के विवेचन पर जो भी कार्य हुआ है, उसमें भी राहु को कोई स्थान नहीं दिया गया, क्योंकि राहु मूलतः एक छाया ग्रह है। लेकिन शुभ होरा प्रकाश में राहु को भी अष्टक वर्ग में स्थान दिया है। यद्यपि राहु की गणना अष्टक वर्ग में करना न तो न्याय संगत है, और न ही फलित नियमों के अनुकूल है। मात्र ज्योतिष के जानकारों हेतु राहु अष्टक वर्ग का विवेचन प्रस्तुत कर रहे हैं।

यहां पर यह स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है कि राहु का अष्टक वर्ग चक्र या कुंडली नहीं बनाई जाती है। लेकिन जानकारी हेतु आगे दे रहे हैं। राहु के गोचर प्रभाव को जानने हेतु राहु के अष्टक वर्ग में रेखाप्रद स्थानों का विचार किया जा सकता है।

राहु के रेखा स्थान

सूर्य से–	1, 2, 3, 4, 7, 8, 10
चन्द्र से–	1, 3, 5, 7, 8, 9, 10
मंगल से–	2, 3, 5, 12
बुध से–	2, 4, 7, 8, 12
गुरु से–	1, 3, 4, 6, 8
शुक्र से–	6, 7, 11, 12
शनि से–	3, 5, 7, 10, 11, 12
लग्न से–	3, 4, 5, 9, 12
कुल रेखा योग–	44

चंद्र राशि से द्वादश भाव में राहु का गोचर फल

1. रोग उत्पत्ति, बिना वजह की परेशानी एवं कष्ट होता है।
2. धन का अपव्यय या धन का नाश एवं कुटुम्ब में परेशानी होती है।
3. स्वास्थ्य उत्तम रहता है एवं मन में प्रसन्नता एवं सुख मिलता है।
4. दुर्घटना का खतरा या बीमारी तथा विविध प्रकार के दुःख मिलते हैं।
5. संतान की चिन्ताएं एवं आर्थिक हानि होती है।
6. मन में प्रसन्नता उत्पन्न होती है एवं विजय मिलती है।
7. शारीरिक हानि, पति या पत्नि को कष्ट होती है तथा रोजगार में रुकावटें आती हैं।
8. वाहन से दुर्घटना या यात्रा में कष्ट या चोट लगती है।
9. मानसिक तनाव बढ़ता है एवं धर्म की हानि होती है।
10. शत्रुओं की वृद्धि तथा बिना वजह के विवाद उत्पन्न होते हैं।
11. मानसिक प्रसन्नता एवं भौतिक सुखों में वृद्धि होती है।
12. बिना वजह के खर्चों में वृद्धि होती है एवं यात्रा व्यय बढ़ता है।

उदाहरण कुंडली
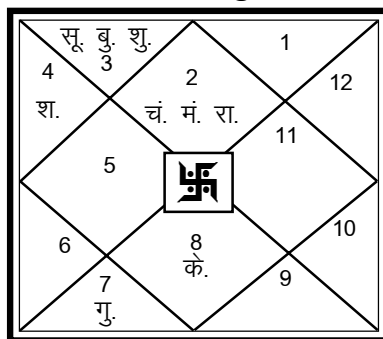
हमारी उदाहरण कुण्डली में वृष लग्न है, और चन्द्रमा भी वृष राशि में है। अतः गोचर विचार करते समय वृष राशि को लग्न, मिथुन राशि को धनभाव, कर्क राशि को पराक्रम भाव आदि समझकर जो फलादेश किया जाएगा वह सही प्रमाणिक एवं गोचर सिद्धान्तों के अनुकूल होगा। चन्द्र लग्न या कुंडली की लग्न से निम्नलिखित स्थानों पर ग्रह शुभ फल प्रदान करते हैं।

सूर्य–	3, 6, 10, 11
चन्द्रमा–	1, 3, 6, 7, 10, 11
मंगल–	3, 6, 11
बुध–	2, 4, 6, 8, 10, 11
गुरु–	2, 5, 7, 9, 11
शुक्र–	1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12
शनि–	3, 6, 11
राहु–	3, 6, 10, 11
केतु–	3, 6, 10, 11

उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा वृष राशि में है, अतः चन्द्र लग्न वृष हुआ, जब सूर्य वृष राशि से तीसरे कर्क राशि में होगा, तब वह शुभ फलदायी रहेगा।

यहाँ यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि जब सूर्य से आगे सातवें भाव में गोचर में कोई ग्रह होगा, तो सूर्य का सीधा प्रभाव उस ग्रह पर पड़ेगा, और उस ग्रह का सीधा प्रभाव सूर्य पर होगा। अतः सूर्य अपना शुभत्व खो बैठेगा, और वह तीसरे भाव में होने पर भी शुभफल नहीं दे सकेगा।

गोचर फल का मूल आधार चन्द्र कुण्डली अर्थात जन्म राशि से ही होता है। सूर्य के पहले भाव का फल बताया जायगा, तो इसका अर्थ होगा, चन्द्र स्थित राशि प्रथम भाव है, अतः उस राशि में जब सूर्य होगा, तो संबंधित फल होगा, इसी प्रकार अन्य ग्रहों से बारे में भी समझना चाहिए।

एक उदाहरण कुंडली द्वारा यहां समझाया गया है कि अष्टकवर्ग द्वारा गोचरफल कैसे देखा जाये।
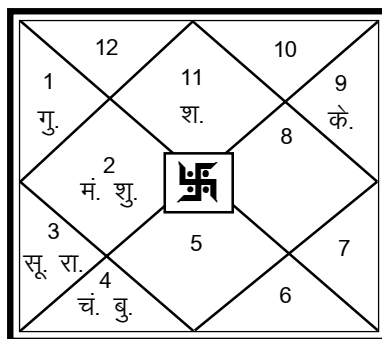
जन्म तिथि : 11 जुलाई 1964
जन्म समय : 21.30 घंटे
जन्म स्थान : दिल्ली

उदाहरण कुंडली के लिए सूर्य का गोचर देखना हो तो उसके लिए सर्वप्रथम सूर्य का भिन्नाष्टकवर्ग बनाना होगा। यह भिन्नाष्टकवर्ग निम्न प्रकार होगा :–
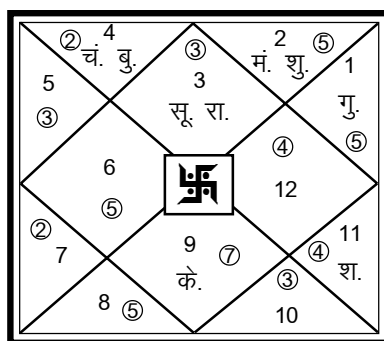
उदाहरण कुंडली के लिए सूर्य का गोचर फल

जिस राशि में 4 से अधिक शुभ रेखा होंगी, तो उनके ऊपर से जब सूर्य का गोचर होगा तो उन भावों से संबंधित शुभ फल प्राप्त होंगे। जिस राशि में 4 से कम शुभ रेखाएं होंगी तो जब सूर्य का गोचर उन राशियों पर से होगा तो उस राशि के भाव से संबंधित अशुभ फलों की प्राप्ति होगी।

जैसे उदाहरण कुंडली में मेष राशि में सूर्य की 5 शुभ रेखाएं हैं। यह राशि लग्न कुंडली के प्रथम भाव में स्थित है तथा शुभ रेखाएं 4 से अधिक हैं अतः प्रथम भाव से संबंधित शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

मेष राशि में सूर्य का गोचर धन एवं संपत्ति में वृद्धिकारक है। क्योंकि मेष राशि उदाहरण कुंडली के तृतीय

भाव में स्थित है और तृतीय भाव पराक्रम भाव कहलाता है। इसलिए थोड़े पराक्रम से अधिक लाभ की प्राप्ति होगी एवं धन संपत्ति में वृद्धि होगी।

वृष राशि लग्न कुंडली का चौथा भाव है जो मातृ एवं सुख भाव कहलाता है। अतः इस राशि में 5 शुभ रेखाएं होने के कारण माता के स्वास्थ्य में सुधार होगा एवं उनसे संबंध मधुर होंगे एवं जातक को मानसिक कष्ट के पश्चात मानसिक संतुष्टि की प्राप्ति होगी।

मिथुन राशि जातक की लग्न कुंडली के पंचम भाव में स्थित है तथा इसमें 3 शुभ रेखाएं हैं। अतः मिथुन राशि में जब सूर्य गोचर करेगा तो संतान पक्ष को कष्ट होने की संभावना होगी। क्योंकि पंचम भाव संतान का भाव है एवं 3 बिंदु होने से परेशानी के बाद सफलता प्राप्त होती है।

कर्क राशि जातक की लग्न कुंडली के षष्ठम भाव में स्थित है तथा इसमें दो शुभ रेखाएं हैं अतः जब सूर्य कर्क राशि में गोचर करेगा तो षष्ठम भाव से संबंधित फलों में कमी करेगा अर्थात रोग, छुपे हुए दुष्मन, कर्ज, मुकदमा आदि से संबंधित फलों में कमी होगी। जब किसी राशि में 2 शुभ रेखा हों तो सूर्य के गोचर के प्रभाववश जातक अपने द्वारा ही मूर्खतापूर्ण कार्यों से हानि प्राप्त करता है और बहुत संभव है जातक के द्वारा ऐसे कार्य किये जाएं जिससे मुकदमा होने या जातक पर कर्ज का बोझ हो जाय।

सिंह राशि जातक की लग्न कुंडली के सप्तम भाव में स्थित है तथा इसमें 3 शुभ रेखाएं हैं अतः जब सूर्य कर्क राशि में गोचर करेगा तो सप्तम भाव से संबंधित अर्थात वैवाहिक जीवन एवं व्यापारिक कार्यों में कष्ट की अनुभूति कराएगा क्योंकि किसी राशि में 3 रेखाओं का होना कष्टपूर्ण स्थिति को दर्शाता है। इस स्थिति में जातक के अपने पति/पत्नी के साथ संबंधों में कटुता आ सकती है।

कन्या राशि जातक की लग्न कुंडली के अष्टम भाव में स्थित है तथा इसमें 5 शुभ रेखाएं है। अतः जब सूर्य कन्या राशि में गोचर करेगा तो अष्टम भाव से संबंधित फलों में वृद्धि करेगा। इस स्थिति में जातक को अपने कार्यों में रूकावटें, दुर्घटना में अधिकता एवं स्वास्थ्य से संबंधित परेशानियां आ सकती है।

तुला राशि जातक की लग्न कुंडली के नवम भाव में स्थित है तथा इसमें 2 शुभ रेखाएं है। अतः जब सूर्य तुला राशि में गोचर करेगा तो नवम भाव से संबंधित अर्थात धर्म कर्म के कार्यो में अरुचि तथा भाग्य में रूकावटें पैदा करेगा। इस स्थिति में जातक को अधिक परिश्रम करना होगा लेकिन फलों की प्राप्ति कम ही होगी।

तुला राशि जातक की लग्न कुंडली के दशम भाव में स्थित है तथा इसमें 5 शुभ रेखाएं है। अतः जब सूर्य वृश्चिक राशि में गोचर करेगा तो दशम भाव के कारकों में वृद्धि करेगा। क्योंकि 5 रेखाएं शुभ मानी जाती है। इस स्थिति में जातक के नौकरी या व्यवसाय में उन्नति होगी। यदि नौकरी में है तो अपने अधिकारियों से संबंध सुधरेंगे। मान सम्मान की प्राप्ति होगी एवं कार्य सूचारू रूप से चलेगा। यदि व्यापार में है तो कारोबार सुचारू रूप से चलेगा एवं व्यापार में लाभ प्राप्त होगा।

धनु राशि जातक की लग्न कुंडली के एकादश भाव में स्थित है तथा इसमें 7 शुभ रेखाएं है। अतः जब सूर्य धनु राशि से गोचर करेगा तो एकादश भाव से संबंधित फलों में वृद्धि करेगा। इस स्थिति में जातक

को धन की प्राप्ति हो होगी ही तथा साथ ही मानसिक प्रसन्नता, कीर्ति एवं यश की प्राप्ति भी होगी।

मकर राशि जातक की लग्न कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है तथा इसमें 3 शुभ रेखाएं है। अतः जब सूर्य मकर राशि से गोचर करेगा तो द्वादश भाव से संबंधित फलों में कमी करेगा। अर्थात् द्वादश भाव व्यय का भाव है एवं वैवाहिक सुख का भी भाव है अतः ऐसी स्थिति में जातक का व्यय कम होगा एवं वैवाहिक सुख में कमी करेगा एवं अनावश्यक यात्राएं भी जातक को करनी पड़ सकती है जो निष्फल साबित हो सकती है।

कुंभ राशि जातक के लग्न में स्थित है तथा इसमें 4 शुभ रेखाएं है। अतः जब सूर्य कुंभ राशि से गोचर करेगा तो लग्न से संबंधित फलों के लिए यह समय सामान्य रहेगा अर्थात जातक का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा एवं मानसिक स्थिति भी सामान्य रहेगी एवं जातक सभी कार्य सुचारू रूप से करने के लिए तत्पर रहेगा।

मीन राशि जातक के द्वितीय भाव में स्थित है तथा इसमें 4 शुभ रेखाएं है। अतः जब सूर्य मीन राशि से गोचर करेगा तो द्वितीय भाव से संबंधित फल सामान्य रहेंगे। द्वितीय भाव धन का कारक है एवं यह मारक स्थान भी है। इस स्थिति में जातक को धन के लिए धन का आगमन सामान्य रहेगा अर्थात ना तो बहुत अधिक ना तो बहुत कम होगा। मारक स्थान होने के कारण जातक की मानसिक स्थिति एवं मान सम्मान सामान्य रहेगा। अर्थात जातक के सभी कार्य सामान्य रूप से चलते रहेंगे।

जिस प्रकार से उपर्युक्त सूर्य के गोचर का विवेचन किया गया है इसी प्रकार अन्य ग्रहों का गोचर विचार करेंगे तथा यह ध्यान रखा जाएगा कि ग्रह किस भाव से गोचर कर रहा है उस भाव से संबंधित फल मिलेंगे एवं शुभ है या अशुभ यह इस बात पर निर्भर करेगा कि अमुक ग्रह के अष्टकवर्ग में अमुक राशि में कितनी शुभ रेखाएं स्थित हैं। यदि यह रेखाएं 4 से अधिक होंगी तो शुभ और 4 से कम रेखाएं होंगी तो अशुभ फल की प्राप्ति होगी तथा जितनी अधिक रेखाएं होगी उतनी अधिक शुभ एवं जितनी कम रेखाएं होंगी उतना अधिक अशुभ। इस प्रकार हम अष्टकवर्ग से ग्रहों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार का फल का विश्लेषण कर सकते हैं एवं जीवन के किस पहलु से संबंधित फल मिलेगा यह लग्न कुंडली के भाव से निर्णय कर सकते हैं।

जिस प्रकार हम किसी निश्चित समय पर किसी विशिष्ट ग्रह का शुभ या अशुभ प्रभाव देखकर उसके फल का निर्णय करते हैं उसी प्रकार किसी विशिष्ट ग्रह के कारण जातक के लिए कोई विशिष्ट समय कैसा रहेगा ? इसका विश्लेषण करने के लिए हम ग्रहों के सर्वाष्टकवर्ग का अध्ययन करेंगे और देखेंगे कि अमुक समय पर कौन सा ग्रह किस राशि में स्थित है तथा सर्वाष्टकवर्ग में उस ग्रह को अमुक राशि में स्थित होने पर कितने शुभ रेखाएं प्राप्त हैं जिस समय पर कुल रेखाएं जितनी अधिक रेखाएं प्राप्त होंगी वह समय उस जातक के लिए उतना ही अधिक शुभ होगा एवं जितनी कुल रेखाएं कम होंगी उतना ही अशुभ समय होगा। इसमें भी जिस ग्रह की सबसे अधिक शुभ रेखाएं होंगी वो ग्रह जिस भाव में स्थित होगा उस भाव से संबंधित लग्न कुंडली के अनुसार फल की प्राप्ति होगी।

उदाहरण के लिए 9 अगस्त 2005 को ग्रहों की स्थिति निम्न प्रकार है
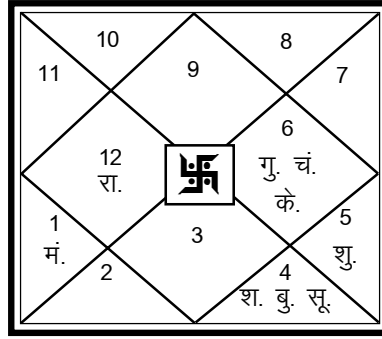
गोचर तिथि : 9 अगस्त 2005
गोचर समय : 16.30 घंटे
गोचर स्थान : दिल्ली

गोचर कुंडली के लिए यदि सर्वाष्टकवर्ग का निर्माण किया जाय तो निम्न प्रकार होगा :—

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

ग्रह	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कुल
शनि	6	3	3	(4)	1	4	2	1	5	1	4	5	39
गुरु	4	5	6	5	5	(2)	4	5	4	5	5	6	56
मंगल	(3)	4	1	1	3	4	3	5	6	1	4	4	39
सूर्य	5	5	3	(2)	3	5	2	5	7	3	4	4	48
शुक्र	4	6	4	3	(4)	5	4	4	5	4	4	5	52
बुध	3	7	3	(3)	4	5	3	6	6	2	6	6	54
चंद्र	6	3	2	7	2	(4)	3	5	4	5	4	4	49
लग्न	6	7	2	6	4	4	3	3	(6)	2	4	2	49

उपर्युक्त गोचर कुंडली के आधार पर सर्वाष्टकवर्ग सारणी देखने पर ग्रहों की राशि के आधार पर प्राप्त शुभ रेखाओं को गोले से प्रदर्शित किया गया है। जिसके आधार पर कुल अष्टकवर्ग रेखाएं निम्न होंगी :—

4 + 2 + 3 + 2 + 4 + 3 + 4 + 6 = 28 रेखाएं

यह रेखाएं सामान्य से कम है क्योंकि प्रत्येक ग्रह के लिए अधिकतम शुभ रेखाएं 8 होती हैं इस प्रकार अधिकतम शुभ रेखाएं 8 X 8 = 64 अधिकतम शुभ रेखाएं होंगी तथा 32 से कम शुभ रेखा होना औसत से कम रेखाएं हैं। अतः यह समय जातक के लिए सामान्य से निम्न स्तर का होगा। इसमें भी यदि जीवन का पहलू देखा जाय तो लग्न से संबंधित फल सबसे अधिक मिलेंगे क्योंकि 6 शुभ रेखाएं लग्न को प्राप्त है। अतः लग्न भाव से संबंधित फल ही जातक को शुभ मिलेंगे। अर्थात जातक का स्वास्थ्य एवं मनोबल

अच्छा होगा। इसी प्रकार अन्य भावों से संबंधित फलों का निर्णय भी उपर्युक्त प्राप्त रेखाओं के आधार पर कर सकते हैं।

ग्रहों को यदि गति के आधार पर वर्गीकृत किया जाये तो ग्रहों को तीन श्रेणी में रखा जा सकता है।

प्रथम श्रेणी – गुरु एवं शनि
द्वितीय श्रेणी – सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल
तृतीय श्रेणी – चंद्र एवं लग्न

यदि जातक के किसी वर्ष का भविष्य कथन करना हो तो गुरु एवं शनि के अष्टकवर्ग की रेखाओं को देखना चाहिए एवं यदि किसी माह का भविष्यकथन करना हो तो सूर्य, बुध, शुक्र एवं मंगल के अष्टकवर्ग रेखाओं का योग पर विचार करना चाहिए। यदि किसी विशेष दिन का भविष्यकथन करना हो तो चंद्र के अष्टकवर्ग रेखाओं का अध्ययन करना चाहिए। इसमें भी यदि किसी दिन के किसी समय विशेष का दो घंटे के अंतराल का अध्ययन करना हो तो लग्न की अष्टकवर्ग रेखाओं का अध्ययन करना चाहिए।

जैसा कि उपर्युक्त कुंडली में दिया गया है। गुरु एवं शनि की अष्टकवर्ग रेखाओं का योग 4 + 2 =6 यह रेखाएं सामान्य से कम हैं अर्थात जातक का यह वर्ष सन् 2005 सामान्य से निम्न स्तर का होगा। परंतु इसके पूर्व वर्ष 2004 में गुरु सिंह राशि में था जिसमें 5 शुभ रेखाएं थीं एवं शनि की रेखाएं कर्क में ही होने के कारण 4 ही थीं अतः पूर्व वर्ष 2004 में रेखाओं का योग 5+4 = 9 था। जो कि इस वर्ष की रेखाओं से अधिक था। अर्थात् सन 2004 की तुलना में सन् 2005 जातक के लिए कम शुभ होगा। इसी प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन करके जातक के अन्य वर्षों का भविष्यकथन एवं विवेचन कर सकते हैं।

इसी प्रकार यदि जातक के किसी विशेष मास का फलकथन करना हो तो हम द्वितीय श्रेणी के ग्रह सूर्य, बुध, शुक्र एवं मंगल की शुभ रेखाओं के योग को देखेंगे। उदाहरण कुंडली के अनुसार यह योग 2+3+4+3=12 होगा। रेखाओं का यह मान भी औसत से निम्न स्तर का है अर्थात जातक का यह महीने का फल भी सामान्य से निम्न स्तर का होगा। जबकि अगले महीने में रेखाओं का क्रम योग इस प्रकार होगा – 3 + 4 + 5 + 4 = 16 । अर्थात अगले महीने में जब इन ग्रहों का गोचर अगली राशि में होगा तो शुभ रेखाओं का योग अधिक होगा। अर्थात जातक के लिए अगले महीने का फल इस महीने की तुलना मं अधिक शुभ होंगा। इसी प्रकार प्रत्येक महीने का रेखाओं का गोचर देखने से प्रत्येक माह का तुलनात्मक भविष्यकथन शुभ होगा या अशुभ इसका निर्णय किया जा सकता है।

यदि जातक के किसी विशेष दिन का फलकथन करना हो तो हम तृतीय श्रेणी के ग्रह चंद्र की शुभ रेखां को देखेंगे। उदाहरण कुंडली के अनुसार चंद्र की शुभ रेखा 4 है। चंद्र की रेखा का यह मान औसत स्तर का है अर्थात जातक के इस दिन अर्थात 9 अगस्त 2005 का दिन सामान्य स्तर का ही होगा। जबकि दो दिन पश्चात जब चंद्रमा वृश्चिक राशि में गोचर करेगा तो इसकी शुभ रेखाएं तीन होंगी तथा वृश्चिक में चंद्र के गोचर का फल और भी निम्न स्तर का होगा क्योंकि यहां पर चंद्र की शुभ रेखाएं 4

से भी कम हैं क्योंकि चंद्रमा लगभग दो दिन एक ही राशि में रहता है इसलिए अगले दो दिनों के लिए भविष्यकथन लगभग समान रहेगा। यदि जातक अपनी कोई व्यक्तिगत डायरी प्रतिदिन लिखे और एक महीने पश्चात पुनः उस डायरी को देखे तो उसको यह अनुभव होगा कि जब जब चंद्रमा का गोचर अगले महीने भी उन्हीं राशियों पर होता है तो पिछले महीने के समान ही फलों की अनुभूति होती है।

यदि किसी दिन के विशेष समय का फलादेश करना हो तो लग्न को आधार मानकर अष्टकवर्ग में लग्नाष्टकवर्ग के रेखाओं का अध्ययन करने से हम उस विशेष समय के बारे में बता सकते हैं जैसे उदाहरण कुंडली में धनु लग्न का समय लगभग दो घंटे रहेगा और सर्वाष्टकवर्ग में लग्नाष्टक धनु को 6 शुभ रेखाएं प्राप्त होंगी। जोकि सामान्य से अधिक है अतः जबतक धनु राशि का लग्न रहेगा वह समय जातक के लिए सामान्य से अधिक शुभ होगा।

क्योंकि ग्रहों में सबसे तीव्र गति सूर्य और चंद्र की है तथा सबसे मंद गति गुरु और शनि की है अर्थात अर्थात गोचर का फल गुरु और शनि की शुभ रेखाओं पर ही निर्भर करेगा। क्योंकि गुरु और शनि की रेखाएं सबसे अधिक अंतराल पर बदलेंगी। यह रेखाएं अधिक होने पर जातक के लिए शुभ समय अधिक समय तक रहेगा यदि इन रेखाओं की संख्या कम होने पर जातक के लिए अशुभ समय अधिक रहेगा क्योंकि गुरु और शनि की रेखाएं सबसे अधिक अंतराल पर बदलती है। अन्य ग्रहों का प्रभाव कम होगा क्योंकि उनकी रेखाओं का परिवर्तन थोड़े–थोड़े समय अंतराल पर होता रहता है।

प्रायः देखा गया है कि सभी ग्रहों के लिए औसत अधिकतम अंक 8 माने जाते हैं और औसत सामान्य अंक 4 मान लिए जाते हैं लेकिन सभी ग्रहों के लिए ऐसा मानना न्यायोचित नहीं है। क्योंकि यह अधिकतम और सामान्य अंक इस बात पर निर्भर करना चाहिए कि उस ग्रह की कुल शुभ रेखाएं कितनी हैं और इन शुभ रेखाओं का वितरण 12 राशियों में होता है। अतः किसी ग्रह के अधिकतम अंकों को 12 से विभाजित किया जाय तथा जो संख्या प्राप्त हो वह उस ग्रह के लिए औसत अधिकतम अंक मानना चाहिए तथा इसके आधे अंकों को सामान्य अंक माना जाना चाहिए। प्रत्येक ग्रह के अधिकतम अंक औसत अधिकतम अंक एवं औसत सामान्य अंक निम्न तालिका से देखना चाहिए।

ग्रह	अधिकतम अंक	औसत	सामान्य अंक
सूर्य	48	48 / 12 = 4	4
चंद्र	49	49 / 12 = 4.08	4.08 (या 4)
मंगल	39	39 / 12 = 3.25	3.25 (या 3)
बुध	54	54 / 12 = 4.5	4.5
गुरु	56	56 / 12 = 4.66	4.66 (या 4.5)
शुक्र	52	52 / 12 = 4.33	4.33 (या 4)
शनि	39	39 / 12 = 3.25	3.25 (या 3)
लग्न	49	49 / 12 = 4.08	4.08 (या 4)

अध्याय–9
उपसंहार

गुरु और शनि के गोचर सूर्य, चंद्र, मंगल व शुक्र पर से अशुभ होते हैं। इससे यह प्रश्न उठता है कि क्या इन चार ग्रहों पर से गुरु का गोचर भी अशुभ तथा शनि का गोचर भी अशुभ होता है ? इसका विचार करते समय कुछ साधारण बातें ध्यान में रखनी चाहिए। मनुष्य के जीवन में अत्यंत कष्टकारक समय दो बार आता है। साधारणतः यह शनि की साढ़ेसाती का समय होता है एक साढ़ेसाती समाप्त होने के साढ़े बाईस वर्ष बाद दूसरी साढ़ेसाती शुरू होती है। किसी व्यक्ति को साढ़ेसाती के अशुभ फल उतने नहीं मिलते, चतुर्थ व अष्टम शनि के फल तीव्र मिलते हैं अथवा गुरु के अशुभ फल तीव्र मिलते हैं। सूर्य, चंद्र, मंगल व शुक्र में किसी अशुभ ग्रह के साथ अशुभ गुरु का गोचर अधिक कष्टकर होता है। यदि कुंडली में शनि का इन ग्रहों से शुभ योग हो। इसी प्रकार इन ग्रहों के साथ कुंडली में गुरु का शुभ योग हो तथा शनि का अशुभ योग हो तो गुरु के गोचर के अशुभ फल नहीं मिलेंगे, शनि के गोचर के अशुभ फल मिलेंगे। इसी प्रकार कुछ अन्य बातें भी ध्यान में रखनी पड़ती है।

1. किसी कारणवश जो व्यक्ति जीवनभर अविवाहित रहते हैं उनके लिए गोचर गुरु का त्रिकोण में से गोचर भी निष्फल होता है, इनकी कुंडली में शुक्र के साथ गोचर गुरु या शनि के योग व्यर्थ होंगे।
2. जिन्हें वीर्यदोष हो या जिनकी पत्नी वंध्या हो उनके लिए भी त्रिकोण में गुरु का गोचर व्यर्थ होता है। अक्सर संतति प्रतिबंधक रोगों के कारण ऐसे लोगों को बताया हुआ संतान प्राप्ति का भविष्य झूठ साबित होता है।
3. किन्हीं कारणों से जो जन्म दरिद्री होता है उसे गुरु, शनि अथवा राहु त्रिकोण में कितने भी शुभ योग के साथ गोचर करे उनका फल नहीं मिलता।

गोचर ग्रहों के फल बतलाने के कुछ विशेष मार्गदर्शन तत्व निम्नलिखित हैं :

1. कुंडली में शनि व गुरु दो में से एक ग्रह प्रभावी तथा दूसरा निष्फल होता है। मेष, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक लग्न के लिए गुरु निष्फल होता है। वृषभ, मिथुन, कर्क लग्न के लिए शनि निष्फल होता है। मकर व कुंभ लग्न हो तो राहु निष्फल होता है। धनु व मीन लग्न के लिए कोई ग्रह निष्फल नहीं होता।
2. वृषभ, कन्या, मकर लग्नों के लिए शनि की साढ़ेसाती में विशेष कष्ट नहीं होता, इन्हें अष्टम शनि कष्ट देता है।
3. मेष व सिंह में सूर्य, वृषभ व कर्क में चंद्र, मेष, वृश्चिक व मकर में मंगल, मिथुन व कन्या में बुध, धनु मीन व कर्क में गुरु तथा मकर, कुंभ व तुला में शनि तात्पर्य अपने स्वगृह व उच्च राशि में सब ग्रहों का गोचर कष्टदायक होता है।
4. शनि 2, 4, 8, 12 तथा गुरु 3, 6, 8, 12 इन स्थानों में कष्टदायक होता है।
5. गोचर शनि जिस राशि में हो उसी राशि में अन्य गोचर ग्रह आने पर उन अन्य ग्रहों का फल नहीं मिलता।

RUDRAKSHA AND ROSARIES OF RUDRAKSHAS

One Faced (Roundbead)
Makes a man prosper

Two Faced
For good health, wealth, gains and benefic effects of Moon

Three Faced
For Brahma Shakti, contentment and blessings of Jupiter

Four Faced
For auspicious and religious performances and ceremonies.

Five Faced
For longer life. Useful in blood pressure and heart diseases

Six Faced
Destroyer of enemy.

Seven Faced
For attaining the desired objective and countering evil effects of Saturn and sins.

One Faced Mukhi in the shape of cashewnut
For virility and progress

Gauri Shankar
Helps attain desired goal.

Mixed Rosary of Rudraksha & Crystal.
For physical strength, knowledge & learning

Rosary of Rudrakshas
For successful completion of Mantra

Rosary of Rudrakshas (of small beads)
The best and attractive rosary of Rudrakshas.
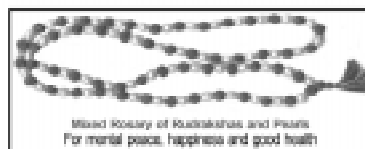
Mixed Rosary of Rudrakshas and Pearls
For mental peace, happiness and good health

Eight Faced
Renders wealth and prosperity. Destroyer of enemies that saves from evil eyes.

Nine Faced
Renders wealth. Beneficial specially for women.

Ten Faced
For countering Pitri Dosha and evil effects of Kaala Sarpa Yoga.

Eleven Faced
Blesses the user with a child.

Twelve Faced
Wards off hurdles & sins

Thirteen Faced
Saves from untimely demise & renders happiness & peace.

Fourteen Faced
An all propitious and rarely found Rudraksa. Renders wealth.

Future Point

Head Office:
X-35, Okhla Industrial Area, Phase-II, Delhi-110020 Ph.: 91-11-40541000 (20 Line) Fax : 40541001
Branch Office:
H-1/A, Hauz Khas, New Delhi-110016 Ph.: 40541020 (10 Line) Fax : 40541021

E-mail: mail@futurepointindia.com, Web: www.futurepointindia.com

UNIQUE OFFER FROM FUTURE POINT
24 CARAT GOLD PLATED

Sampurna Shri Yantra
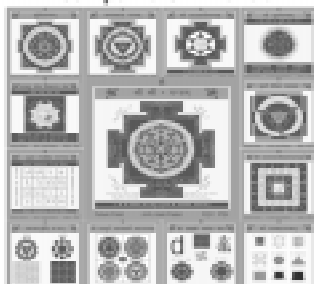
Sampurna Badhamukti Yantra
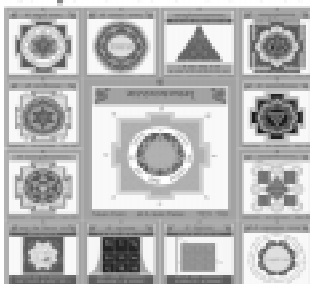
Sampurna Vayapaar Vridhi Yantra
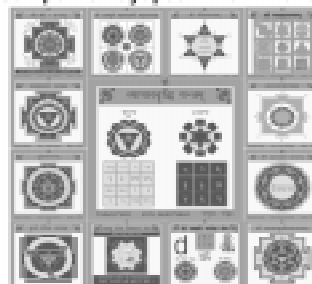
Sampurna Kaalsarp Yantra
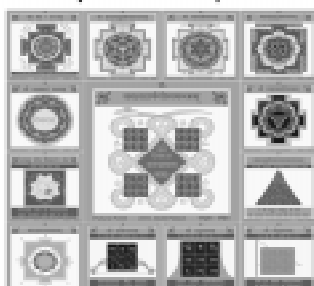
Italian with frame

14" x 14"	Size	2100/-
12" x 14"	Size	1500/-
8" x 8"	Size	900/-

Any Yantra without frame

2" x 2"	Size	50/-
4" x 4"	Size	150/-
7" x 7"	Size	400/-
12" x 14"	Size	1100/-

With Stand

2" x 2"	Size	100/-
4" x 4"	Size	250/-
7" x 7"	Size	650/-

Sampurna Vastu Yantra
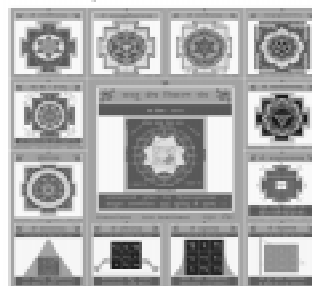
Sampurna Saraswati Yantra
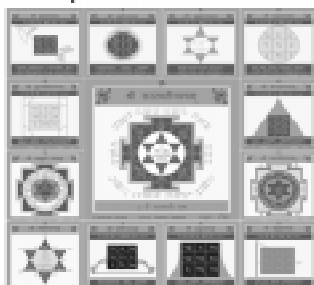
Sampurna Navgrah Yantra
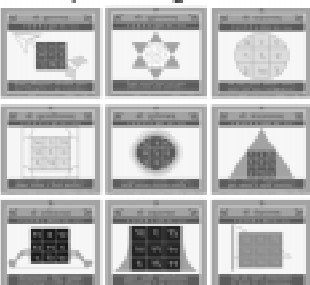
Sampurna Rognashak Yantra
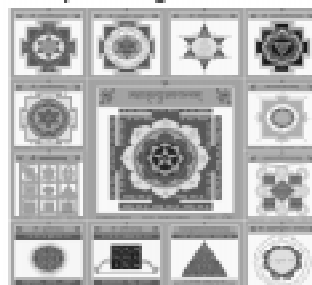
Please write the name and size of the Yantra you need and send it with the cheque or DD required in favour of Future Point Ratna Bhandar at the address given below. The amount can be sent by Money order also.
The Yantra can be had through VPP also.

卐 **Future Point** 卐

Head Office:
X-35, Okhla Industrial Area, Phase-II, Delhi-110020
Ph.: 91-11-40541000 (20 Line) Fax : 40541001

Branch Office:
H-1/A, Hauz Khas, New Delhi-110016
Ph.: 40541020 (10 Line) Fax : 40541021

E-mail: mail@futurepointindia.com, Web: www.futurepointindia.com